सत्यमेव जयते

# ज्ञान गरिमा सिंधु

## मानविकी एवं समाज विज्ञान

## संयुक्तांक:11-12

**वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग**

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

( उच्चतर शिक्षा विभाग )

भारत सरकार

# ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

संयुक्तांक (11-12)
जुलाई-सितंबर 2006
तथा
अक्टूबर-दिसंबर 2006

**वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग**
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

4121 HRD/07—1A

© कापीराइट 2007

**प्रकाशक**
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार, पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110 066

**विक्रय हेतु पत्र-व्यवहार का पता :**
वैज्ञानिक अधिकारी,
बिक्री एकक
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110 0066
दूरभाष - (011) 26105211
फैक्स - (011) 26102882

**बिक्री स्थान :**
प्रकाशन नियंत्रक
प्रकाशन विभाग,
भारत सरकार
सिविल लाइन्स
दिल्ली - 110 054

**सदस्यता शुल्क :**

| | भारतीय मुद्रा | विदेशी मुद्रा |
|---|---|---|
| प्रति अंक व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए | रु. 14.00 | पौंड 1.64 डॉलर 4.84 |
| वार्षिक चंदा | रु. 50.00 | पौंड 5.83 डॉलर 18.00 |
| प्रति अंक विद्यार्थियों के लिए | रु. 8.00 | पौंड 0.93 डॉलर 10.80 |
| वार्षिक चंदा | रु. 30.00 | पौंड 3.50 डॉलर 2.88 |

**पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।
संपादक मंडल की इनसे सहमति अनिवार्य नहीं है।**



4121 HRD/07—1B

# संपादन मंडल


## प्रधान संपादक

प्रो. के. बिजय कुमार
अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

## संपादक

श्री उमाकांत खुबालकर
सहायक निदेशक

## प्रकाशन

डॉ. पी. एन. शुक्ल
वैज्ञानिक अधिकारी

## कलाकार

श्री आलोक वाही

# प्रस्तावना

आयोग की त्रैमासिक पत्रिका 'ज्ञान गरिमा सिंधु' का संयुक्तांक (11-12) पाठकों, विद्वतजनों को सौंपते हुए प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका प्रकाशन की समयबद्धता एवं नियमितता को कायम रखने के लिए संयुक्तांक प्रकाशित किए जा रहे हैं ताकि यथासमय आपको अंक प्राप्त हो सके। विगत अंक में पत्रिका के आकार में हमने कुछ परिवर्तन किया था। हम यह उम्मीद करते हैं कि अंक आपको रुचिकर लगा होगा। हर अंक में हम नई-नई सामग्री देने का प्रयास करते हैं। इस अंक में वेदों का वैज्ञानिक चिंतन, यौगिक ब्रह्म मुद्रा, महात्मा गांधी, नोबेल पुरस्कार प्राप्त श्री अमर्त्य सेन, आर्थिक चुनौतियों में बैंकिंग, उद्योग का महत्व, विज्ञान एवं धर्म के पारस्परिक संबंधों पर चर्चा की गई है। अंक के अंत में कंप्यूटर, शब्दावली दी गई है ताकि आपका शब्द ज्ञान बढ़ सके। समाज विज्ञान एवं मानविकी से संबंधित विषयों पर आपके आलेखों का स्वागत है। 'ज्ञान गरिमा सिंधु' को स्वयं पढ़ें तथा दूसरों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित तकनीकी शब्दों का प्रयोग अपने लेखों में अवश्य करें।

आशा है, सभी वाचकों, विद्वानों को प्रस्तुत अंक अवश्य पसंद आएगा। आपके सुझावों/प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा बनी रहेगी।

(प्रो. के. विजय कुमार)
अध्यक्ष

नई दिल्ली
दिनांक : दिसंबर, 2006

# अनुक्रम


| | | | |
|---|---|---|---|
| ❑ | आर्थिक चुनौतियों में बैंकिंग उद्योग का महत्व | डॉ. दामोदर खडसे | 1 |
| ❑ | उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश की लोककला का एक अनोखा भ्रमण | डॉ. विमला वर्मा | 6 |
| ❑ | अमर्त्य सेन-वंचित वर्ग के लिए प्रतिबद्ध अर्थशास्त्री | श्री राममूर्ति शर्मा | 16 |
| ❑ | संचार टेक्नालाजी | श्री गौरीशंकर रैणा | 22 |
| ❑ | जीव जंतुओं का विचित्र संसार | श्री कुलदीप कुमार | 34 |
| ❑ | मुंडा जनजाति | श्री राजेंद्र कुमार पांडेय | 38 |
| ❑ | सहस्रार ग्रंथि: एक वैज्ञानिक विश्लेषण | श्री राजेंद्र स्वरूप श्रीवास्तव | 44 |
| ❑ | पादरी जॉन हेन्स होम्स के विचारों में गांधीजी | श्रीमती कल्पना वि. लांडगे | 51 |
| ❑ | अमीर खुसरो की लोकधर्मी चेतना | श्री राधाकांत भारती | 56 |
| ❑ | वेदों के संदर्भ में विवाह एक वैज्ञानिक चिंतन | डॉ. रामसुमेर यादव | 61 |
| ❑ | यौगिक ब्रह्म मुद्रा | श्री रविकांत श्रीवास्तव | 74 |
| ❑ | पत्रकारिता और जनसंचार की भाषा: बदलते आयाम | डॉ. श्रुतिकांत पांडेय | 78 |
| ❑ | अमेरिका में हिंदू मंदिर | श्रीमती संतोष अग्रवाल | 83 |
| ❑ | विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी नहीं है | डॉ. दिनेश मणि | 89 |
| ❑ | आँखों के लिए भी कुछ करें | श्री कुलदीप कुमार | 95 |


# विविध स्तंभ


| | | |
|---|---|---|
| ❑ | शब्द-भंडार : कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली | 99 |
| ❑ | आयोग के प्रकाशनों की बिक्री के लिए प्रकाशन विभाग, भारत सरकार के बिक्री केंद्रों की सूची | 105 |
| ❑ | हिंदी ग्रंथ अकादमियों एवं अन्य भारतीय भाषाओं के बोर्ड | 111 |
| ❑ | पत्रिका के सदस्यता शुल्क संबंधी प्रपत्र | 113 |




# इस अंक के लेखों का सार

1. **आर्थिक चुनौतियों में बैंकिंग उद्योग का महत्व** -डॉ. दामोदर खडसे लिखित आलेख में जैसा कि शीर्षक से स्वत: स्पष्ट है। बैंकिंग उद्योग उदारीकरण एवं भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से गुजरते निरंतर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में रचनात्मक एवं सार्थक कदम उठा रहा है। आलेख बैंकिंग प्रणाली को समझने में मदद करता है। सूचनात्मक एवं उपादेय है।
2. **उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश की लोककला का एक अनोखा भ्रमण**- डॉ. विमला वर्मा द्वारा लिखित आलेख सूचनात्मक, रोचक एवं पठनीय है। उत्तरांचल एवं उत्तर प्रदेश के अनेक सांस्कृतिक, धार्मिक लोककलाओं एवं अनछुए संदर्भों का वितरण शोधपरक एवं उपादेय है। पर्यटन या भ्रमण हमारे जीवन की शून्यता को निश्चित रुप से भरने में कारगर सिद्ध होते हैं।
3. **अमर्त्य सेन :** वंचित वर्ग के लिए प्रतिबद्ध अर्थशास्त्री- भारत रत्न अमर्त्य सेन को नोबल पुरस्कार लोक कल्याणकारी अर्थशास्त्र मानवाधिकार और सामाजिक असमानता के बारे में उनके विचारों के लिए दिया गया। माननीय श्री सेन ने साबित कर दिया है कि वह सिर्फ एक अर्थशास्त्री ही नहीं हैं वे दार्शनिकों के दार्शनिक भी हैं। वह अर्थशास्त्र के सिर्फ मांग एवं पूर्ति सिद्धांत में ही यकीन नहीं करते बल्कि सामान्य मानव मात्र की चिंता करते हैं और मूल्यों के साथ ही उनकी जरुरतों, उनके व्यवहारों पर भी ध्यान देते हैं। उनके विचार रुढ़िवादी सिद्धांतों के खिलाफ हैं। उनके विचारों की विशेष उपलब्धि है कि जब विश्व में हर ओर निजीकरण या वैश्वीकरण पर जोर दिया जा रहा हो, वह अर्थव्यवस्था में विकास के साथ ही मानव समुदाय की चिंता करते दिखाई देते हैं। इसके साथ ही मानव इतिहास के विभिन्न प्रसंगों से अपने विचारों की पुष्टि भी करते हैं।
4. **संचार टेक्नालॉजी** -श्री गौरीशंकर रैणा लिखित संचार टेक्नालॉजी आलेख में मीडिया के व्यापक संदर्भों में अद्यतन एवं वैज्ञानिक जानकारी प्रस्तुत करता है। श्री रैणा दूरदर्शन में कार्यक्रम निर्माण से संबद्ध हैं, इस दृष्टि से आलेख अनुभवपरक एवं प्रामाणिकता से परिपूर्ण है।

5. **जीव जंतुओं का विचित्र संसार** - श्री कुलदीप कुमार यह अत्यंत रोचक, सूचनात्मक आलेख है।
6. **मुंडा जनजाति** - श्री राजेंद्र कुमार पांडेय द्वारा लिखित आलेख मुंडा जनजाति का समाजशास्त्रीय एवं नृवैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषित करता है। मुंडा लोगों की संस्कृति, आचार-विचार, विवाह-संबंध, नृत्य-संगीत इत्यादि बातों की जानकारी प्राप्त होती है। मुंडा जनजाति आज भी अपनी जातीय पहचान के लिए संघर्ष कर रही है।
7. **सहस्रार ग्रंथि : एक वैज्ञानिक विश्लेषण** - श्री राजेंद्र स्वरुप श्रीवास्तव प्राचीन एवं आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में सहस्रार ग्रंथ का खोजपरक अध्ययन है जो भविष्य विज्ञान एवं अध्यात्म के बीच महत्वपूर्ण सेतु का काम करेगा। यह पठनीय आलेख है।
8. **पादरी जान होम्स के विचारों में गांधीजी** - श्रीमती कल्पना वि. लाडंगे महात्मा गांधी को जितना हम जानते हैं उनसे ज्यादा विदेशी लोग उनके बहुमुखी व्यक्तित्व से प्रभावित लगते हैं। गांधी जी आज भी उतने प्रासंगिक है, जितने पहले थे। गांधी दर्शन को समझने के लिए सचमुच एक चेतनाशील मानवतावादी दृष्टि चाहिए। यह लेख विचारोत्तेजक एवं उपादेय है।
9. **अमीर खुसरो की लोकधर्मी चेतना** - श्री राधाकांत भारती
   यह सच है कि हिंदी को खड़ी बोली का स्वरुप देने में कुछ श्रेय अमीर खुसरों को जाता है। उनकी जमीन से जुड़ी रचनाएँ आज भी देश की सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता को परिपुष्ट करती है।
10. **वेदों के संदर्भ में विवाह एक वैज्ञानिक चिंतन** - डॉ. राम सुमर यादव भारतीय जीवन पद्धति में विवाह का विशेष स्थान है। जहां विवाह गृहस्थाश्रम के अनंत उत्तरदायित्वों का परिपालन करता है। वहीं एड्स जैसी भयानक बीमारी से बचने का सहज उपाय है। विवाह से नर व नारी एक सूत्र में बंधकर गृहस्थी रुपी वाहन को लक्ष्य तक पहुँचाने का आजीवन यत्न करते हैं। यह विचारोत्तेजक आलेख है।
11. **यौगिक ब्रह्म मुद्रा** - श्री रविकांत श्रीवास्तव
    योग विज्ञान ने हमारे जीवन को सभी दृष्टियों से आप्लावित कर रखा है। योग की हर मुद्रा शरीर विज्ञान एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्व है। योग प्रशिक्षक, श्री रविकांत का आलेख उपादेय है।
12. **पत्रकारिता और जनसंचार की भाषा बदलते आयाम** - डॉ. श्रुतिकांत पांडेय आजकल पूरी दुनिया में जो राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन का दौर चल रहा है। उस दृष्टि से पत्रकारिता एवं जनसंचार की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो गई है। प्रस्तुत आलेख में इस बात पर जोर



दिया गया है कि संचार माध्यमों को शब्द चयन के मामले में सावधानी बरतनी चाहिए। बाजारीकरण के चहुंमुखी दबाव के बावजूद भाषा के मानक रुप को बचाए रखना जरुरी है।

13. **अमेरिका में हिंदू-मंदिर** - श्रीमती संतोष अग्रवाल
    हमारे भारत के लोग विश्व के अनेक देशों में जाकर बस गए हैं। अपनी संस्कृति एवं धार्मिक परंपराओं को बनाए रखने के लिए जगह जगह पर हिंदू-मंदिरों की स्थापना की है। प्रस्तुत आलेख अमेरिका में हिंदू मंदिरों का विवरण प्रस्तुत करता है।
14. **विज्ञान और धर्म : परस्पर विरोधी नहीं है** - डॉ. दिनेश मणी
    विज्ञान एवं धर्म को लेकर सदियों से वैचारिक संघर्ष चला आ रहा है। दोनों को एक दूसरे का विरोधी माना जाता है परंतु ऐसी बात नहीं है। विज्ञान एवं धर्म आपस में सामंजस्य बनाकर चले तो संपूर्ण मानवता का भला हो सकता है। प्रस्तुत आलेख में इन्हीं तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।
15. **आँखों के लिए भी कुछ करें** - श्री कुलदीप कुमार
    हमारे शरीर में आँखों का प्रमुख महत्व है। अनजाने में हम कुछ रोगों का शिकार हो जाते हैं यद्यपि आलेख में वर्णित नुस्खों का इस्तेमाल करें तो रोगों से बचाव में फायदा हो सकता है।

संपादक

# संपादक की ओर से

पत्रिका का उद्देश्य हिंदी में लेखन की तकनीकी शैली को प्रोत्साहन देना तथा सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के संबंधित अद्यतन उपयोगी बौद्धिक जानकारी को हिंदी माध्यम से पठन-पाठन करने वालों के साथ-साथ सामान्यजन को सुलभ कराना है।

हमारा लक्ष्य उच्च शिक्षा के स्तर पर हिंदी माध्यम से अध्ययन-अध्यापन करने वालों को अद्यतन पाठ्य-सामग्री के साथ-साथ संपूरक साहित्य, शोध लेख, तकनीकी निबंध तथा अन्य वैचारिक सामग्री उपलब्ध कराना भी है।

पत्रिका में हिंदी में अनूदित लेखों का भी प्रावधान है। लेख की सामग्री मौलिक, प्रामाणिक तथा अप्रकाशित होनी चाहिए।

लेख की भाषा यथासंभव सरल, बोधगम्य होने के साथ-साथ सूचनात्मक, शिक्षात्मक एवं रोचक भी हो जिससे हिंदी माध्यम से पढ़नेवाला सामान्य जन भी लाभान्वित हो सके।

लेख सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विषयों, यथा: समाजशास्त्र, पुरातत्वविज्ञान, वास्तुकला, राजनीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, शिक्षा, मनोविज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, बैंकिंग, पूँजी बाजार, प्रबंधन, भाषाविज्ञान, पत्रकारिता, ललित कला, पुस्तकालय विज्ञान, लोक प्रशासन आदि में से किसी विषय पर भेजे जा सकते हैं।

- लेख अधिकतम 8-10 फुलस्केप एक तरफ टंकित पृष्ठों का होना चाहिए। स्वच्छ हस्तलिखित प्रति भी स्वीकार्य होगी।
- कृपया लेख की दो टंकित प्रतियाँ भेजें।
- लेख में आयोग द्वारा प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का ही प्रयोग करें। लेखक के विवेकानुसार प्रयुक्त हिंदी शब्द का अंग्रेजी पर्याय कोष्ठक में अवश्य दिया जाए।
- पत्रिका में पूर्वकथित सामग्री के अतिरिक्त शब्द-भंडार, परिभाषा-निदर्श, शब्दावली चर्चा, पुस्तक समीक्षा आदि भी समाविष्ट की जाएँगी।
- आपकी प्रतिभा एवं परिश्रम का भौतिक स्तर पर मूल्यांकन तो संभव नहीं है फिर भी मौलिक लेखन के लिए मानदेय की दर 250 रु. प्रति हजार शब्द



है, जिसकी अधिकतम सीमा 1,000 रु. है। अनुवाद के लिए यह दर 100 रु. प्रति हजार शब्द है।

- फोटो तथा चित्रों के भुगतान की अलग से व्यवस्था है। फोटोग्राफ श्वेत-श्याम तथा रेखाचित्र सफेद कागज पर काली स्याही से होने चाहिए।
- ज्ञान वह प्रकाश है जो मन के साथ-साथ समाज को भी उजागर करता है। इस पत्रिका के माध्यम से ज्ञान के प्रकाश को सर्वसुलभ एवं सर्वव्यापक बनाने में आपका बहुमूल्य सहयोग प्रार्थित है।

**लेख भेजने का पता:**
श्री उमाकांत खुबालकर
संपादक, 'ज्ञान गरिमा सिंधु'
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066

पुनश्च :

व्यक्तियों/संस्थाओं से अनुरोध

कृपया इस पत्रिका की प्रगति और लोकप्रियता के लिए ग्राहक बने और बनाएँ।

# आर्थिक चुनौतियों में बैंकिंग उद्योग का महत्व

● डॉ. दामोदर खड़से

बैंकिंग व्यवस्था अपने विकास में अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए आज एक नए मोड़ पर खड़ी है। अब उसे नए ढांचे में ढालने के लिए विचार-विमर्श जारी हैं। जहां तक हमारे देश का सवाल है, हमारे देश की अर्थ-व्यवस्था सरकारी क्षेत्र के बैंकों के आसपास होती है। निजी और सहकारी क्षेत्रों की भी भूमिका काफी हद तक उल्लेखनीय है। परंतु कुल बैंकिंग कारोबार का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा सार्वजनिक क्षेत्र के माध्यम से होता है।

वर्तमान में देश की अर्थव्यवस्था बैंकिंग उद्योग पर पूरी तरह निर्भर है। बैंकिंग उद्योग देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। बैंकिंग उद्योग अर्थव्यवस्था की वह धुरी है जिस पर सभी व्यवसाय टिके हैं। बैंकिंग व्यवस्था के प्रभावित होने से देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।

हमारे देश में बैंकिंग व्यवस्था के तीन चरण रहे हैं। पहला, राष्ट्रीयकरण से पहले का, दूसरा, राष्ट्रीयकरण के बाद का और तीसरा वर्तमान चरण- बैंकिंग उदारीकरण का। सबसे पहले 1969 में सामाजिक परिवर्तन को ध्यान में रखकर 14 बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

● सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र "लोकमंगल", 1501, शिवाजीनगर, पुणे- 411 027



फिर 1980 में 6 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। इन सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों को सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का दायित्व सौंपा गया। परंपरागत बैंकिंग के साथ समाज में समानता लाने के लिए बैंक छोटे कर्जदारों को कम ब्याज दरों पर ऋण देने लगे। राष्ट्रीयकरण के बाद राष्ट्रीयकृत बैंकों के स्वरूप व कार्यप्रणाली में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ।

राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों की शाखाओं का तेजी से विस्तार हुआ। बैंकों के सामने लाभ कमाने के अलावा सामाजिक उत्थान का लक्ष्य रखा गया। सरकारी क्षेत्रों के बैंकों का 40 प्रतिशत तक का ऋण, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को देने का लक्ष्य रखा गया। छोटे उद्योग तथा कृषि को प्राथमिकता मिलने लगी। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में तेजी से शाखाएँ खुलने लगीं। ऐसे ऋणों को अंजाम देने और उन पर निगरानी रखने के लिए विशेषज्ञ अधिकारियों की भर्ती की जाने लगी। शाखाओं के विस्तार का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि राष्ट्रीयकरण के समय बैंकों की कुल संख्या 8,262 थी जो मार्च 2001 में 65,900 तक पहुँच गई। लगभग तीस वर्षों में शाखाओं की संख्या में 57 हजार की वृद्धि हो गई। पहले जहाँ 64 हजार लोगों के बीच बैंकों की एक शाखा हुआ करती थी, वहाँ अब औसतन 15 हजार लोगों के बीच एक शाखा है। इसे देखने पर लगता है कि राष्ट्रीयकरण के बाद बैंक सामान्य लोगों तक पहुंचे। बैंकिंग सुविधाएँ पहुँची। लघु उद्योग, कृषि और छोटे उद्यमियों के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने की चुनौती सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों के सामने थी। कर्मचारियों में मानसिक परिवर्तन लाने के प्रयास किए गए। प्रशिक्षण के माध्यम से परिवर्तित चुनौतियों का सामना करने के प्रयास किए गए। इस प्रकार सोद्देश्य बैंकिंग के द्वारा समाज के आर्थिक विकास की नीति अपनाई गई।

1990 के बाद विश्व में व्यापार तथा बैंकिंग की स्थिति में आमूल-चूल परिवर्तन आया। उदारीकरण और भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण के चलते हमारे देश में में भी बैंकिंग उद्योग के सामने चुनौतियाँ उभरीं। लाभप्रदता पर जोर दिया जाने लगा। मुक्त अर्थव्यवस्था के कारण भारतीय बैंकिंग में कई सुधार सुझाए जाने लगे। सन् 1991 में नरसिंहम् समिति की

सिफारिशें लागू करने के साथ ही बैंकिंग उद्योग पर उदारीकरण और भूमंडलीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई। बैंकिंग क्षेत्र में अंतराष्ट्रीय स्तर के मानक लागू किए जाने लगे। बैंकिंग उद्योग लड़खड़ाने लगा। लाभ कमाना चुनौती बन गया। ऐसी स्थिति में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के सामने अपना अस्तित्व बनाए रखने और अपनी वित्तीय स्थिति मजबूत बनाने के लिए अपनी कार्यनीति में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया।

बैंकों ने अपनी शक्ति का एकीकरण किया। प्रशासनिक ढाँचों में परिवर्तन किया। मशीनीकरण को प्रधानता दी गई। स्वेच्छानिवृत्ति द्वारा कर्मचारियों की संख्या कम की गई और उपलब्ध मानव संसाधन का बेहतर उपयोग कर कामकाज को न सिर्फ सुदृढ़ किया गया, बल्कि मशीनीकरण के माध्यम से सेवाओं को अधिक गतिशील बनाया गया।

बैंकिंग उद्योग का पुनर्गठन किया जाने लगा ताकि वर्तमान स्थिति के अनुरूप आर्थिक विकास की चुनौतियों का सामना किया जा सके। सबसे पहले यह सुनिश्चित किया गया कि दीर्घकाल तक अस्तित्व और विकास की गति को बनाए रखने के लिए आवश्यक परिवर्तन किए जाएँ। अब तक निजी क्षेत्र के बैंकों और विदेशी बैंकों का पदार्पण हो चुका था। स्पर्धात्मक वातावरण में परिवर्तन को न अपनाना अपना अंत देखने जैसा था। इसलिए बैंकों ने पारंपरिक कार्यकलापों के साथ क्रेडिट कार्ड, आवास ऋण, म्यूचुअल फंड, बीमा जैसे कारोबार प्रारंभ किए। ए टी. एम. कार्ड सहित उपभोक्ता ऋण, वाहन ऋण आदि गैर पारंपरिक कारोबार के आधार पर बैंकों ने सेवाएँ प्रारंभ कीं। अब ग्राहक के दरवाजे तक सेवाएँ प्रदान करने की चुनौतियाँ बैंकों के सामने आ गई हैं। साथ ही, सामाजिक परिवर्तन के केंद्र के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका कायम है।

बैंकिंग व्यवसाय आज स्पर्धा के युग में प्रवेश कर चुका है। निजी क्षेत्र और विदेशी बैंकों की तुलना में ब्याज के अंतर में निरंतर कमी आ रही है। इसलिए बैंकों की लाभप्रदता पर दबाव बढ़ता जा रहा है। साथ ही, विनियंत्रण और उदारीकरण के कारण बैंकों के लिए अपने परिचालनों का प्रबंधन सावधानी से करना आवश्यक हो गया है।

आज हमारा देश यदि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाता है तो स्पर्धा के इस युग में वह संभावनाओं का नया अध्याय शुरू कर देगा।



सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की अधिकाधिक शाखाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। इसका लाभ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विकसित करने में हो सकता है। देश के ग्रामीण बाजार भी सभी सुविधाओं से परिपूर्ण हो रहे हैं। सूचना प्रणाली का भी विकास हो रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की ग्रामीण शाखाओं के माध्यम से वहाँ सस्ते दरों पर साधन उपलब्ध होंगे और भारी सरकारी पूंजी निवेश से व्यावसायिक अवसर उपलब्ध होंगे। कृषि पर आधारित उद्योगों में निश्चित रूप से वृद्धि हो रही है। अत: अब बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे सलाहकार और मार्गदर्शक के रूप में अपनी भूमिका निभाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नया आयाम दे सकते हैं। बैंकों ने 'किसान क्रेडिट कार्ड' की शुरूआत अब की है। इससे किसान आवश्यकतानुसार कृषि के लिए लगने वाले हर प्रकार के संसाधन कार्ड से जुटा सकते हैं। जब उसके पास आय होगी तो वह इसे लौटा सकता है।

देश के आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। उद्योग, कृषि, व्यापार आदि को विकसित करने में बैंक अपना योगदान दे रहे हैं। बड़ी मात्रा में लिए जाने वाले ऋणों का अनर्जक परिसंपत्तियाँ बन जाने का खतरा बैंकों के सामने चुनौती रहा है। कर्जदार जब ऋण लौटाने की स्थिति में नहीं होता तब वह खाता एन० पी० ए० हो जाता है। ऐसे ऋणों से बैंक को नुकसान होता है। इसके लिए बैंक जोखिम प्रबंधन कर इसे खतरे से बचाने की हर संभव कोशिश करते हैं।

बैंकों का कार्य अत्यंत गतिशील होता जा रहा है। राशि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर अंतरित करने की प्रक्रिया आसान हो गई है। नेटवर्किंग के माध्यम से 'एनी व्हेयर बैंकिंग', अर्थात् किसी भी शाखा में व्यवहार करना आसान हो गया है। अब बैंक कोर बैंकिंग सोल्यूशन की ओर अग्रसर हो रहे हैं, इससे शाखाओं के जाल आपस में जुड़ जाएँगे और कारोबार गतिशील हो जाएगा। ए० टी० एम० कार्ड शाखाओं से और कई बैंकों से जुड़ेंगे। सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए ई-मेल, इंटरनेट, फैक्स आदि सुविधाओं का उपयोग और बढ़ेगा। बैंक कम लागत पर अधिकतम सेवाएँ देंगे - जैसे 'फैमिली कार्ड', बीमा आदि। अपने परिचालनों को सुदृढ़ और प्रभावी बनाने के लिए बैंक विशेषज्ञों की सेवाएँ लेने लगे हैं।

निजीकरण और स्पर्धा के दौर में बैंक अधिक स्वायत्तता की ओर बढ़ रहे हैं। इसके लिए उन्हें अपनी पूंजी में सार्वजनिक निर्गम को शामिल करना पड़ रहा है। कई बैंकों ने अपने शेयर बाज़ार में प्रस्तुत किए है। उन्हें जबरदस्त प्रतिपुष्टि मिल रही है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि निवेशकों का रुझान बैंकों के शेयर में बढ़ा है। बैंकों के सामने अब यह भी चुनौती होगी कि वे निवेशकों की अपेक्षाओं पर खरे उतरें। एक ओर आर्थिक विकास का सामाजिक दायित्व निभाना और दूसरी ओर निवेशकों की अपेक्षानुरूप अधिकाधिक लाभ कमाकर उन्हें उनका हिस्सा लौटाना। इन सारी चुनौतियों का सामना करने, ग्राहकों-निवेशकों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए बैंकों को, परिवर्तन को अपनाकर अपना बेहतर पुनर्गठन करने पर विशेष जोर देना होगा। इसके लिए बैंक सूचना प्रौद्योगिकी का अधिकाधिक उपयोग कर परिवर्तन के मोड़ पर खड़े बैंकिंग उद्योग को एक नई दिशा दे सकते हैं। बैंकिंग उद्योग ने सुधारों को अपनाते हुए अपना पुनर्गठन प्रारंभ कर दिया है और अंतराष्ट्रीय स्तर पर बैंकिंग व्यवसाय को ध्यान में रखकर अपना कामकाज तेज कर दिया है। जो बैंक इस परिवर्तन में पिछड़ जाएँगे उनके सामने उनके अस्तित्व का खतरा मँडराएगा। इस बात से सभी अवगत हैं। इसीलिए पूरा बैंकिंग उद्योग लाभप्रदता हासिल करने में बहुत सचेत है।

हमारा देश आर्थिक शक्ति के रूप में तेजी से उभर रहा है। ऐसे संधिकाल में बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। हमें नया शिखर बनाने में आर्थिक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करना होगा। परिवर्तन के इस दौर में बैंकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो उठती है।

❑❑❑



# उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश की लोककला : एक परिदृष्य

● डॉ. बिमला वर्मा

लोककला हमारी सामाजिक चेतना, आर्थिक स्थितियों, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। समाज के लिए दर्पण का कार्य करती है। समाज के लिए अमूर्त भावों को प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास करती है। लोककला की एक और विशेषता उसकी सर्वग्राह्यता है। सर्वसाधारण उसके महत्व से परिचित हैं, तभी तो इसके विभिन्न रूप गरीब की झोपड़ी से लेकर धनवान के महलों में भी देखने को मिलते हैं।

संकेतवादिता तथा प्रतीकवाद लोककला की प्रबल शक्तियाँ हैं। लोककला में, चाहे वह एक राज्य की हो अथवा भारत के विभिन्न राज्यों की, राष्ट्रीय एकता के तत्व सर्वाधिक रूप से समाविष्ट हैं जो हमारी भावनात्मक एकता को प्रदर्शित करते हैं।

इस लेख में मैं केवल उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल के भूमि और भित्ति अलंकरण के माध्यम से आपको पूरे प्रदेश का भ्रमण करवाना चाहती हूँ। इस प्रदेश को मैंने अनगिनत बार देखा है। इसकी प्राकृतिक

● ए 68/2, डी०डी०ए० फ्लैट्स, एस०एफ०एस० साकेत, नई दिल्ली- 110017

संपदा, धार्मिक आस्था, गंगा-यमुना संस्कृति, अनेक बोलियों में रचा साहित्य, लोक कथाएँ, लोक रंग और विभिन्न जातियों और उपजातियों में बँटे हुए मानव समुदाय को भी मैंने बहुत-ही निकट से जाना और पहचाना है। आज इन्हीं के माध्यम से आप भी मेरे साथ उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल के क्षेत्रों का भ्रमण करें।

उत्तर प्रदेश, जिसका पूर्व नाम संयुक्त प्रांत था, कुछ ही दिनों पहले इसके भी दो भाग हो गए हैं, जो अब उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश के नाम से जाने जाते हैं। उत्तरांचल, जिसमें कुमाऊँनी और गढ़वाली तथा अन्य मिलती-जुलती भाषाएँ बोली जाती हैं तथा जहाँ परिवार का ही महत्व सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है, शिवमय है। हर जगह कल्याणकारी शिव और अमर सुहाग का वरदान देने वाली शिव की अर्धांगिनी गौरी अर्थात् पार्वती, दुर्गा, काली आदि के मंदिर मिलेंगे। इसके साथ ही साथ अनेक लोक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और उनके पूजास्थल भी मिलेंगे। भोलेनाथ की रहस्यमयी दुनिया, हरिद्वार से आरंभ होकर ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला, मुनि की रेती, जोशीमठ, फूलों की घाटी, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, जमुनोत्री और अल्मोड़ा, रानीखेत, नैनीताल, जागेश्वर आदि अनगिनत स्थानों तक फैली हुई है। शिव परिवार के साथ भगवान कृष्ण, पांडव और कौरव भी यहाँ के जनजीवन में छाए हुए हैं। महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी तीनों देवियों की पूजा बहुत मन से की जाती है। इन तीनों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए शादी के समय बनाई जाने वाली 'ज्योति' भित्ति अलंकरण में तीनों देवियों के साथ विघ्नविनाशक गणेश जी भी देखने को मिलेंगे। यह अलंकरण चूने से पुती या सफेद दीवार पर विभिन्न रंगों से बनाए जाते हैं। इस भित्ति अलंकरण में स्वस्तिक, कमल के फूल, कल्पवृक्ष, विभिन्न देवी-देवता, उनके आयुध वाहन और पूजा के सामान, षोडश मातृकाएँ तथा बिंदुओं, रेखाओं, त्रिकोण, अष्टकोण, षट्कोण आदि की सहायता से ज्यामितिक डिजाइन बनाए जाते हैं। फूल और पत्तियों से तरह-तरह की बेलें भी बनाई जाती हैं। पीला, लाल, भूरा, नीला तथा सजाने के लिए काले रंग का भी प्रयोग किया जाता है। अधिकतर लोग भूमि और भित्ति अलंकरण को गेरू से लिपे स्थान पर चावल के पीढ़े से बनाते हैं जो देखने में बहुत सुंदर लगते हैं। प्राय:



प्रत्येक त्योहार और संस्कार पर 'ऐपण' बनाए जाते हैं जो कि कुमाऊँनी क्षेत्रों की विशेषता है। गढ़वाली क्षेत्रों के रहने वाले लोगों में भूमि और भित्ति अलंकरण में अधिक रुचि नहीं दिखाई देती है। यंत्रों पर आधारित चित्र अवश्य दुर्गा पूजा के अवसर पर देखने को मिलेंगे। शायद इस कारण वहाँ की पथरीली भूमि हो सकती है। पर उपवास रखना और मंदिर जाकर पूजा करना वे कभी नहीं भूलते।

उत्तरांचल के कुमाऊँनी और गढ़वाली क्षेत्रों में सूर्य पूजा, दीवाली, होली, दुर्गाष्टमी, नवरात्रि, बसंत पंचमी, कृष्णाष्टमी आदि सभी त्योहार खूब धूमधाम से मनाए जाते हैं। यहाँ पर रहने वाली जातियों में ब्राह्मण और क्षत्रिय प्रमुख हैं जो कि मुस्लिम काल में गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान से आकर यहाँ बस गए। लोककला के चित्रण करने में ब्राह्मण जाति की स्त्रियाँ अधिक निपुण हैं। महाराष्ट्र और राजस्थान की लोककला का यहाँ के भूमि व भित्ति अलंकरण पर प्रभाव है।

कब मैं पहाड़ों पर घूमते-घूमते मैदानी क्षेत्रों में आई, इसका भास तब हुआ जब खड़ी बोली समझ में आने लगी और केवल शिव परिवार के मंदिरों के स्थान पर राम, कृष्ण, विष्णु-लक्ष्मी, हनुमान, गणेश, काली, दुर्गा तथा शिवलिंग और शिव के मंदिर नजर आने लगे। घर के भीतर की चित्रकारी के रंग-ढंग भी बदल गए। इस क्षेत्र में या तो सफेद दीवार पर गेरू से बनाए हुए चित्र मिले या फिर गोबर से लिपी हुई दीवार पर चावल के पीठे से बनाए गए चित्र। सुंदरता बढ़ाने के लिए कहीं-कहीं सिंदूर का टीका अवश्य लगा दिया जाता है। चरखा, अटेरन, मोर, घोड़ा, हाथी, चाँद, सूरज, तारे, तुलसी का पौधा, स्वस्तिक और तरह-तरह के फूल-पत्तों से बनाई गई बेलें यहाँ के भूमि व भित्ति अलंकरणों में प्रमुखता से प्रयोग में लाए जाते हैं। गांवों में घर के बाहर की दीवारों पर मोर, गमले, स्वस्तिक, हाथ के थापे, नाग चित्रण, फूल-पत्तियों से बनाई गई बेलें या आड़ी-तिरछी, सीधी व पड़ी रेखाओं के मिश्रण से बनाए गए डिजाइन अवश्य देखने को मिल जाएँगे पर यह उतने आकर्षक नहीं होते जितने राजस्थान के गाँवों में मिट्टी की दीवारों पर बनाए चित्र। इस क्षेत्र के प्रमुख त्योहारों में करवा चौथ, अहोई, अष्टमी, होली, दीवाली, दशहरा, बसंत पंचमी, नागपंचमी, कृष्णाष्टमी, तथा शारदीय व वासंतीय नवरात्रि प्रमुख हैं। किसी एक देवता

का यहाँ राज्य नहीं, बल्कि सभी देवी-देवता यहाँ पूज्य हैं। खड़ी बोली का क्षेत्र जिसमें सहारनपुर, रुड़की, मुजफ्फरनगर, मेरठ व बुलंदशहर सम्मिलित हैं, जाट और ब्राह्मण जातियों का गढ़ है। तीसरी प्रमुख जाति वैश्य है। इसके अतिरिक्त खत्री, कायस्थ, गूजर व तरह-तरह का काम करने वाली अनेक जातियाँ है। उपजाऊ भूमि के होने के कारण अधिकतर जनता खेती संबंधी कार्यों व सूत कातने के व्यवसाय से जुड़ी है। खेती उनके जीवन का आधार है। प्रत्येक परिवार का कोई न कोई पुरुष सेना की नौकरी से जुड़ा है। अच्छी फसल और पुरुषों की स्वस्थ रूप से वापसी ही इनकी कामना होती है। स्त्रियों के ऊपर घर और खेत-खलिहानों का बहुत काम होता है इसलिए वे घर को सजाने के लिए चित्र तो बनाती हैं, पर अधिक समय नहीं दे पातीं। यहाँ पर रहने वाली वैश्य व खत्री जातियों के घरों में फिर भी काफी अच्छे चित्र देखने को मिलते हैं। शहरों में रहने वालों में दूसरे प्रदेशों से आई हुई जातियों का काफी मिश्रण है जिसमें पंजाबी, हरियाणवी व बंगाली प्रमुख हैं।

खड़ी बोली प्रधान इन शहरों से घूमते हुए जैसे ही हम ब्रजभाषा के क्षेत्रों में प्रवेश करेंगे, कृष्ण भूमि की अलौकिकता को अनुभव करने लगेंगे। कला चारों ओर फैली नजर आएगी। कृष्ण, राधा, बलदेव आदि सभी के नाम के मंदिर यहाँ हैं। कृष्ण संबंधी सभी त्योहारों की छटा दर्शनीय होती है। यह भूमि कृष्ण लीला की भूमि है और यहाँ पर जमुना का जन्मदिन भी मनाया जाता है। उसे वस्त्र भी पहनाए जाते हैं। नावों में सवार लोग रंग-बिरंगी साड़ियों का एक छोर पकड़ते हैं तब दूसरा छोर दूसरी नावों में बैठे लोग। नावें जमुना के एक किनारे से साड़ियों को फहराते हुए चलती हैं और जमुना के दूसरे किनारे पर साड़ियों को फहराते हुए पहुँच जाती हैं। जमुना के घाटों के पास हजारों की तादाद में खड़े लोग रंगों से ओत-प्रोत इस लुभावने दृश्य को देखते ही रह जाते हैं।

प्राय: प्रत्येक त्योहार पर घर की भीतरी और बाहरी भित्ति पर तथा भूमि पर चित्र बनाए जाते हैं। मुख्य द्वार पर गणेश जी ऋद्धि-सिद्धि के साथ विराजमान रहते हैं। कृष्ण जन्माष्टमी, दीपावली, राधाष्टमी, देव उठान एकादशी, गोवर्धन पूजा, भाई दूज, नागपंचमी, रक्षाबंधन, नवरात्रि, दुर्गाष्टमी, रामनवमी, दशहरा और होली पर बनाए गए अलंकरण लोककला



के सुंदर नमूने कहे जा सकते हैं। मथुरा, वृंदावन, गोकुल, गोवर्धन के वल्लभ संप्रदाय के मंदिरों के भीतर बनाई गई फूल साँझी, जल साँझी, वेदिका साँझी तथा केले के पत्तों से बनाई गई साँझी दर्शनीय होती है। साँझी, झाँझी तथा टेसू का त्योहार यहाँ की कुँवारी कन्याएँ और सोलह वर्ष से कम आयु के लड़के खूब उत्साह से मनाते हैं। नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं की कलात्मक रुचि का कमाल देखना हो तो लोगों को आश्विन माह के पितृ पक्ष में मनाए जाने वाले साँझी के त्योहार पर अवश्य ही ब्रज क्षेत्र में होना चाहिए। जिस उमंग के साथ ये बालिकाएँ गाय का हरा गोबर और महकते फूलों को कूदते-फाँदते, गीत गाते हुए बटोरने जाती हैं, उतनी ही उमंग के साथ गाते हुए प्रत्येक दिन साँझी की रचना करती है और फूलों से सजाती हैं। अमावस का 'साँझी का कोट' उनकी कलात्मक रुचि का परिचायक है। इस क्षेत्र की प्रत्येक वधु 'राधा' और प्रत्येक वर 'कृष्ण' है। कृष्ण यहाँ किस-किस को प्रिय है और कितने अधिक, इस कथा से अपने आप ही समझ में आ जाएगा।

तुलसी का विवाह प्रत्येक वर्ष देव उठान एकादशी को होता है और न केवल उत्तर प्रदेश में, बल्कि देश के विभिन्न राज्यों में भी धूमधाम से यह विवाह संपन्न किया जाता है। उत्तर प्रदेश के अन्य भागों में तुलसी का विवाह भगवान विष्णु से होता है पर ब्रज प्रदेश में भगवान कृष्ण से। तुलसी के माता-पिता ने जब तुलसी से अपने भावी 'वर' के लिए पूछा तो हठीली तुलसी ने लहराते हुए कहा – ''उगता सूर्य गर्म होता है। चंद्र एक पखवाड़े का राजा होता है। ब्रह्मा चार सिर वाले हैं और विष्णु चार भुजा वाले। शिवजी जटा-जूट वाले और गणेशजी सूँड वाले हैं। शुक्र की एक आँख है, शनि ग्रहों से घिरे हैं। मंगल पीड़ादायक और बुद्ध बुद्धिहीन तथा बृहस्पति शीतल हैं। इसलिए जग को ज्योर्तिमय करने वाले श्री कृष्ण ही मेरे पति हो सकते है।'' तुलसी के माता-पिता ने इसीलिए तुलसी का विवाह पूर्ण विधि-विधान के साथ श्री कृष्ण से करा दिया। इस विवाह की तैयारी कम से कम दो दिन पहले से आरंभ हो जाती है। पत्तियों सहित गन्नों से आंगन में मंडप के चार खंभों का निर्माण किया जाता है। मंडप पर लाल, पीला या सफेद चंदोवा लगाया जाता है। आंगन और मंडप से लेकर पूजा स्थल तक गोबर से लिपी भूमि

पर चावल के पीठे से चित्र बनाए जाते हैं। सुंदरता बढ़ाने के लिए गेरु और पिसी हल्दी का प्रयोग किया जाता है। तुलसी के पौधे को प्रतीक रूप से नए कपड़े पहनाए जाते हैं। विवाह गीत गाए जाते हैं और विवाह की सभी रस्में पंडित जी द्वारा पूरी की जाती हैं। विवाह के भव्य समारोह में परिवार व आस-पास के सभी लोग सम्मिलित होते हैं। यह विवाह समारोह दर्शनीय है। साथ ही साथ भूमि अलंकरण भी कलात्मकता में बेजोड़ होता है।

ब्रज प्रदेश में प्रत्येक दिन त्योहार का रूप ले लेता है। ब्रज प्रदेश की चित्रकला में नागों का चित्रण अनेक-प्रकार से किया गया है। इसके अतिरिक्त पक्षियों में मोर सर्वाधिक लोकप्रिय है जो प्राय: प्रत्येक चित्रण में देखने को मिल जाएगा। रक्षाबंधन के समय श्रवण कुमार का चित्रण जो अनेक रूपों में किया जाता है, देखने योग्य होता है। कुलीन चतुर्वेदी परिवारों के चित्रण पर सीरियन कला का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यहाँ की लोककला में तुलसी का पौधा, स्वस्तिक, चाँद-सूरज, तारे, मानव आकृतियाँ, पेड़-पौधे, मोर, गौरेया, गाय, घोड़े, तरह-तरह की फूल-पत्तियों की बेलें, ज्यामितीय डिजाइन, पंखा प्रमुख स्थान रखते हैं।

ब्रज प्रदेश का हर माह एक उत्सव का रूप प्रस्तुत करता है। कभी हरियाली तीज के लोक गीत सुनिए तो कभी कृष्णलीला संबंधी गान। कभी घर-घर सजी साँझी का अवलोकन करिए तो कभी मंदिरों की झांकी, छटा, कृष्ण लीला, जल साँझी, वेदिका साँझी और केले के पत्तों से बनाई साँझी का गुणगान करिए, कभी यमुना के किनारे जाकर दीपदान की छटा निहारिए तो कभी यमुना को वस्त्र पहनाने का ढंग देखिए। कभी बरसाने की लट्ठ मार होली और वृंदावन की होली का आनंद लीजिए तो कभी गोवर्धन व गोकुल की परिक्रमा का।

ज्यों-ज्यों हम ब्रज प्रदेश से आगे बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों कृष्ण के स्थान पर राम का प्रभुत्व बढ़ता जाता है। अवधी, रुहैली व कन्नौजी बोलने वाले इन क्षेत्रों में राम का प्रभुत्व वैसा ही है जैसा कि ब्रज भाषा क्षेत्र में कृष्ण का। यहाँ के लोकगीतों में प्रत्येक 'वधू' सीता और प्रत्येक 'वर' राम के रूप में ही वर्णित है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को बहुत आदर का स्थान प्राप्त है। रामायण का पाठ प्राय: हर घर में होता है। रामलीला



अनेक रूपों में की जाती है। यहाँ आश्विन और कार्तिक का माह विभिन्न त्योहारों का माह है। इन दो महीनों में कनागत, न्यौरता, नवरात्रि, दशहरा, शरद पूर्णिमा, करवा चौथ, अहोई अष्टमी, दीपावली, भाई दूज, गोवर्धन, कार्तिक पूर्णिमा तथा देव उठान एकादशी के त्योहार आते हैं जिनमें सभी जातियों के लोग भूमि और भित्ति अलंकरण बनाते हैं। इस क्षेत्र में बसी हुई कान्यकुब्ज ब्राह्मण जाति की स्त्रियाँ भूमि और भित्ति अलंकरण कला प्रदर्शन में अद्वितीय हैं। विवाह के अवसर पर भित्ति पर बनाए जाने वरले 'कोहबर' आप को विमुग्ध करे बगैर नहीं रहेंगे।

नागपंचमी के त्योहार का एक नया रूप इस क्षेत्र में देखने को मिलेगा। नागों की पूजा के साथ यह लड़के और लड़कियों का भी मन-भावन त्योहार है। इस दिन बहनें रंग-बिरंगे कपड़ों और गहनों से सजाकर गुड़ियों को नदी के किनारे ले जाती हैं और उनके भाई फूलों की गुँथी हुई छड़ी से गुड़ियों को पीट-पीट कर नदी में बहा देते हैं और नदी किनारे पतंग उड़ाने में मग्न हो जाते हैं। बचपन में किसी जमाने में लड़कियों की सबसे पसंद की और प्यारी वस्तु उनकी गुड़ियाँ ही होती थीं जिनकी पिटाई करके पानी में बहा देने की क्रिया उनको झेलनी पड़ती थी, पर ये ही क्षण उन्हें समय आने पर सब कुछ अपनी माँ के घर छोड़ कर ससुराल जाने का साहस देते थे।

इन क्षेत्रों में महालक्ष्मी पूजन का महात्म्य अधिक है। यह आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। इस दिन कुम्हार कच्ची मिट्टी से बना एक हाथी जिस पर महालक्ष्मी सवार होती हैं तथा जिसके पैरों पर सोलह दीपक लगे होते हैं, प्रात: काल ही घरों में दे जाता है। स्त्रियाँ इसे चूने या चावल के पीठे से रंग देती हैं। संध्या के समय भूमि अलंकरण कर के हाथी को मध्य भाग में स्थापित कर देती हैं। दिन भर स्त्रियाँ तरह-तरह के पकवान बनाती हैं और व्रत रखती हैं। गोधूलि बेला में पंडित जी की सहायता से स्त्रियाँ सोलह शृंगार के साथ महालक्ष्मी का पूजन करती हैं। पूजा घर के भीतर हाथी के पैरों में लगे दीपक को असली घी से जलाया जाता है। संध्या के समय घर-घर से आती हुई धूप-दीप नैवेद्य और पकवानों की सुगंध, शंख की ध्वनि और घंटियों की आवाज अवर्णनीय समाँ बाँध देती हैं।

इन क्षेत्रों में भूमि व भित्ति अलंकरण में देवी-देवताओं के चित्र, स्वस्तिक, सुपारी व केले के पेड़, फूलों से सजे गमले, पूजा का सामान, तरह-तरह की ज्यामितिक डिजाइनें, पुरइन की बेल, मोर के साथ-साथ तोते का चित्रण, सगुन चिरैया, हाथी, घोड़े, मछली, ऊँट, सियार तथा मानव आकृतियाँ, डोली को ले जाते हुए कहार, और तुलसी के पौधों का चित्रण बहुत सुंदरता के साथ किया जाता है। जातियों के अनुसार भी प्रत्येक परिवार के भूमि व भित्ति अलंकरण में अंतर आ जाता है। मोर का स्थान कब चालाक तोता ले लेता है, यह मालूम ही नहीं पड़ता।

चलते-चलते हम पहुँच जाते हैं भोजपुरी इलाके में जहाँ मैथिली भाषा और संस्कृति का भी प्रभाव है। भोजपुरी इलाके में राम की महिमा तो है ही, साथ ही शिव का महत्व भी बढ़ जाता है। बनारस भोजपुरी संस्कृति का गढ़ है। बनारस की भूमि शिव व दुर्गा की भूमि है। इस क्षेत्र के दो उत्सव देखने योग्य होते हैं जिन्हें पर्यटक को देखना भूलना नहीं चाहिए। प्रथम रामनगर की रामलीला और द्वितीय कजरी विरहा और फागों को सुनना और उनकी प्रतियोगिता को देखना। कजरी को सुनना हो तो यहाँ बड़ी तीज के समय आना चाहिए। गंगा की लहरों पर झूमती नाव और नाव में झूमते मानव हृदय। रातभर सुनिए, दिनभर सुनिए – न सुनाने वाला थकता है और न सुनने वाला। करवा चौथ और अहोई अष्टमी की तिथियाँ भी जनसाधारण को याद नहीं होतीं, उन्हें तो केवल याद है सूर्य छठ (डला छठ)। हर छठ और देवउठान एकादशी की तिथियाँ। मोर अपनी सुंदरता से भी यहाँ के लोगों को रिझा नहीं पाया – वे तो पसंद करते हैं हरे-हरे तोते को।

इस क्षेत्र की एक और विशेषता है 'कोहबर' चित्रण की – कायस्थ और कान्यकुब्ज ब्राह्मण शादी के समय 'कोहबर' का चित्रण करते हैं। लड़के के घर में विवाह की रस्मों का कमरा होने के साथ-साथ यह सुहागरात का भी कमरा होता है। भोजपुरी साहित्य 'कोहबर' तथा वैवाहिक गीतों से भरा पड़ा है। अवधी भाषा, कन्नौजी और रुहेली भाषा क्षेत्रों से लेकर भोजपुरी और बुंदेली क्षेत्रों तक में देवउठान पर भगवान विष्णु की शादी तुलसी के बिरवे से की जाती है। इन क्षेत्रों में शादी के समय न केवल घर के मुख्य द्वार के ऊपर भगवान गणेश ऋद्धि-सिद्धि



के साथ विराजमान रहते हैं, साथ ही मुख्य द्वार के दोनों ओर घुड़सवार, तोता, फूलों की बेल, तलवार लिए द्वारपाल, हाथी पर चढ़े लोगों और बरातियों का चित्रण होता है। इसके अतिरिक्त गोवर्धन त्योहार पर गोबर और मिट्टी से बनाया गया गोवर्धन पर्वत व श्रीकृष्ण और उसके नीचे खस की सीकों से छाया हुआ गोवर्धन गाँव का संपूर्ण दृश्य इस क्षेत्र की विशेषता है। रात्रि के समय इसे छोटे-छोटे जलते दीयों से आलोकित कर दिया जाता है।

अब चलते हैं शौर्य और वीरता के प्रतीक बुंदेलखंड की ओर। यह है महारानी लक्ष्मीबाई की कर्मभूमि व रणभूमि। यहाँ के लोग जितने वीर हैं, उतने ही कलाप्रेमी भी। भोजपुरी क्षेत्रों के समान ही घर के मुख्य द्वार और बाहरी दीवारों की सजावट होती है। करवा चौथ और अहोई अष्टमी का महत्व नगण्य, पर महालक्ष्मी का सर्वत्र पूजन होता है, शिव और पार्वती को राम-सीता के समान ही बड़ी मान्यता प्राप्त है। अहोई अष्टमी के स्थान पर संतान सप्तमी के नाम से उसी भावना के साथ एक त्योहार मनाया जाता है। लड़कियों के खेल भी बिल्कुल अलग। नारे सुडटा, ढ़िरिया तथा मामुलिया यहाँ कुँवारी लड़कियों के त्योहार हैं जो मध्य प्रदेश में भी देखने को मिलते हैं। भूमि और भित्ति अलंकरण में महाराष्ट्र की रंगोली का प्रभाव अधिक दिखाई पड़ता है। दीपावली पर भित्ति चित्रण प्राय: सभी जातियाँ करती हैं जिनमें जातिगत अंतर पाया जाता है। वैश्य और खत्री जातियों के भित्ति चित्रण रंगयोजना की दृष्टि से बहुत सुंदर होते हैं। यह क्षेत्र आल्हा-ऊदल, रानी-झांसी, हरदौल व अनेकों वीरों की यशोगाथाओं को अपने में समेटे हुए हैं। चित्रकूट के घाट पर बासंतीय नवरात्रि पर रामायण का पाठ और उसकी प्रतियोगिता देखने और सुनने को मिलती है। इसी समय चित्रकूट में रहने का स्थान मिलना अत्यंत कठिन होता है। शारदीय नवरात्रि में लांगुरिया को गाने वाले लोग स्थान-स्थान पर मिलेंगे। ज्वारों का मेला जो कि यहाँ का सबसे मशहूर मेला है, संपूर्ण जनता का मेला है। कुछ इसे देखने आते हैं और कुछ इसमें भाग लेने। रामलीला से अधिक ज्वारों के मेलों में यहाँ की जनता उत्साह से भाग लेती है। होली का त्योहार यों तो रंगभरनी एकादशी से फाग गायन के साथ आरंभ हो जाता है पर होली का खेलना पड़वा के

स्थान पर द्वितीया को होता है क्योंकि रानी झाँसी के पति की मृत्यु पड़वा को हुई थी। आज भी इस क्षेत्र की जनता रानी झाँसी का उतना ही सम्मान करती है, जितना आज से लगभग 160 वर्ष पूर्व करती थी।

इस क्षेत्र को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला त्योहार है 'कुनधुंसू'। यह त्योहार आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन 'सासें' अपने-अपने घरों के चारों कोनों अथवा एक कमरे के चारों कोनों को पोतनी मिट्टी से पोत कर हल्दी से एक स्त्री आकृति बनाती हैं और उसकी पूजा चंदन, अक्षत, पुष्प चढ़ा कर, घृत व गुड़ का नैवेद्य लगा कर आरती उतारती हैं और यह कामना करती हैं कि हे परमेश्वरी बहू! घर में लक्ष्मी बन कर धन-धान्य और संतान से उसे हमेशा भरती रहना। स्त्रियाँ आज भी इसे मनाती हैं पर बगैर इस त्योहार के गूढ़ार्थ को जाने बिना। यह त्योहार बुंदेली संस्कृति की ऐसी धरोहर है जो अपने में बेमिसाल है। इस त्योहार को देखने और समझने के बाद मुझे बेहद खुशी हुई और लगा जैसे लड़कों और पतियों के सुख और स्वस्थ्य की कामना तो हमारे हिंदू समाज के अनेकों त्योहार द्वारा होती ही रहती है, पर कम से कम कोई एक त्योहार तो है जिसके माध्यम से स्त्री की और वह भी परिवार की बहू की पूजा की जाती हैं। आज के आधुनिक युग में ऐसे त्योहारों की अधिक आवश्यकता है।

❑❑❑



# अमर्त्य सेनः वंचित वर्ग के लिए प्रतिबद्ध अर्थशास्त्री

● राम मूर्ति शर्मा

लोक-कल्याणकारी अर्थशास्त्र के लिए नोबल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन अपनी हाल की पुस्तक 'कैपेबिलिटी, फ्रीडम एंड इक्वॉलिटी' के लिए फिर से चर्चा में हैं। इस पुस्तक में अमर्त्य सेन के एक और पहलू से परिचय होता है। इस पुस्तक में सेन की उन परिस्थितियों का जिक्र किया गया है जिसमें उन्हें एकल अभिभावक के रूप में अपने दो बच्चों की परवरिश करनी पड़ी थी। वंचित एवं आम लोगों की वकालत करते हुए सेन ने इस पुस्तक में महिलाओं, विशेषकर कामकाजी वर्ग की परेशानियों का ब्योरा दिया है। सेन की पत्नी इवा के निधन के समय उनके दोनों बच्चों की उम्र क्रमशः दस एवं आठ वर्ष थी।

सेन का जन्म देश के लिए पहले नोबल पुरस्कार जीतने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांतिनिकेतन में 3 नवंबर, 1933 को हुआ था। उन्हें यह नाम स्वयं कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर ने दिया था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा शांतिनिकेतन में ही हुई। इसके बाद सेन ने कोलकाता के प्रेसीडेंसी कालेज और कैंब्रिज के ट्रिनिटी कालेज में अपनी पढ़ाई की। केवल 23 वर्ष की उम्र में ही सेन जाधवपुर

● अविनाश, एस-140 (ए), पांडव नगर, दिल्ली-110092

विश्वविद्यालय में पूर्ण प्रोफेसर हो गए। इसके बाद वे दिल्ली विश्वविद्यालय, लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भी प्रोफेसर रहे। वह हार्वर्ड विश्वविद्यालय में भी वरिष्ठ प्रोफेसर रहे। बाद में उन्हें ट्रिनिटी कालेज में ''मास्टर'' नियुक्त किया गया। यह नियुक्ति ब्रिटेन के शैक्षिक जगत् का सबसे अधिक प्रतिष्ठित सम्मान है। उल्लेखनीय है कि यह शाही नियुक्ति होती है। ट्रिनिटी कालेज और नोबल सम्मान का विशेष संयोग रहा है। इस कालेज से संबद्ध लोगों को 30 से भी अधिक बार नोबल पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

सेन ने 1950 के दशक में एक और प्रख्यात अर्थशास्त्री जॉन रॉबिन्सन के निर्देशन में अपना शोध पूरा किया था। इसके अलावा वे अपने छात्र जीवन में मॉरिस डाब तथा एडम स्मिथ से काफी प्रभावित रहे।

सेन को 1998 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें नोबल पुरस्कार लोक कल्याणकारी अर्थशास्त्र, मानवाधिकार और असमानता पर उनके विचारों के लिए दिया गया था। इसके अगले वर्ष यानी 1999 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। सेन भारत रत्न प्राप्त करने वाले पहले समाजशास्त्री थे। इसके साथ ही सेन को दर्जनों सम्मान एवं मानद उपाधियाँ मिल चुकी हैं।

सेन ने अपने विचारों से स्पष्ट किया है कि वे सिर्फ अर्थशास्त्री ही नहीं हैं बल्कि वे आर्थिक विचारधारा के दार्शनिक हैं। वे अर्थशात्रियों के अर्थशास्त्री और दार्शनिकों के दार्शनिक हैं जो सिर्फ अर्थशास्त्र के मांग एवं पूर्ति सिद्धांत में ही विश्वास नहीं करते बल्कि मानव की चिंता करते हैं और मूल्यों के साथ ही उनकी जरूरतों, उनके व्यवहारों पर भी ध्यान देते हैं। उनके विचार रूढ़िवादी या पुराणपंथी सिद्धांतों के खिलाफ हैं। यह उनके विचारों की ही विशेष उपलब्धि मानी जाएगी कि जब विश्व में हर ओर पूंजीकरण, निजीकरण या वैश्वीकरण पर जोर दिया जा रहा हो, वे अर्थव्यवस्था में विकास के साथ ही मानव समुदाय की चिंता करते दिखाई देते हैं। इसके साथ ही मानव इतिहास के विभिन्न प्रसंगों से अपने विचारों की पुष्टि भी करते हैं।

सेन के विचार बाजार के मूल सिद्धांतों के खिलाफ हैं। निर्धनता और वंचित लोगों की समस्याओं से निबटने में बाजार की सीमाओं को



उजागर करना उनकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने साबित किया है कि बाजार और विकास से ही निर्धनता का उन्मूलन नहीं किया जा सकता। इसके लिए वे जन भागीदारी की बात करते हैं। साथ ही राजनीतिक चर्चाओं में नैतिकता और मूल्यों की भी बात करते रहे हैं।

उनके विचारों में निजी क्षेत्र के लिए भी स्थान है। इसके साथ ही उदारीकरण और वैश्वीकरण के लिए भी जगह हैं। पर इसके लिए वे सावधानी से कदम उठाने की बात करते हैं। सेन अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और अमेरिका के वित्त विभाग के पूर्ण विनियंत्रण, निजीकरण और बेलगाम वैश्वीकरण सिद्धांतों का समर्थन नहीं करते। अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका के बारे में सेन का स्पष्ट विचार रहा है कि सरकार को स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक बीमा, पोषण आदि क्षेत्रों में अधिक दिलचस्पी लेनी चाहिए जिससे अर्थव्यवस्था का समग्र विकास संभव हो सके।

सेन धर्मनिरपेक्षता के भी जबरदस्त समर्थक रहे हैं। दिसंबर, 1992 में बाबरी मस्जिद गिराए जाने के बाद अमेरिका में इसकी निंदा करने वाले लोगों में वे प्रमुख थे। इसके अलावा उन्होंने बाबरी मस्जिद गिराए जाने के खिलाफ चलाए गए हस्ताक्षर अभियान में भी प्रमुखता से भाग लिया था। इस हस्ताक्षर अभियान में एक और नोबल पुरस्कार विजेता एस० चंद्रशेखर भी शामिल थे। भारत के बारे में उनका मानना रहा है कि भारत हमेशा से बहु धर्मी, बहु भाषी और बहु समुदाय संपन्न देश रहा है। यहाँ लंबे समय से विभिन्न धर्मो के अनुयायी एक साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से रहते आए हैं। उनके विचार भारत जैसे विकासशील देशों के लिए अधिक प्रासंगिक और उपयोगी साबित हो सकते हैं। आर्थिक रूप से विकसित देशों की स्थिति से स्पष्ट होता है कि उनके यहां पूंजीकरण या निजीकरण का काफी जोर है। पर ऐसे क्षेत्रों में निजी निवेश कम ही होता है जिनमें लाभ की संभावना कम होती है। ऐसे क्षेत्रों में निजी क्षेत्रों की दिलचस्पी काफी कम होती है। ऐसे में समाज के उन वर्गो की मुश्किलें बढ़ जाती हैं जो उपेक्षित और वंचित होते हैं।

सेन ने अकाल और इससे संबंधित विभिन्न विषयों पर काफी काम किया है और उनका शोध खाद्यान्न की कमी पर काबू पाने में काफी

मददगार साबित हुआ है। वर्ष 1981 में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'पॉवर्टी एंड फैमिन्स' में घटती मजदूरी, बेरोजगारी, खाद्यान्न की बढ़ती कीमतें और खाद्यान्न का अपर्याप्त वितरण तथा भूख के बीच के संबंधों का वर्णन किया गया है। उनके विचारों से नीतिनिर्माताओं को खाद्यान्न की कीमतें स्थिर रखने के लिए प्रोत्साहन मिला है।

सेन ने करीब दो दर्जन पुस्तकें लिखी हैं। इन पुस्तकों में 'पॉवर्टी एंड फैमिन्स', 'च्वाइस आफ टेकनिक्स', 'कलेक्टिव च्वाइस एंड सोशल वेलफेयर', 'ग्रोथ इकोनोमिक्स', 'यूटिलेटरिज्म एंड बियोंड च्वाइस', 'वेलफेयर एंड मैनेजमेंट', 'स्टैंडर्ड आफ लिविंग', 'आन इथिक्स एंड इकोनोमिक्स', 'हंगर एंड पब्लिक ऐक्शन', 'पॉलिटिकल इकोनोमी ऑफ हंगर', 'क्वॉलिटी ऑफ लाइफ', 'आइडेंटिटी एंड वायलेंस', 'इंडिया : इकोनोमिक डेवलपमेंट एंड सोशल ऑपरट्यूनिटी' आदि शामिल हैं। वर्ष 1995 में प्रकाशित 'इंडिया : इकोनोमिक डेवलपमेंट एंड सोशल ऑपरट्यूनिटी' उन्होंने ज्यां द्रेज के साथ संयुक्त रूप से लिखी थी।

इसके अलावा उन्होंने 200 से भी अधिक शोधपत्र तैयार किए हैं। सेन ने विभिन्न आलेखों, साक्षात्कारों और पुस्तकों में भूख तथा अकाल का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

अमर्त्य सेन का मानना है कि अकाल जैसी आर्थिक विपदाओं को टाला जा सकता है या उनकी गंभीरता को कम किया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने राजनीतिक अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार के साथ ही विभिन्न प्रकार की आजादी का जिक्र किया है। उनके विचारों में अकालों के इतिहासों से स्पष्ट होता है कि जिन देशों में लोकतांत्रिक सरकारें और प्रेस की स्वतंत्रता है वहाँ से भयानक अकाल की खबरें काफी कम हैं। अकाल की अधिकतर पुनरावृत्ति प्राचीन राजशाही और उपनिवेशों में हुई है। आधुनिक समय में उन देशों में अकाल से काफी लोगों की मौत हुई है जहाँ तानाशाही शासन रहा हो या शासन प्रमुख का आम लोगों की कठिनाइओं से कोई लेना देना नहीं है।

इस संबंध में सेन का मानना रहा है कि एकल राजनीतिक पार्टी का शासन भी बहुत अच्छा नहीं होता है। जिन देशों में निश्चित अंतराल के बाद चुनाव होते हैं और चुनाव में एक से अधिक राजनीतिक पार्टियाँ



शमिल होती है, वहां अकाल या दुर्भिक्ष होने की आशंका काफी कम होती है। अगर दुर्भाग्य से ऐसा होता भी है तो अकाल पर काबू पाने के लिए शासन स्तर पर गंभीर प्रयास किए जाते रहे हैं। जिन देशों में विपक्षी राजनीतिक पार्टियों को सरकार की आलोचना करने का अधिकार है या प्रेस को स्वतंत्र रूप से खबरों की रिर्पोटिंग करने की स्वतंत्रता होती है, वहाँ अकाल की आशंका काफी कम हो जाती है।.

इस संबंध में सेन ने अपने विभिन्न आलेखों में चीन के भयंकर अकाल की चर्चा की है। चीन में 1979 में आर्थिक सुधारों के शुरू होने के पहले ही 1958-61 के दौरान भयंकर अकाल पड़ा जिसमें एक अनुमान के तहत करीब तीन करोड़ लोगों की मृत्यु हो गई। ब्रिटिश शासन के दौरान भारत के 1943 के भयंकर अकाल में करीब तीस लाख लोगों की मौत हो गई थी। अगर चीन में प्रेस की स्वतंत्रता होती या वहाँ विपक्षी राजनीतिक पार्टियाँ होती तो ऐसा होना शायद कठिन था। खबरों के मुक्त प्रवाह होने पर भी सरकार को अकाल की गंभीरता का पता चलता। जब अकाल अपने चरम पर था सरकार का आकलन था कि उसके पास करीब दस करोड़ टन का अतिरिक्त भंडार है। वास्तव में सरकार का अनुमान गलत साबित हुआ। सही खबरों के अभाव ने वास्तव में सरकार को दिग्भ्रमित ही किया और उसकी परिणति करोड़ों लोगों की मौत से हुई।

सेन के अनुसार 1950 के दशक के अंतिम वर्षों में चीन की सरकार द्वारा उठाए गए कदम (ग्रेट लीप फॉरवर्ड) बड़े पैमाने पर नाकामयाब रहे। पर वहाँ की सरकार ने उसे स्वीकार नहीं किया और अगले तीन वर्षों तक वही नीतियाँ जारी रही। अकाल जैसी भयंकर विपदा के समय भी सरकार की कोई आलोचना नहीं हुई। इसकी मुख्य वजह मीडिया पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण था जबकि वहाँ विपक्षी राजनीतिक पार्टी का अस्तित्व ही नहीं था।

सेन की प्रकाशित कृतियों में खाद्यान्न, अकाल और भूख के अलावा आधुनिक प्रणाली विज्ञान, सामाजिक विकल्प सिद्धांत, कल्याणकारी अर्थशास्त्र एवं लैंगिक भेदभाव, पूंजी विकास एवं वितरण आदि मुद्दों पर भी व्यापक रूप से जोर दिया गया है। सेन ने 1950 के बाद की भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीय समुदाय से संबंधित शोध में भी सक्रिय रूप

से भाग लिया है। भारत के 50वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर एक आलेख में सेन ने लिखा था कि स्वतंत्रता के बाद के 50 वर्षों में शायद भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि तमाम खतरों के बावजूद राजनीतिक लोकतंत्र को बरकरार रखना रहा है। इस संबंध में उनका मानना है कि उसे मात्र एक उपलब्धि के रूप में न देखकर इसका उपयोग सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए किया जाना चाहिए।

भारत की सबसे बड़ी असफलता के बारे में उनका मानना है कि सामाजिक असमानता सबसे बड़ी नाकामयाबी रही है और इसका प्रभाव लोगों के रहन-सहन के स्तर और गुणवत्ता में प्रत्यक्षत: दिखता है, जबकि परोक्ष रूप से यह लोगों को हासिल होने वाले आर्थिक अवसरों में कमी करता है। इस संबंध में वह अशिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, भूमि सुधार का अभाव, ग्रामीण क्षेत्रों में लघु ऋण हासिल करने की मुश्किलों की चर्चा करते हैं। इसके साथ ही वह लैंगिक भेदभाव पर भी प्रमुखता से चर्चा करते हैं। उनका मानना है कि स्त्री और पुरुषों के बीच भेदभाव ने भारत में सामाजिक असमानता की समस्या को और गंभीर बना दिया है।

वास्तव में सेन द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा कुछ पृष्ठों में कर पाना एक दुरूह कार्य है। लेकिन इतना अवश्य है कि अगर विकासशील देशों की सरकारें उनके विचारों से फायदा उठाती हैं और अपनी नीतियों में उन पर अमल करती हैं तो कोई कारण नहीं है कि उनके देश की अर्थव्यवस्था का समग्र विकास नहीं हो।

❑❑❑



# संचार टेक्नोलॉजी

● गौरीशंकर रैणा

संचार के क्षेत्र में टेक्नोलॉजी तेजी से बदल रही है। विशेष उपकरणों और विशेष तकनीक के कारण जन-संचार की परिभाषा ही बदलने लग गई है। आज से कुछ वर्ष पूर्व जहाँ प्रेस का मतलब था केवल समाचारपत्र और पत्रिकाएँ, वहीं आज अखबारों के इलेक्ट्रॉनिक संस्करण उपलब्ध होने लगे हैं।

टेलीविजन के क्षेत्र में भी क्रांति आई है। एक दशक पूर्व टेलीविजन का मतलब था स्थानीय केंद्र से कार्यक्रम का प्रसारण। 1990 ई० में केबल आया और कुछ ही वर्षों में कई टेलीविजन चैनलों के कार्यक्रम देखे जाने लगे। परंतु आज इस के द्वारा दोतरफा संचार संभव हो गया हैं। दर्शक अपने प्रश्न सीधे प्रसारण केंद्र तक भेजकर शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के बारे में बात कर पाते हैं। नई टेक्नोलॉजी के कारण आज के व्यक्ति के पास विकल्प है कि वह संचार माध्यमों से अपना विषय स्वयं चुन सके।

फाइबर ऑपटिक्स द्वारा भी संचार संभव हो गया है। फाइबर की महीन तार में प्रवाहित प्रकाश तरंगें एक साथ कई टी० वी० चैनलों के कार्यक्रम, टेलीफोन व कंप्यूटर डाटा का संचार करने में सक्षम हैं। इस टेक्नोलॉजी द्वारा दोतरफा संचार और भी सहज हो गया है। कोई प्रसारण केंद्र यदि

● 169-बी, पॉकेट ए.जी. 1, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

किसी शिक्षा के कार्यक्रम में किसी प्रश्न का उत्तर मांगता है तो विशेषज्ञ द्वारा उत्तर की जांच उस के अपने निजी कंप्यूटर पर संभव है और सही उत्तर पूछने वाले के निजी कंप्यूटर (पी० सी०) पर प्रेषित किया जा सकता है। माइक्रोवेव प्रसारण की टेक्नोलॉजी में ऐसा संभव ही नहीं था।

आज सैटेलाइट प्रसारण टेक्नोलॉजी के कारण माइक्रोवेव पीछे रह गया है। सैटेलाइट टेक्नोलॉजी द्वारा जहाँ प्रसारण केंद्र/चैनल विभिन्न क्षेत्रों तक अपने कार्यक्रम भेज पाते हैं वहीं अब डी० टी० एच० (डायरेक्ट टू होम) द्वारा कार्यक्रम सीधे दर्शक के घर भेजे जा सकते हैं। डी० टी० एच० द्वारा कार्यक्रम प्राप्त करने के लिए न तो किसी केबल की ही आवश्यकता होगी और न किसी ऐंटीना की ही। घर में लगे एक छोटे से डिश के द्वारा कार्यक्रम देखे जा सकते हैं।

उधर ऑन-लाइन समाचारपत्रों के पाठकों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। बड़े शहरों, जैसे - दिल्ली, मुंबई, आदि में जहाँ तेज़ रफ्तार जिंदगी सुबह का अखबार भी ठीक से नहीं पढ़ने देती, वहाँ लोग अपनी सुविधानुसार ऑन-लाइन समाचार-पत्र से खबरें पढ़ लेते हैं। न केवल दैनिक समाचारपत्र, बल्कि पत्रिकाएँ भी ऑन-लाइन उपलब्ध होने लगी हैं।

हाई डेफिनिशन टेलीविजन और डिजिटल टेलीविजन द्वारा अब प्रसारण बेहतर हो गया है। हाई डेफिनिशन टेलीविजन में स्कैन होने वाले चित्रों की स्कैन-क्षमता बढ़ जाने के कारण टेलीविजन-स्क्रीन बड़े होने लगे हैं और बाधा मुक्त चित्र दिखने लगे हैं। इसी प्रकार डिजिटल टेक्नोलॉजी में माइक्रो-प्रोसेसिंग द्वारा प्रसारित चित्रों की धुँधलाहट समाप्त हो गई है। अब चित्र अवांछित प्रतिबिंब (घोस्ट) के बिना दिखाई देते हैं।

इधर जहां स्टीरियो रेडियो का आगमन हो चुका है वहीं स्टीरियो टेलीफोन की संभावनाओं पर भी विचार हो रहा है। आज किसी भी कार में लगे कार-रेडियो पर एफ-एम के तीन चार स्टेशन तो उपलब्ध रहते ही हैं। आने वाले दिनों में टेलीविजन के कार्यक्रमों में भी स्टीरियो ध्वनि का आनंद लिया जा सकता है।

टेलीकॉन्फरेंसिंग, संचार प्रणाली की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। जिसके द्वारा विभिन्न स्थानों/शहरों में बैठे इग्जेक्यूटिव फोन मीटिंग के माध्यम से बड़े-बड़े निर्णय लेते हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन ने



अंतर्राष्ट्रीय स्तर की बैठकों को सीधे प्रसारित करने के साथ ही ''रेडियोब्रिज'' तथा ''टेली ब्रिज'' कार्यक्रम संचालित किए हैं जिन में विश्व के विभिन्न नेताओं ने अपने देश के स्टूडियो से बोलते हुए अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लिया है। इस स्तर की कॉन्फरेंस में भी सैटेलाइट तकनीक को ही प्रयोग में लाया गया है। छोटे स्तर की कॉन्फरेंसिंग में पिक्चर फोन तकनीक को प्रयोग में लाया जाता है जिस में वीडियो कैमरे की सहायता से सभा व सभा में उपस्थित व्यक्तियों के वक्तव्य प्रसारित होते हैं तथा दूसरी सभा में लिए गए चित्र सभा भवन में लगे बड़े हाई-डेफिनिशन-स्क्रीन पर दिखाए जाते हैं।

टेलीविजन कार्यक्रमों को सीमित क्षेत्र में प्रदर्शित करने के उद्देश्य से एल० पी० टी० ( लो पावर) ट्रांसमीटर्स के उपयोग ने भी संचार प्रक्रिया को बहुस्तरीय बनाया है। भारत में इस समय 739 एल० पी० टी० है जो क्षेत्रीय भाषाओं में क्षेत्र की संस्कृति, भाषा तथा स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखकर प्रतिदिन कृषि, स्वास्थ्य एवं लोक संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। ऐसे कार्यक्रम स्थानीय केंद्रों में निर्मित होकर ''नैरो-कास्टिंग'' के माध्यम से सीमित क्षेत्र में प्रसारित होते हैं।

स्पष्ट है कि नई टेक्नोलॉजी ने संचार प्रक्रिया को सुगम बनाया है, किंतु विषय का महत्व आज भी सर्वोपरि है। केबल, इंटरनेट, सैटेलाइट, एल० पी० टी०, माइक्रोवेव, टेलीफोन, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें अथवा फिल्में इन सभी में विषय महत्वपूर्ण है। वह संदेश महत्वपूर्ण है जो भेजा जाता है, जिसे दर्शक, श्रोता या पाठक प्राप्त करता है।

अंबर्तो इको अपने लेख ''द मल्टिप्लिकेशन ऑफ द मीडिया'' में लिखते हैं कि जन-संचार के माध्यम रेडियो और टेलीविजन अनेक अनियंत्रित संदेश भेजते हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा और धारणा के अनुसार रिमोट-कंट्रोल द्वारा प्रयोग में लाता है।

टेक्नोलॉजी के विस्तार ने नए-नए उपकरण तो उपलब्ध कराए हैं किंतु ये सभी उपकरण बेजान हैं जब तक कि इनके द्वारा संदेश संचारित न हो, तरंगें प्रवाहित न हों।

आम तौर से कहा जाता है कि संचार माध्यम लोगों को राजनीतिक जानकारी देते हैं, उन्हें राष्ट्रनिर्माण के कार्यों में सहभागी होने के लिए

प्रेरित करते हैं, उन्हें अपनी परंपरा का परिचय देते हैं, विश्वभर की घटनाओं की सूचना देते हैं। परंतु संचार की इस प्रक्रिया में विचार और धारणा में जो बदलाव आने लगता है वह अनियंत्रित होता है। क्योंकि संदेश को प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर ही उस संदेश को व्याख्यायित करता है। तो फिर जनसंचार क्या है? समाचार कक्ष में लिखी जाने वाली खबर, टेलीविजन पर दर्शाया जाने वाला सोप, प्रेक्षागृह में दिखाई जाने वाली फिल्म, इंटरनेट से संचारित सूचनाएँ, विज्ञापन, प्रकाशित हो रही पुस्तकें, रंगमंच पर दिखाया जाने वाला नाटक, अथवा कोई पारंपरिक लोकनृत्य जो सैटेलाइट और केबल की दुनिया से दूर कहीं छोटेसे देहात में ग्रामीणों का मनोरंजन करता है?

वस्तुत: वे चित्र, जो किसी चित्रप्रदर्शनी में कई-कई दिनों तक प्रदर्शित होते रहते हैं और कला प्रेमी उन्हें अपने सौंदर्य बोध के आधार पर सराहते हैं, भी संचार करते हैं। किंतु यह संचार एक सीमित वर्ग तक सीमित होता है जो एक विशाल दर्शक-समूह का केवल एक छोटासा हिस्सा होता है।

संचार माध्यमों द्वारा किसी भी संदेश को प्राप्त करने वाली जनसंख्या की विशिष्टता एवं लक्षण जैसे - आयु, लिंग, शिक्षा, आय व सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर ही विशेषज्ञ या प्रोफेशनल जनसंचार की नीति तय करते हैं। यदि किसी नई अंतरराष्ट्रीय विमान सेवा का विज्ञापन टेलीविजन अथवा रेडियो से प्रसारित करना हो तो यह संदेश केवल एक निर्दिष्ट दर्शक - श्रोता वर्ग की ओर ही केंद्रित होगा। ज़ाहिर है ऐसा संदेश किसी छोटे कस्बे, जैसे - नजीबाबाद के रेडियो स्टेशन से प्रसारित नहीं किया जाएगा। इस के विपरीत यदि इसी विज्ञापन को ले कर किसी नेटवर्क के या सैटेलाइट चैनल के कार्यालय में चला जाए तो वहाँ तुरंत स्वीकार होगा और प्रसारित होने लगेगा। इसी प्रकार स्थानीय समाचारपत्र से भले ही माचिस की डिबिया का विज्ञापन प्रकाशित हो परंतु विमान सेवा का संदेश उस दैनिक से प्रकाशित नहीं होगा। किसी राष्ट्रीय स्तर के समाचारपत्र के लिए ऐसा विज्ञापन सहर्ष स्वीकारा जाएगा क्योंकि वहाँ के संपादक व प्रोफेशनल अपने पाठकों के विशिष्ट लक्ष्यों से परिचित होते हैं।



दरअसल संचार एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें संदेश प्राप्त करने वाले का व्यवहार संदेश को प्रभावित करता है। एक संदेश (विज्ञापन) जब दर्शक, श्रोता या पाठक तक पहुँचता है तो उस समय उनकी अपनी प्रतिक्रिया के अतिरिक्त परिवार की, मित्रों व समाज की प्रतिक्रिया भी संदेश को प्रभावित करती है। यदि परिवार के लोग और मित्र यह कहते हैं कि संदेश उपयोगी नहीं है तो प्राप्तकर्ता भी उसे अनुपयोगी मानने लगता है। किंतु यदि उसकी अपनी धारणा व विचार दृढ़ हैं तो वह अपने मित्रों, सहयोगियों की बात को मानने से इंकार भी कर सकता है। इस प्रकार दर्शक, श्रोता व पाठक विभिन्न संदेश विभिन्न तरीकों से व्याख्यायित करते हैं। संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित एक ही संदेश प्राप्त करने वालों के व्यक्तित्व, स्वभाव तथा व्यक्ति भिन्नता के कारण विभिन्न तरीकों से समझा जाता है। एक ही जनसमूह की ओर निर्दिष्ट वह संदेश दर्शक/श्रोता/पाठक की उन्मुक्तता, ज्ञान और धारण शक्ति पर निर्भर करता है कि वह विषय को कैसे, किस रूप में और कितना समझ पाता है।

अंबर्तो इको ''द मल्टिप्लिकेशन ऑफ द मीडिया'' में लिखते हैं कि यदि किसी डिज़ाइनर द्वारा नई कमीज़ बनाई गई है जिसे कोई टी० वी० डायरेक्टर अपने अभिनेता को युवा पात्र के रूप में पहनाता है तो जब यह प्रदर्शन हो रहा होता है तो क्या अभिनेता का या उस कमीज़ (पोलो शर्ट) का प्रचार हो रहा होता है? संदेश में छिपी यह शक्ति नियंत्रण में नहीं है। हालांकि संकल्पित कुछ भी नहीं मगर फिर भी देखने वाला डिज़ाइनर, कमीज़ से या फिर अभिनेता की बात से प्रभावित हो सकता है।

विश्व को ''ग्लोबल विलेज़'' का नाम देने वाले मीडिया गुरु, मार्शल मेक्लुहन ने जब इस उक्ति का प्रयोग किया तब सैटेलाइट संचार प्रणाली विकसित हो चुकी थी और आज जब अंतरराष्ट्रीय स्तर की किसी भी घटना अथवा खेल जैसे ओलंपिक्स आदि को सारा विश्व एक साथ बैठकर देखता है तो सामान्य सी बात लगती है। के० पी० एम० जी० (KPMG) रिपोर्ट 2003 के अनुसार आज भारत में टेलीविजन के 300 चैनल हैं जो 2002 में 1110 खरब रुपए का व्यापार कर चुके थे। 1991 तक देश में केवल एक ही चैनल 'दूरदर्शन' उपलब्ध था। तब उस एक चैनल से समाचार, नाटक, चर्चाएँ, शैक्षिक कार्यक्रम, कृषि तथा ग्रामीण

कार्यक्रम दिखाए जाते थे जिनको विभिन्न दर्शक अपनी इंद्रियग्राह्यता के आधार पर, अपनी इच्छा के अनुसार देखते थे। आज व्यक्ति अपनी शैक्षिक, सामाजिक, आयु तथा आय के प्रभाव में विभिन्न चैनल देखता है। बड़े शहरों के कॉलेजों में पढ़ने वाले युवा इंटरनेट द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं और एम० टी० वी० देखते हैं। उच्च मध्यम वर्ग के दर्शक ''फ्रेंड्स'' जैसा सोप देखते हैं। मध्यम-वर्ग की महिलाएँ ''क्योंकि सास भी कभी बहू थी'' देखती हैं और छोटे कस्बों में व बिना केबल के स्थानों पर दर्शक एल० पी० टी० से प्रसारित किसी भी धारावाहिक को देख संतुष्ट हो जाते हैं। इन सभी कार्यक्रमों द्वारा जो संदेश जाते हैं उन्हें विभिन्न दर्शक वर्ग, विभिन्न स्थितियों में अपने अलग-अलग स्वभाव के आधार पर ग्रहण करते हैं।

टेलीविजन की तरह ही फ़िल्में भी जन-संचार का एक प्रमुख माध्यम हैं। फिल्में हर भाषा में बनती हैं और कई विषयों पर बनती हैं। इन्हें युवा, स्त्री पुरुष, वृद्ध, बच्चे व समाज के कई वर्ग देखते हैं। किंतु अलग-अलग समूह के लिए एक ही फिल्म के भिन्न-भिन्न अर्थ हो सकते हैं। एल० एम० सैवेरी तथा जे० पॉल कैरीको फिल्मों के दर्शक-समुदाय को तीन वर्गों में बांटते हैं :- ''हाई ब्रो'' (High brow) ''मिडल ब्रो'' (Middle brow) तथा ''लो ब्रो'' (Low brow)। उनका मानना है कि प्रत्येक फिल्म विभिन्न दर्शकों के लिए अलग-अलग रूप में सामने आती है। कुछ दर्शक फिल्म को कलात्मक कृति के रूप में देखकर बौद्धिक तृप्ति प्राप्त करते हैं तो दूसरा दर्शक वर्ग इसलिए फिल्म देखता है कि उसे तेज रफ्तार जिंदगी से कुछ समय के लिए राहत मिलती है और उसका मनोरंजन होता है। पहला वर्ग यदि ''हाई ब्रो'' है तो दूसरा ''लो ब्रो'' है। परंतु एक तीसरा वर्ग भी है जो इन दोनों के बीच का है। वह अच्छी और बुरी फिल्म में अंतर जानता है। वह ''मिडल ब्रों'' वर्ग का दर्शक है। सैवेरी तथा कैरीको मानते हैं कि इन तीनों के अतिरिक्त एक वर्ग नई युवा पीढ़ी का भी है जो फिल्में की तकनीक का अध्ययन कर फिल्मों को बेहतर ढंग से समझने की क्षमता रखता है। इस वर्ग को उन्होंने ''पोस्ट ब्रो'' (Post brow) अर्थात् उत्तर आधुनिक दर्शक वर्ग माना है।



इस प्रकार दर्शक, श्रोता व पाठक किसी न किसी रूप में संचार माध्यमों द्वारा संप्रेषित कार्यक्रमों संदेशों से तृप्ति पाते है। टेलीविजन का सोप जहाँ परिवार जनों को रोल मॉडल देता हैं वहीं रेडियो जानकारी देता है और समाचार-पत्र सूचनाएँ प्रदान करते हैं।

## संचार व्यवस्था

जनसंचार का स्वरूप संचार के उन अन्य प्रकारों जैसा ही है जिनके द्वारा हम संप्रेषण करते हैं। इस में संदेश, प्रभाव, माध्यम, अनुक्रिया, परिणाम और संदर्भ शामिल रहते हैं। किंतु यह पारस्परिक संचार अथवा स्वगतसंचार से भिन्न होता है।

जनसंचार उन तकनीकी योजनाओं पर निर्भर रहता है जिनके द्वारा संदेशों को तीव्र गति से दूर-दूर तक कई दिशाओं में छितराए दर्शकों व श्रोताओं तक भेजा जाता है तथा अलग-अलग माध्यम संदेश को प्रस्तुत करने के तरीके में अपने स्वभाव के अनुसार बदलाव लाते हैं।

जनसंचार में एक संदेश को संदेश-प्रेषक लाखों-करोड़ों दर्शकों व श्रोताओं तक भेजता है। ये ऐसे संदेश-प्राप्तकर्ता होते हैं जिन्हें संदेश-प्रेषक स्वयं नहीं जानता है। इस कारण विस्तृत दर्शक वर्ग तथा उनकी अपरिचितता विभिन्न प्रकार के दर्शकों के स्वभाव से प्रेषक को अनजान रखती है। प्रेषक के पास भले ही यह जानकारी हो कि संदेश प्राप्त करने वाले लोग कहाँ के हैं परंतु वह यह नहीं जानता कि वे कौन हैं। और फिर संदेशप्रेषक व्यक्ति न होकर संस्थाएँ, चैनल या नेटवर्क होते हैं क्योंकि जनसंचार में संदेश एक व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि एक समूह द्वारा भेजा जाता है।

इस के अतिरिक्त जन-संचार में संदेश-प्रेषण की प्रक्रिया में इसके ''गेटकीपर्स'' (द्वारपाल) संदेश को नियंत्रित करते हैं, जबकि पारस्परिक संचार में एक ही व्यक्ति संदेश को नियंत्रित करता है। जनसंचार में संपादक, टी० वी० निर्देशक, फिल्म निर्देशक व रेडियो प्रोड्यूसर, जो संस्थाओं के लिए काम करते हैं, इन संदेशों की व्याख्या करते हैं तथा संचार-प्रेषण में द्वारपाल का काम करते हैं। ये द्वारपाल (गेटकीपर्स) भेजे जाने वाले संदेश को या तो सीमित करते हैं या बढ़ाते हैं या व्यवस्थित करते हैं।

जन-संचार में अनुक्रिया देरी से प्राप्त होती है जबकि पारस्परिक संचार में जिस व्यक्ति के साथ बात हो रही होती है उसके हाव-भाव से स्पष्ट होता है कि वह संदेश को किस रूप में प्राप्त कर रहा है। अनुक्रिया देरी से प्राप्त होने के कारण प्रेषक बहुत समय तक यह जान ही नहीं पाता कि उसके संदेश का क्या परिणाम रहा।

स्वगत-संचार में व्यक्ति अपने मन में उठ रहे विचारों तथा भावों के आधार पर निर्णय करता है। उसके मस्तिष्क में प्राप्त संदेश पर उसने कैसी प्रतिक्रिया प्रकट करनी है यह उसके द्वारा उसी क्षण प्राप्त अनुक्रिया के आधार पर वह निधारित करता है। यदि वह व्यक्ति कोई प्राकृतिक दृश्य देख रहा है जहाँ एक झरना भी बह रहा हो तो वहाँ उसकी ऑखें व कान संदेश प्रेषक बनते हैं और अंत : प्रेरणा संदेश बनती है जो नसों के माध्यम से मस्तिष्क में प्राप्त होता है। यदि उसी समय वहाँ से धूल उड़ाती एक बस गुज़र जाए और दृश्य धुंधला दिखाई देने लगे तो उस समय मांसपेशियों को तुरंत अनुक्रिया प्राप्त होगी और वह व्यक्ति वहाँ से हट जाएगा। अपने ही आप से संप्रेषण करने वाले व्यक्ति की संचार-प्रक्रिया में वहाँ से गुजर जाने वाली बस ने व्यवधान डाला जिसे संचार विशेषज्ञों ने ''शोर'' की संज्ञा दी है। यह ''शोर'' जहाँ स्वगत - संचार व पारस्परिक संचार को प्रभावित करता है वहीं जन-संचार को भी प्रभावित करता है।

पारस्परिक संचार के दौरान जब दो व्यक्तियों की बात हो रही होती है और दूसरा कोई प्रतिक्रिया देता है तो वह अपने अनुभवों के आधार पर प्रतिक्रिया प्रकट कर रहा होता है। मीडिया विशेषज्ञ, विलबर श्रैम ने अपनी पुस्तक 'इफेक्ट्स ऑफ मास कम्यूनिकेशन' में ऐसी स्थिति को ''अनुभव क्षेत्र'' कहा है। उनके अनुसार परिवेश, ज्ञान, आस्था तथा अन्य जानकारियाँ संदेश के प्राप्तकर्ता का अनुभव-क्षेत्र निर्मित करते हैं।

पारस्परिक संचार में जब कहने वाला कह रहा होता है और सुनने वाला कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहा होता है तब कहने वाला (प्रेषक), उसकी बात (संदेश), सुनने वाला (प्राप्तकर्ता) तथा उसकी कोई प्रतिक्रिया न देना (अनुक्रिया) हो जाते हैं।

जन-संचार में अनुक्रिया देरी से प्राप्त होती है और संदेश-प्रेषक यह जान ही नहीं पाता कि उसके संदेश को किस रूप में ग्रहण किया गया है।

यदि हम स्वगत-संचार, पारस्परिक संचार और जन-संचार में अंतर करें तो प्रेषक – ज्ञानेंद्रियाँ होंगी, कहने वाला व्यक्ति तथा अभिनेता अथवा समाचार वाचक होंगे। संदेश – अंत:प्रेरणा, बातचीत, तथा जन-समूह होंगे।

इन सभी संदेशों को भेजने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है और जन-संचार में ये जन-माध्यम कोई संस्था, रेडियो, टेलीविजन या फिल्म हो जाते हैं जहाँ ''द्वारपाल'' होते हैं जो संदेशों की व्याख्या करते हैं।

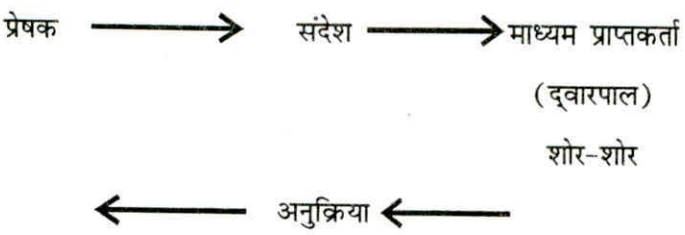


संदेश सहस्त्रों वर्षों से किस्से, कहानियों और कथाओं द्वारा भेजे जाते रहे हैं। पारस्परिक संचार के ऐसे संप्रेषण में प्रेषक व प्राप्तकर्ता आमने सामने बैठे होते हैं और एक-दूसरे के हाव-भावों को देखते हुए संदेश का अर्थ ग्रहण करते हैं। ऐसी सभाएँ विशेष अवसरों पर आयोजित होती हैं, जैसे - किसी पुराण की कथा मंदिर के प्रांगण में कथा-वाचक द्वारा एक निश्चित समय पर सुनाई जाती है, या किसी ग्रामीण क्षेत्र की चौपाल में कोई लोक-नाटक एक निश्चित समय पर ही प्रदर्शित होता है। किंतु आज समय और दिक् (स्पेस) के बंधन से मुक्त संदेश कभी भी, कहीं भी, किसी भी स्थान से भेजा जा सकता है तथा कहीं भी प्राप्त किया जा सकता है। यह इलेक्ट्रॉनिक-क्रांति के कारण संभव हुआ है।

इलेक्ट्रॉनिक क्रांति की एक और अच्छी बात यह है कि इसने औद्योगिक क्रांति की तरह लोगों को उखाड़ा नहीं बल्कि इसने आधुनिक समाज को एक समूह में बाँधा है।

संचार-व्यवस्था के प्रभाव और परिणाम के महत्व को जानते हुए मीडिया अनुसंधान कर्ताओं ने कई अध्ययन किए हैं। कल्टिवेशन सिद्धांत (cultivation theory) के अंतर्गत इस प्रकार का पहला अध्ययन टेम्पल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉर्ज गर्बनर ने दिया जिसे ग्रॉस ने 1976 में प्रकाशित किया था। ''कल्टिवेशन'' विश्लेषकों के इस प्रकाशन के पश्चात आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, इंग्लैंड, रूस, दक्षिण-कोरिया तथा अन्य देशों में दर्शकों पर जन-संचार के माध्यमों के प्रभाव व परिणाम से संबंधित अनुसंधान प्रारंभ हुए।

''कल्टिवेशन'' सिद्धांत के अंतर्गत स्थिर, लगातार प्रसारित, सर्वत्र व्याप्त, ध्यान से न हटने वाले चित्रों तथा विचारधाराओं पर अनुसंधान हुआ है। यह सिद्धांत टेलीविजन व संचार माध्यमों को संदेश तंत्र मानता है एक ऐसा तंत्र जो अपने दर्शकों के लिए लगातार विचारधाराएँ प्रसारित करता है और सर्वत्र उपलब्ध रहता है। वैसे तो कल्टिवेशन अनुसंधान कर्ताओं की क्रियाविधि का केंद्र टेलीविजन रहा है, परंतु यह सिद्धांत मीडिया के अन्य क्षेत्रों में भी लागू हुआ है। दरअसल इस सिद्धांत का मकसद जन-समूह मीडिया संदेशों व सूचनाओं पर उनके विश्वास को परखना रहा है। इस से पूर्व ''बुलिट'' सिद्धांत (bullet theory) व - ''समूह के अंतर्गत समूह'' (mass within a mass) के सिद्धांत के अंतर्गत अनुसंधान हो चुका था।

स्वगत-संचार, पारस्परिक संचार व जन-संचार जैसे तीन प्रकार के संचार के अनुसंधान के लिए प्रारंभ से ही अलग-अलग तरीके अपनाए गए हैं। स्वगत-संचार के अध्ययन के लिए जहाँ शरीरक्रिया-विज्ञान द्वारा मस्तिष्क की तरंगों व त्वचा की अनुक्रिया जानने के लिए सूक्ष्मग्राही इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लगाए जाते रहे हैं, वहीं पारस्परिक संचार के विश्लेषण के लिए नियंत्रित प्रयोगशाला को उपयोग में लाया गया है। जन-संचार के अनुसंधान के लिए नमूने के तौर पर चुने गए दर्शकसमूह के साथ साक्षात्कार की पद्धति अपनाई गई है। आकाशवाणी और



दूरदर्शन के दर्शक अनुसंधान एकांश इसी पद्धति के आधार पर किसी कार्यक्रम के प्रति दर्शकों की प्रतिक्रिया की परख करते हैं।

सर्वेक्षण के तरीकों में अनुसंधानकर्ताओं को संदेश की समय सीमा, उनके प्रभाव, संदेशों को दर्शाए जाने और सर्वेक्षण के बीच का समयांतराल जैसे तथ्यों से जूझना पड़ता है। लेकिन इसके बावजूद ये सर्वेक्षण महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इतने सारे टेलीविजन चैनल, कई समाचारपत्र, पत्रिकाएँ व फिल्में दर्शकों, पाठकों व श्रोताओं को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। उसी के फलस्वरूप कोई सोप लोकप्रिय होता है और कोई चलता ही नहीं है। कोई पत्रिका लाखों की संख्या में छपती है तो किसी की दस-बीस प्रतियाँ भी नहीं बिक पाती हैं। सर्वेक्षण के आधार पर ही विज्ञापन प्राप्त किए जाते हैं। टेलीविजन चैनल व पत्र-पत्रिकाए विज्ञापनों पर निर्भर रहते हैं। उनका 50 से 70 प्रतिशत बजट इसी से संचालित होता है। यह निर्भरता एकतरफा नहीं होती बल्कि विज्ञापन कर्ता को भी अपने संदेश को लोगों तक पहुँचाने के लिए जन-माध्यमों पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः दोनों ही एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। दरअसल विज्ञापन कर्ता का संदेश अनगिनत लोगों तक पहुँचाने के लिए जन-माध्यम आवश्यक संयोजक बनते हैं जो विज्ञापनकर्ता और दर्शक को जोड़ते हैं। इस प्रकार संदेश, सूचना का प्राप्तकर्ता और विज्ञापन देने वाला जन-संचार की शृंखला के अंग बन जाते हैं।

प्रत्येक जन-माध्यम की अपनी विशेषताएँ होती हैं तथा उसकी पहुँच अपने दर्शक-समूह तक होती है। उसी के आधार पर विज्ञापनों का प्रसारण तय होता है। शेम्पू का विज्ञापन सोप ऑपेरा (धारावाहिक) के साथ तो नई कार का विज्ञापन अंग्रेजी समाचारों के साथ प्रसारित होता है क्योंकि दोनों का दर्शक-समूह भिन्न होता है। इसी कारण जब मीडिया-कर्मी (द्वारपाल) किसी संदेश की कार्यप्रणाली निधारित करते हैं तो दर्शक समूह को ध्यान में रखते हैं। प्रत्येक दर्शक-समूह की अपनी आवश्यकतएँ होती हैं। अस्तित्व में रहने की आवश्यकता, सुरक्षा, सम्मान और स्वयं यथार्थ जानने की आवश्यकता। इन्हीं के अनुसार सर्वेक्षण संचालित होता है और फिर संदेश के प्रत्युत्तर के आधार पर नए संदेश निर्मित होते हैं और प्रसारित होते रहते हैं।

संचार की इस व्यवस्था में संकेतों द्वारा भी संप्रेषण होता है। शब्दों के बजाय भावों व दैहिक-भाषा को प्रयोग में लाया जाता है। ऐसे संचार का महत्व वहां बढ़ जाता है जहाँ शब्दों का प्रयोग संभव नहीं होता। इस प्रकार चेहरे के भावों तथा दैहिक भाषा द्वारा 50 प्रतिशत संदेशों का संप्रेषण संभव है। यदि कोई व्यक्ति शोक, उत्साह, क्रोध, भय, विस्मय आदि की स्थिति में हो तो इसका अनुमान दूसरा व्यक्ति उसके चेहरे पर उभरते भावों से लगा सकता है। संकेतों की ऐसी भाषा में प्रतीक महत्वपूर्ण होते हैं। संचार में संकेत के महत्व को पहचानते हुए सांकेतिक भाषा पर चार्ल्स साउंडर्स पिअर्स की लिखी पुस्तक 1916 में प्रकाशित की गई थी। इसके सिद्धांत फिल्म, रंगमंच व अन्य माध्यमों पर लागू किए गए जिनका उद्देश्य यह जानना था कि किसी संकेत का अर्थ देखने वाला कैसे समझता है और वह अर्थ कैसे प्रेषित होता है :

''एक संकेत धारणा और बिंब का संयोजन होता है। इनको अर्थ-विचार और अर्थ कहा जा सकता है। क्योंकि इन दोनों में एक संबंध है। इनके द्वारा हम मतलब को समझ पाते हैं। जैसे तराजू का संकेत न्याय का प्रतीक है। इस का अर्थ बदला नहीं जा सकता। अब जब अर्थ-विचार और अर्थ का संबंध अटूट है तो इस कारण व्यक्ति की धारणा का मतलब प्रतीक के माध्यम से समझना पड़ता है। अत: संदेश प्रेषित करने की पद्धति संकेत को समझने में सहायक सिद्ध होती है।''

संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग प्रश्नोत्तरी (क्विज) कार्यक्रमों, सोप ऑपेरा, नाटकों, फिल्मों आदि में होता रहा है और इनके द्वारा अर्थ समझने के पश्चात दर्शक संतुष्टि पाते हैं।

इस प्रकार संचार-पद्धति का उपयोग व्यक्ति को स्वयं से, परिवार से, मित्रों से, देश से तथा दुनिया से जोड़ता है और व्यक्ति ऐसा संबंध स्थापित करने से संतुष्टि पाता है। वह अलग-अलग संबंधों को स्थापित करने के लिए अलग-अलग मीडिया का प्रयोग करता है। संचार टेक्नोलॉजी को प्रयोग में लाता है।

❑❑❑



# जीव-जंतुओं का विचित्र संसार

● कुलदीप कुमार

भारत, श्रीलंका, जापान तथा सोवियत रूस के घने जंगलों में एक विचित्र प्रकार की गिलहरी पाई जाती है जो उड़ती है। यह पक्षियों के समान तो नहीं उड़ पाती, किंतु एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक लगभग तीस-चालीस मीटर की दूरी हवा में लहराती हुई पार कर लेती है।

समुद्री घोड़ा एक प्रकार की समुद्री मछली है। इसका सिर घोड़े के समान होता है। समुद्री घोड़ा सभी महासागरों में पाया जाता है तथा पानी में सीधा तैरता है।

तिब्बत के पहाड़ों में बैल जैसा जानवर 'याक' पाया जाता है। इसकी पूँछ से चँवर बनती है जो मंदिरों-गुरुद्वारों में उपयोग में लाई जाती है।

एल्बेट्रॉस सबसे बड़ा समुद्री पक्षी है जिसे उड़ने के लिए तेज हवा की जरूरत पड़ती है, तथा वह उड़ने से पहले काफी दूरी तक जमीन पर दौड़ता है। एल्बेट्रॉस स्तनधारियों की तरह अपने बच्चों को दूध पिलाती है परंतु पक्षियों की तरह अंडे भी देती है।

बीवर पेड़ों को जल में गिराकर बाँध बनाते हैं तथा वहाँ रहते हैं। अत: इन्हें प्रकृति के सबसे कुशल इंजीनियर कहा जाता है। ये अपने तीखे दाँतों से पेड़ों को आसानी से काट कर गिरा देते हैं।

● एम-128, प्लॉट 29, रामकृष्ण विहार, पटपड़गंज, दिल्ली- 110092

बिल्ली अपना आधा समय सो कर बिताती है।

घोंघा लगातार तीन-चार साल तक सोता रहता है।

तितली के 12,000 आँखें होती हैं।

अंटार्कटिका का प्रतिनिधि पक्षी पेंग्विन पानी में पनडुब्बी से भी अधिक तेज रफ्तार से तैर सकता है।

अमरीका में पाया जाने वाला 'रैकून' नाम का जीव यदि पानी उपलब्ध हो तो अपना भोजन धोकर खाता है।

नर मच्छर कभी किसी को नहीं काटता, केवल मादा मच्छर ही काटती है। शिशु मच्छर पैदा होते ही पूरा मच्छर बन जाता है।

जंगली जानवरों में हाथी ही एकमात्र जीव है, जिसे सिर के बल खड़ा होना सिखाया जा सकता है।

ऊदबिलाव ही ऐसा जंगली जानवर है जो अगर पानी में कूदे तो पानी की एक बूँद भी नहीं उछलती।

''स्टार फिश'' नाम की मछली ही एक ऐसी मछली है, जिसकी प्रत्येक बाँह पर एक-एक आँख होती है।

'ब्लू ह्वेल' विश्व का सबसे बड़ा जीव है। यह स्तनपायी प्राणी है। तथा गहरे सागर में पाया जाता है।

इसका वजन 150 टन तथा लंबाई तीस मीटर तक होती है। ब्लू ह्वेल तैरते हुए सोती है तथा आवश्यकता पड़ने पर पैंतीस किलोमीटर प्रति घंटा की गति से भाग सकती है।

मादा कस्तूरी के न सींग होते हैं, न दाँत।

जिराफ गूँगा जानवर है।

तोता जम्हाई लेने वाला एक मात्र पक्षी है।

दक्षिण यूरोप में विशालकाय बुल्क मकड़ी पाई जाती है। यह इतनी जहरीली होती है कि इसके काटने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

आस्ट्रेलिया के निर्जन वनों में एक विचित्र पक्षी पाया जाता है जिसे 'लापर बर्ड' कहते हैं। यह बहुत अच्छा नृत्य करता है तथा मनुष्य व अनेक पशु-पक्षियों की बोली की हूबहू नकल करता है।

कोबरा सांप का जहर इतना खतरनाक होता है कि उसके 1 ग्राम से 150 व्यक्ति मर सकते है।



कुत्ते के सूंघने की शक्ति मनुष्य से 6000 से 33000 गुना अधिक होती है जो उसकी नस्ल पर निर्भर है।

मक्खी की छलांग उसके शरीर की तुलना में 60 गुनी लंबी होती है। इस अनुपात से मनुष्य को 120 मीटर कूदना चाहिए।

तोता 60 तरह के शब्द बोल सकता है।

मैक्सिको का 'माट-माट' पक्षी शृंगार का बहुत शौकीन होता है। इसकी चोंच के एक हिस्से की बनावट कंघी की तरह होती है। यह अपनी पूंछ को चोंच से संवारता व बार-बार पीछे घूम कर देखता रहता है जब तक कि संतुष्ट नहीं हो जाता।

हिमालयन 'याक' के दूध का रंग गुलाबी होता है।

दुनिया का सर्वाधिक विशालकाय पक्षी शुतुरमुर्ग पत्थर भी खाता है जो उसके पेट में पाचक गोलियों का काम करते हैं।

नीलगिरि के जंगलों में एक गिरगिट पाया जाता है जिसकी जीभ उसके शरीर से भी लंबी होती है। इस का शरीर 45 सेंटीमीटर लंबा होता है परंतु उसकी जीभ 1.25 मीटर लंबी होती है।

कैंडोर पृथ्वी की सबसे बड़ी शिकारी चिड़िया है।

लामा ऐसा जानवर है जो गुस्से में होने पर शत्रु के मुँह पर थूक देता है।

कंगारू के अलावा 'ओपोसम' व 'कोआला' जानवरों के भी पेट पर थैलियाँ होती हैं जिनमें वे बच्चे पालते हैं।

गिद्ध सबसे लंबी आयु का पक्षी है।

पश्चिमी कोलंबिया में एक ऐसा मेंढक पाया जाता है, जिसकी त्वचा से एक ऐसा द्रव्य निकलता है जिसमें भयानक विष होता है। एक मेंढक की त्वचा में इतना विष होता है उससे दो हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो सकती है। अमेरिका के रेड इंडियन अपने तीरों की नोक पर इसी मेंढक के विष का लेप करते थे।

प्लेटीपस एक स्तनधारी जीव है। परंतु यह साँप जैसा जहरीला होता है।

लेमिंग एक चूहे जैसा जीव है जो नार्वे में पाए जाते हैं। ये जीव सामूहिक आत्महत्या करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

बीवर कुतरने वाले प्राणियों (कृंतकों में) सबसे बड़ा जीव है। खतरे के समय यह अपनी पूँछ पानी में थपथपाकर उस आवाज से अपने

साथियों को सावधान कर देता है।

मच्छर मुंह से आवाज न करके अपने पंखों की फड़फड़ाहट से 'भन-भन' आवाज निकालते हैं।

तिलचट्टा (कॉक्रोच) बिना भोजन के करीब 45 दिन तक जिंदा रह सकता है।

छिपकली कभी भी पानी नहीं पीती।

गुंजन पक्षी 'हमिंग बर्ड' संसार का सबसे छोटा पक्षी है।

जिराफ किसी भी तरह की आवाज नहीं निकाल सकते।

चींटी अपने वजन से 3 गुना अधिक वजन उठा सकती है।

हाथी मनुष्य की गंध 3000 फुट की दूरी से पहचान जाता है।

विद्युत् वाम 'इलेक्ट्रिक' ईल ऐसी मछली है जिसकी पूँछ में बिजली पैदा करने वाले अंग होते हैं।

आस्ट्रेलिया का 'लाफिंग जैक एस' पक्षी मनुष्य की भांति हँस सकता है।

अफ्रीका का 'कृष्ण सार मृग' पानी नहीं पीता।

पनामा देश में 'पनामा फ्रॉग' नामक एक मेंढक पाया जाता है, जो केवल साँप खाता है। यह मेंढक 20 से 30 किलोग्राम तक वजन का होता है व इसके सिर पर दो सींग होते हैं।

❑❑❑



4121 HRD/07—4A

# मुंडा जनजाति

● राजेंद्र कुमार पांडेय

मुंडा समुदाय मध्य भारत के प्रमुख समुदाय हैं। इनके गाँव दक्षिणी बिहार के पहाड़ी भागों में देखे जाते हैं प्रमुख रूप से राँची और गुमला के जिलों में। खुंटी तहसील के क्षेत्र प्रमुख रूप से इस समुदाय के लोगों से भरे हैं। पड़ोसी राज्यों, मध्य-प्रदेश और उड़ीसा, के कुछ जिलों में भी मुंडा लोगों के कुछ गाँव देखे जा सकते हैं। अभी कुछ समय पहले मुंडा लोग त्रिपुरा राज्य के चाय उत्पादन वाले क्षेत्रों में भी बस गए हैं। ये लोग पश्चिम बंगाल और असम में भी इसी तरह बसे हैं। ये काम करने वाले लोग हैं और चाय उत्पादित क्षेत्रों तेजपुर, शिबसरार (असम), जलपाईगुड़ी, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) में भी बसे हैं। वर्तमान समय में मुंडा लोग राष्ट्रनिर्माण के कई कार्यों में लगे हैं, जैसे- उद्योग, कृषि-कार्य, कारखानों, कार्यालयों, संस्थाओं और प्रतिष्ठानों में।

मुंडा लोग अधिकतर दक्षिण बिहार के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में बहादुरी के साथ जीवनयापन कर रहे हैं। जिस क्षेत्र में वे कई शताब्दियों से रह रहे हैं, वह पहाड़ और छोटी पहाड़ियों से भरा है। उस क्षेत्र के कुछ भाग हरे जंगलों से भरे हैं। वहाँ कुछ सुंदर नदी घाटियाँ हैं और

● 470, नीति खंड-3, इंदिरापुरम, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)



4121 HRD/07—4B

कुछ ऊँचे स्थान है जहाँ मुंडा लोग इधर-उधर फैले हुए हैं। यह क्षेत्र काफी समय तक सुहावना रहता है और गर्मी में काफी गर्म हो जाता है। जो ऊँचा स्थान है वह छोटा नागपुर का पठार कहलाता है, जिसे इन ग्रामीण लोगों के द्वारा अच्छी तरह खेती के काम में लिया जाता है और सुरक्षित है। यहाँ की मिट्टी और मौसम उनके मुख्य फसल के अनुकूल हैं, जैसे- चावल, मरूआ, कुछ दाल और तैलीय पदार्थ। ये फसलें वर्षा पर निर्भर होती हैं। जंगल और ऊँचे स्थानों में आम, केला और कई प्रकार के फल उपजाए जाते हैं। यह क्षेत्र कोएल, कारो और उनकी सहायक नदियों से भरा रहता है। नदियों में सुंदर पहाड़ी भाग और जल-प्रपात है।

## मुंडा समुदाय की भाषा

मुंडा लोगों की भाषा में 'मुँडा' शब्द का अर्थ होता है- ''गाँव का मुखिया''। मुंडा समुदाय अपने आपको 'होरो' या 'होरोको' कहते हैं। 'होरो' का अर्थ होता है- 'आदमी' 'होरोको' एक बहुवचन रूप है, अत: इसका अर्थ होता है- 'आदमी लोग'। मुंडा लोग जिस भाषा का बोलते है, उसे 'मुंडारी भाषा' भी कहते हैं। बहुत कुछ ऐसे भी समुदाय है जो मुंडारी तो बोलते हैं किंतु मुंडा लोगों से थोड़ा भिन्न हैं। ये समुदाय हैं- असुर, ,खखार, मुमजी, चेरो, कोरवा आदि। इनकी भाषा खासी भाषा के समान है जो पूर्वोत्तर भारत में बोली जाती है, जैसे- मेघालय, असम और उसके नजदीकी क्षेत्र। शोधकर्ताओं ने इस भाषा की समानता अंडमान और निकोबार की 'निकोबारी' भाषा से भी की है। यद्यपि ये भाषाएँ देश की अन्य भाषाओं से अलग हैं, फिर भी स्थानीय लोग जो वहाँ रहते हैं, उनकी भाषा से 'मुंडारी भाषा' में कुछ मिश्रण मिलता है। उदाहरण के तौर पर उनकी भाषा में स्थानीय बोलियाँ जैसे- बिहारी, भोजपुरी, सदरी, ओराँव आदि बोलियों के शब्द मिलते हैं। संस्कृत और हिंदी के भी कई शब्द उनकी भाषा में मिलते हैं। पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और असम में यह भाषा उड़िया, बंगला और असमिया से मिली हुई है। आजकल मुंडा लोग हिंदी, बंगला, असमिया, उड़िया और कई स्थानीय भाषाएँ बोल सकते हैं, जहाँ वे रहते हैं।



मध्य भारत में मुंडा समुदाय की संख्या बहुत बड़ी है। मुंडा समुदाय की जनसंख्या लगभग 25-30 लाख है और यदि मुंडा भाषा बोलने वाले सभी लोगों को लें तो इनकी संख्या तीन गुना और अधिक होगी। अत: मुंडा और मुंडारी बोलने वालों की संख्या हमारे भारतीय समाज में काफी है। मुंडा लोग परंपरागत खेती करने वाले लोग हैं। ऐतिहासिक रूप से ज्ञात नहीं हो सका है कि कब से मुंडा लोग मध्य भारत में अपने निवास स्थान पर खेती कर रहे हैं। यह माना जाता है कि मुंडा लोग इतिहास के प्रारंभिक काल से ही मध्य भारत के बिहार, उड़ीसा और मध्यप्रदेश में रहते रहे हैं। यह भी संभव है कि अलग समुदाय के लोग भी साथ ही साथ रहते होंगे जो संस्कृत तथा उससे उत्पन्न भाषाओं को बोलते होंगे। यह भी संभव है कि मुंडा लोग प्रारंभिक संस्कृत मूल की भाषा बोलने वाले बिहार के लोगों के साथ मैदानी भागों में रहे होंगे, विशेष रूप से मगध राज्य में। इसीलिए मुँडा लोगों ने वृहत् मैदानी भागों के लोगों के साथ रहकर उनकी प्रथाओं और रीति-रिवाजों को अपना लिया है। काफी संख्या में मुंडारी भाषा में संस्कृत के शब्द मिलते हैं या तो मुख्य रूप में या स्वीकृत रूप में।

## मुंडा समुदाय की संस्कृति

मुंडा समुदायों आज भी अपनी परंपरागत जीवन शैली को अपनाए हुए हैं। उनका खेती का तरीका भी बहुत सरल है। वे आज भी हल और बैलों का प्रयोग खेती के लिए करते है जो राजा जनक या प्राक् वैदिक काल में प्रयोग होता था। वे चावल (धान) और ऐसी फसलों की खेती करते हैं। जो उनकी मिट्टी और उस क्षेत्र के जलवायु के अनुकूल है। खेती के अलावा मुंडा लोग देशी जानवरों जैसे गाय, भैंस, बकरी और भेड़ को पालते हैं। प्रारंभिक वैदिक लोगों की तरह मुंडा समुदाय शिकार करने और मछली पकड़ने का काम अपने आनंद के लिए और अंशकालिक आर्थिक क्रियाकलाप के लिए करते हैं।

मुंडा समुदाय ने अन्य लोगों की तरह अपने समुदाय के मामलों को चलाने के लिए अपनी अलग सामाजिक संस्था विकसित की है। ये सामाजिक संगठन पारंपरिक रूप से अभी कुछ समय तक जीवित

रहे हैं और उनके सामाजिक पद्धति के कुछ तत्व आज भी मिलते हैं। उनके सामाजिक जीवन के ये तत्व प्राचीन भारतीय सामाजिक पद्धति की आज भी याद दिलाते हैं जो भारत के प्राचीन श्रुति-ग्रंथ वेदों में उल्लिखित हैं।

मुंडा समुदाय ने अपने खाने पीने की आदतें, पोशाक, और गहनों को अपने वातावरण और जलवायु के अनुसार धारण किया है। छोटा नागपुर का क्षेत्र चावल उत्पाद के योग्य है, इसलिए इनका मुख्य भोजन चावल, दाल और सब्जियाँ हैं। क्षेत्र के अन्य लोगों की तरह वे अपनी क्षमता के अनुसार मांसाहारी भोजन भी कर लेते हैं। वे अति साधारण वस्त्र धारण करते हैं। मुंडा समुदायों की लड़कियाँ और औरतें फूलों और प्राकृतिक झाड़ियों की शौकीन हैं और विशेष अवसरों और त्योहारों पर ये बालाएँ अपनी लटें प्राकृतिक फूलों से सजाती हैं।

शारीरिक रूप से मुंडा समुदाय अच्छे हैं और मध्यम कद के हैं। मुख्य रूप से उनके शरीर का रंग भूरे रंग का है और आभा गेहुँए रंग की है। मुंडा समुदाय ने राष्ट्रीय विकास में जंगली रास्तों को साफ करके पहाड़ी क्षेत्रों को उपजाऊ बनाकर उत्तम कार्य किया है। इन लोगों ने अन्य परिश्रमी लोगों के साथ मिलकर चाय उद्योग को आगे बढ़ाने में श्रेयस्कर कार्य किया है। ये लोग अभी भी कई तरह के कार्य राउरकेला तथा उड़ीसा के इस्पात संयंत्र में करते हैं। मुंडा लोग स्वतंत्रता की लड़ाई में अंग्रेजों के समय से ही अग्रणी रहे हैं और उनके स्थानीय प्रशासन में बाधा डालते रहे। मुंडा समुदाय के लोगों ने कुछ अच्छे नेता, विशेषज्ञ, प्रशासक और अच्छे व्यक्ति देश को दिए हैं।

## ''हातु'' या मुंडा गाँव

मुंडा लोग अपने गाँव को 'हातु' कहते हैं। 'हातु' दस से पचास या साठ छोटे-छोटे घरों या परिवारों के समूह को कहते हैं। आधुनिक समय में कुद हातु सौ से अधिक घरों से बने है। पारंपरिक मुंडा गाँव बिहार राज्य के राँची और गुमला जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में बंटे हैं। कुछ अच्छी संख्या में ये गाँव उड़ीसा और मध्यप्रदेश के पड़ोसी जिले में भी देखे जा सकते हैं। यदि आप किसी पड़ोसी क्षेत्रों में जाएँ तो आप पक्षियों की



आँखों की तरह ऐसे कस्बों को नदी घाटियों के किनारे देख सकते हैं। ये नदियाँ है- सुवर्णरेखा, कोएलकारो और उनकी सहायक नदियाँ। आप उनसे कुछ दूर जगहों पर कुछ हरे मैदान, खपरों की छत, मिट्टी की दीवारों के साथ देख सकते हैं। ये मकान लकड़ी का उपयोग करके बनाए जाते हैं। गाँव के बाहरी भागों में आम के गुच्छों, धान के पुआलों के अंबार और सब्जियों के छोटे-छोटे खेतों के घेरों को भी देखा जा सकता है।

## ''घर''

अगर आप इनके 'हातु' या घरों में जाएँ तो आप देखेंगे कि इनके मिट्टी के मकान कितने मजबूत हैं। ये दीवारें कुछ स्थानों पर लकड़ी के कुंदों या पत्थर के ईंटों के बने खंभों से जोड़ी गई हैं। ये मकान छोटे-बड़े दोनों आकार के परिवार के 'साईज' के आधार पर बने होते हैं। ये मकान परिवार के सामाजिक-आर्थिक प्रतिष्ठा के आधार पर भी बने होते हैं। दीवारों पर स्थानीय साफ मिट्टी से सफेदी की जाती है। फर्श को प्रतिदिन गोबर और साफ मिट्टी को मिलाकर लेप किया जाता है। दीवारें लकड़ी के तख्तों से बनी होती है। वहाँ पर कुछ खिड़कियाँ होती हैं या खिड़कियाँ नहीं भी होती हैं क्योंकि छत खपरैले होते हैं और दीवार तथा छत के बीच की दूरी हवा के पास होने का काम कर देती है, क्योंकि मानसून हवा की दिशा सामान्य रूप से इस क्षेत्र में दक्षिण या उत्तर की ओर होती है। जब एक परिवार एक से अधिक मकान बना लेता है तो उनके घर का मुंह एक दूसरे की ओर होता है। कुछ परिवार तीन से भी अधिक मकान बनाते हैं। प्रत्येक परिवार के घर के सामने एक बरामदा और एक आंगन होता है। यहाँ पर परिवार गर्मी के मौसम में बैठता है। आंगन में पीने का पानी और जलाने के लिए लकड़ी रखी जाती है। मुंडा लोग एक या दो घर अपने गाय, बछड़ों और बकरियों को रखने के लिए इस्तेमाल करते हैं। एक अलग कमरा देशी जानवरों और पक्षियों के लिए रखा जाता है। एक पारंपरिक गांव में प्रत्येक घर या परिवार अपने घर के पीछे एक बगीचा रखता है। मौसम की

शाक-सब्जियों के अलावा मुंडा लोग कुछ कम छायादार वृक्षों वाले फलों को भी उपजाते हैं, जैसे- केला, अमरूद और अन्य स्थानीय फल। ये शाक-सब्जियाँ या तो काँटेदार झाड़ियों से घिरे रहते हैं या पत्थर की ईंटों से या बांस तथा काँटेदार पौधों से घेर दिए जाते हैं।

यह सच है कि निरंतर कर्म और संघर्ष से जाति का इतिहास बनता है।

[यह लेख राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली की 'भारत के लोग, परियोजना के अंतर्गत श्री एन. तिर्की के मार्गदर्शन में तैयार किया गया है। यह एक पारिस्थितिक अध्ययन है। लेखक ने मुंडा क्षेत्र में जाकर संदर्भित सूचनाएँ एकत्रित की हैं।]

**– संपादक**

❑❑❑

# सहस्रार ग्रंथि: एक वैज्ञानिक विश्लेषण

● **राजेंद्र स्वरूप श्रीवास्तव**

पिनियल ग्रंथि (Pineal gland) को अनेक नामों से जाना जाता है। जैसे अधिवर्ध (Epiphysis), सहस्रार ग्रंथि तृतीय नेत्र, आत्मा का आसन (Seat of Soul), मस्तिष्कीय रेणु (Brain sand), कैल्सीभूत अथवा अवशेषी (Vestigeal) ग्रंथि।

भारतीय योगी सहस्रार से वैदिक काल से ही परिचित थे। मस्तिष्क में सहस्रार ग्रंथि की स्थिति योग साहित्य में वर्णित सहस्रार चक्र की स्थिति से मेल खाती है। कुछ योगियों ने पिनियल ग्रंथि को आज्ञा-चक्र या कुंडलिनी-शक्ति का सातवाँ चक्र बताया जो तर्कसंगत नहीं, क्योंकि आज्ञा-चक्र छठा और सहस्रार सातवाँ चक्र है। पिनियल ग्रंथि की स्थिति भी इससे भिन्न है। आज्ञा-चक्र (पीयूष ग्रंथि या अधिवर्ध, भृकुटि मध्य) के क्षैतिज पटल पर और सहस्रार ग्रंथि ब्रह्मरंध्र करोटि के किरीट पर स्थित मृदु पैलेट के ऊर्ध्वाधर पटल पर (जहाँ यह दोनों रेखाएँ मिलती हैं।) स्थित होती है।

● प्रधान वैज्ञानिक व प्रभारी, दैहिकी एवं जलवायुकी संस्थान, भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली

सहस्रार ग्रंथि एक अंत:स्रावी ग्रंथि (Endocrine gland) है। ईसवी सन् 1958 में इसके अंत:स्राव हार्मोन मेलाटोनिन की खोज हुई। ईसवी संवत् 1965 में, विज्ञान ने इसे अंत:स्रावी ग्रंथि के रूप में स्वीकार किया। तब से इसके नाम सहस्रार ग्रंथि के अनुरूप अनेकानेक शरीर क्रियात्मक कार्य मनुष्यों व पशुओं में खोजे गए। शरीर की कोई भी कोशिका इसके अंत:स्रावी के प्रभाव से अछूती नहीं है। अत: इसका नाम सहस्रार ग्रंथि (a gland with thousand functions) सार्थक प्रतीत होता है। यह ग्रंथि शरीर की जैव घड़ी, कैलेंडर तथा कंपास का भी कार्य करती है। शरीर की रोगरोधी, जरारोधी व कैंसररोधी क्षमता भी सहस्रार ग्रंथि द्वारा काफी सीमा तक नियंत्रित होती है। परा-मनोविज्ञानी, इसी ग्रंथि को अतींद्रिय ज्ञान के स्रोत के रूप में स्वीकार करते हैं और इस दिशा में शोधरत हैं। चेतना-विज्ञानी भी इसी ग्रंथि को चेतना के स्रोत के रूप में परख रहे हैं।

संभवत: भविष्य में सहस्रार ग्रंथि विज्ञान और अध्यात्म के बीच सेतु का काम करेगी।

प्राचीन भारतीय ज्ञान के अनेक संदर्भों को यदि हम आज के वैज्ञानिक मनोमस्तिष्क एवं दृष्टिकोण से समझने का प्रयत्न करें तो संभवत: कई स्थानों पर अनर्थ हो सकता है। प्राचीन समय में ज्ञान-विज्ञान सर्वजन सुलझ नहीं था। गुरु शिष्य के सुपात्र होने पर ही ज्ञान प्रदान करता था। स्वानुभूत ज्ञान को विज्ञान कहते थे। वैज्ञानिक प्रयोगशाला का स्वरूप भी आज जैसा नहीं था। वैज्ञानिक ज्ञान व्यक्तिगत धरोहर होता था। कोई वस्तु, उपकरण या प्रक्रिया सर्वसाधारण के लिए उपयोगी पाई जाने पर उसका उपयोग किया जाना आरंभ हो जाता था। ज्ञान का भौतिक, रासायनिक एवं जैविक सिद्धांतों पर प्रयोगों द्वारा सिद्ध करने का प्रचलन संभवत: नहीं था। वैज्ञानिक सिद्धांतों का स्वरूप व समझ भी आज से पूर्णत: भिन्न थी।

ज्ञान-विज्ञान की जो धाराएँ प्राचीन भारत में विशेष रूप से विकसित हुई वे थीं, गणित, ज्योतिष, खगोल शास्त्र, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, व्याकरण, योग, अध्यात्म और आगम आदि। वेद, वेदांग, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ, पुराणेतिहास। संक्षेप में सभी श्रुति और स्मृतियाँ



इसी ज्ञान की निरंतरता की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं। अथर्ववेद के काल, संभवत: लगभग 3000 वर्ष ईसा पूर्व में सभी ज्ञान को दो भागों- विद्या तथा अविद्या में बाँटा गया था। अध्यात्म, दर्शन, योग आदि विद्या तथा भौतिक ज्ञान अविद्या के अंतर्गत आते थे जिसे हम आज के विज्ञान का स्वरूप कह सकते हैं। अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल में आत्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान की महत्ता अधिक थी।

## पिनियल, तृतीय नेत्र या सहस्रार ग्रंथि: आधुनिक विज्ञान के प्रकाश में

पिनियल ग्रंथि के अनेक नाम हैं। इसे तृतीय नेत्र, तृतीयनेत्र ग्रंथि, मस्तिष्कीय-रेत (बालू), आत्मा का आसन, निष्क्रिय या निष्प्रयोज्य ग्रंथि कहते हैं। इसी ग्रंथि को भारतीय योग साहित्य में सहस्रार कहा गया है। कई योगियों ने इसे आज्ञा-चक्र भी कहा और इसे कुंडलिनी शक्ति का सातवाँ चक्र बताया[2], जो तर्क संगत नहीं, क्योंकि आज्ञा-चक्र छठा और सहस्रार सातवाँ चक्र माना जाता है। हम इसी सूत्र को लेकर आगे बढ़ेंगे तथा तथ्यों के विश्लेषण का प्रयास करेंगे।

इस ग्रंथि का प्रथम उल्लेख हेरोफिलोस ने (लगभग 280-325 वर्ष ईसा पूर्व) किया उनका विचार था कि यह ग्रंथि प्राण-वायु (Pneuma या Spirit) के मस्तिष्क के तीसरे से चौथे निलय में बहाव को टोंटी की भांति नियंत्रित करती है। तत्पश्चात् गैलेन ने (ई० सं 130-200) इस ग्रंथि का आकार चीड़ प्रजाति (Pine) के पेड़ों की भांति शंक्वाकार होने के कारण Soma Konoids, Soma Konerium या Pineal नाम दिया[3]। बाद में रेने डेस्कार्टे (1956-1650) नामक फ्रेंच दार्शनिक ने 'डिस्कोर्स ऑन मेथड्स' नामक ग्रंथि में मस्तिष्क का अकेला अयुग्म अंग माना और इसे 'आत्मा के आसन' का नाम दिया। इसका कार्य प्राण वायु का नियंत्रण करना बताया। साथ ही यह भी कहा कि यह ग्रंथि मस्तिष्कीय निलय की व्यवस्था से बाहर और स्वतंत्र है। इस प्रकार हेरोफिलोस के विचार का खंडन किया।

ईसवी सन् 1954 में दो जर्मन के वैज्ञानिकों, किटे एवं एल्टश्यूल[4] ने सहस्रार ग्रंथि से संबंधित तत्कालीन संपूर्ण विश्व साहित्य एकत्रित किया।

कुल 1800 संदर्भ मिले, जिनके आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह ग्रंथि निष्क्रिय या निष्प्रयोज्य कदापि नहीं हैं, निस्संदेह इस ग्रंथि के शरीरक्रियात्मक कार्य हैं।

एक फ्रांसीसी चर्मरोगविद् ऐरों बी लर्नर ने मैकार्ड तथा ऐलन (1917)[5] का संदर्भ देखा जिसमें दर्शाया गया था कि सहस्रार ग्रंथि के सारसत्त (Extract) को यदि मेंढक के टैडपोल युक्त पानी के पात्र में डाला जाए तो वे काँच की तरह पारदर्शी हो जाते हैं। इस सूचना से उत्साहित डॉ लर्नर ने इस ग्रंथि का क्रियाशील सत्व पृथक् करने का निर्णय किया, ताकि वे इसका उपयोग काले मनुष्यों की त्वचा को गोरी बनाने में कर सकें। उनको इस कार्य की आर्थिक संभावनाएँ दीख रही थीं।

उन्होंने डॉ० ताकाहाशी, मोरी, केस, राइट और बारकास के साथ येल विश्वविद्यालय में कार्य आरंभ किया। उन्होंने 2,50,000 सहस्रार ग्रंथियाँ एकत्र करके 1958 में उनका क्रियाशील सत्व प्राप्त किया, जिसकी मात्रा एक मिलीग्राम से भी कम थी[6] इसकी रासायनिक संरचना ट्रिप्टोफान अमीनो अम्ल पर आधारित इंडोलामीन अणु की थी। जिसे एन-एसिटाइल-5, मिथेक्सीट्रिप्टामीन अथवा मेलाटोनिन को इसके अंत:स्राव के रूप में स्वीकार किया गया। इसके बाद सहस्रार ग्रंथि से अनेक पेप्टाइड अंत:स्राव भी खोजे गए।

## सहस्रार ग्रंथि की कार्यिकी

सहस्रार ग्रंथि मानव व पशुओं के शरीर की जैव घड़ी, कैलेंडर एवं कंपास है, क्योंकि यही ग्रंथि जीव को और उसके शरीर को इन चीजों से संबंधित जानकारी मेलाटोनिन की भाषा (Molecular Language) में देती है। मेलाटोनिन को "बोतलबंद समय" की संज्ञा दी गई है। यह आराम और काम का समय, भोजन और जनन के समय, जनन की ऋतु आदि का निर्णय करती है। प्रवासी पक्षियों को भी अपनी दिशा खोजना इस ग्रंथि के बिना संभव नहीं । मेलाटोनिन शरीर के दूसरे अंगों से संपर्क बनाकर शारीरिक क्रियाकलापों को नियंत्रित करता है। वस्तुत: शरीर की कोई भी कोशिका इसके प्रभाव से अछूती नहीं है।

मेलाटोनिन को 'अंधेरे का अंत:स्राव' कहा जाता है क्योंकि रक्त में



इसकी मात्रा दिन में कम और रात में अधिक होती है। इस अंत:स्राव को मानसिक तनाव व दुश्चिंता दूर करने वाला, प्राकृतिक दुश्चिंता शामक (Anxiolytic) और प्रशातक भी कहा जाता है। मेलाटोनिन व असंख्य पेप्टाइड शरीरक्रिया के सहस्त्रों महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। इसलिए इसका नाम सहस्रार सार्थक लगता है।

## सहस्रार ग्रंथि या सहस्रार प्राचीन ज्ञान के प्रकाश में

सहस्रार चक्र का उल्लेख प्राचीन योग साहित्य में कुंडलिनी शक्ति के कारण जागरण के संदर्भ में अनेकानेक स्थानों पर मिलता है। कुंडलिनी की परिकल्पना एक सर्पिणी, जो मूलाधार सुषुम्ना नाड़ी के अंतिम छोर परस्थित मेरुरज्जु पुच्छ (Cauda Equina) में सोई पड़ी है, के रूप में की गई है। यौगिक क्रियाओं द्वारा इसे जागृत करके षड्चक्र भेदन करके सहस्रार तक ले जाया जाता है। येग साहित्य में वर्णित सहस्रार तक ले जाया जाता है। कुंडलिनी जागरण कठिन है और बिना गुरु के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के इसे करने का निषेध है, अन्यथा भयंकर शारीरिक व मानसिक क्षति हो सकती है। योग साहित्य और आधुनिक शरीर रचना की तुलना करने पर प्रतीत होता है कि कुंडलिनी के विभिन्न चक्र अंत:स्रावी ग्रंथियाँ हैं और स्वभाविक है, इनसे छेड़छाड़ बिना विशेषज्ञ के पर्यवेक्षण के भयंकर हो सकती है।

| क्रम संख्या | अंत:स्रावी ग्रंथि | चक्र का नाम | योगगत वर्णन |
|---|---|---|---|
| 1. | जनन ग्रंथियाँ (अंडाशय व वृषण) | मूलाधार चक्र | चतुर्दल पद्म |
| 2. | अग्न्याशय (पैंक्रियाज) | स्वधिष्ठान | षट्दल पद्म |
| 3. | अधिवृक्क (एड्रीनल) | मणिपूर चक्र | दशदल पद्म |
| 4. | थाइमस | अनाहत चक्र | द्वादश दल पद्म |
| 5. | अवटु (थाइरायड) एवं परा-अवटु (पैराथाइरायड) | विशुद्ध चक्र | षोडश दल पद्म |
| 6. | पीयूषिका (पिट्यूटरी) | आज्ञा चक्र | द्विद पद्म |
| 7. | पिनियल | सहस्रार चक्र | सहस्रदल पद्म |

योग साहित्य के अनुसार, सहस्रार चक्र का भेदन ब्रह्मरंध्र से प्राण

त्याग के समय होता है। षड्-चक्र भेदन से जागृत कुंडलिनी शक्ति, सहस्रार ग्रंथि में स्थित हो जाती है। योग साहित्य के अनुसार सहस्रार चक्र में सदैव अमृत-स्राव होता रहता है।[8] जिसका पान, योग द्वारा जागृत करके यहाँ लाई गई कुंडलिनी करती है व जिस समय यह सतत स्राव बंद हो जाता है, मृत्यु हो जाती है। सहस्रार को ही ब्रह्मरंध्र भी कहते हैं। ब्रह्मरंध्र में मन और प्राण के स्थित हो जाने पर समस्त वृत्तियों का निरोध होकर असंप्रज्ञात समाधि की प्राप्ति होती है।

जैसा ऊपर कहा गया है, सहस्रार ग्रंथि से सतत अमृत-स्राव होता है। यदि हम आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से देखें तो ज्ञात होगा कि सहस्रार ग्रंथि मेलाटोनिन का भंडारण नहीं करती। मेलाटोनिन के अनेकानेक कार्यों में बुढ़ापे को रोकना तथा बीमारियों और कैंसर रोधी क्षमता बढ़ाना भी है।[9] संभवत: सतत अमृत-स्राव का उल्लेख इसी ओर संकेत है।

## सहस्रार ग्रंथि तथा इंद्रियातीत अनुभव

इंद्रियातीत अनुभवों का स्नायु वैज्ञानिक आधार खोजने के प्रयत्न में ज्ञात हुआ कि इसमें सहस्रार का योगदान होने की संभावना है। चेतना की विभिन्न स्थितियाँ इंद्रियातीत अनुभव के लिए सीधी उतरदायी होती हैं। मेलाटोनिन भी चेतना की स्थितियों को प्रभावित करता है। ध्यान, सम्मोहन और नींद तीनों का संबंध इंद्रियातीत अनुभव से जोड़ा जाता है। ज्ञातव्य है कि बालकों और किशोरों में सहस्रार हारमोन मेलाटोनिन का स्तर वयस्कों से काफी अधिक होता है। यौन परिरपक्वता के बाद स्तर कम होने लगता है। इंद्रियातीत अनुभव बच्चों में और रात्रि 3-4 बजे ब्रह्ममुहुर्त में अधिक होते हैं, और इसी समय मेलाटोनिन का स्तर सर्वाधिक होता है। यही समय साधना के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। तांत्रिकों द्वारा 'निशीथ काल' (मध्यरात्रि) तंत्र साधना का समय माना जाता है।

## सिद्धियाँ

मेरुदंड में स्थित सुषुम्ना नाड़ी, इडा और पिंगला नाड़ियों के साथ चलती बताई गई है। संभवत: सूर्य नाड़ी इड़ा अनुकंपी (Sympathetic) और चंद्र नाड़ी पिंगला परा-अनुकंपी (Parasympathetic) नाड़ियों



के समूह की द्योतक है। ज्ञातव्य है कि सुषुम्ना शब्द से सोए पड़े होने की ध्वनि आती है, संभवत: यह कुंडलिनी शक्ति के सोए पड़े होने की ओर संकेत है! प्रमस्तिष्क मेरुतरल (Cerebrospinal fluid) में मेलाटोनिन की मात्रा रक्त से दस गुनी अधिक तथा सिद्ध पुरुषों या योगियों में और भी अधिक होती है, संभवत: भविष्य में सहस्रार ग्रंथि विज्ञान और अध्यात्म के बीच सेतु का काम करेगी।

❑❑❑

## संदर्भ


1. श्लोक 4. देव्य अथर्वशीर्ष. अथर्ववेद।
2. सत्यनारायण, एम. (1991) ए रिव्यू आन साइकोफिजियोलॉजिकल फन्क्शन्स ऑफ पिनियल ग्लैंड, इंडियन जनरल ऑफ फिजियोलॉजी ऐंड एलाइड साइंसेज। 47 : 32 - 42
3. विष्णुपुरी के. एस. (1992) मैटरनल पिनियल फिजियोलॉजी ऐंड फीटल डेवलपमेंट इन इंडियन पाम स्क्वैरल पीएच. डी. शोध ग्रंथ, बी. एच. यू. वाराणसी को प्रस्तुत।
4. किटे जे. आई. एवं एल्टश्यूल एम. डी. (1954) दी पाइनियल ग्लैंड, हाखर्ड यूनीर्वसिटी, प्रेस कैब्रिज ए. एम. जूंलाजी।
5. मैक्कार्ड सी .पी एवं एफ. पी. एलेन (1917) एवीडेन्स एसोसिएटिंग पाइनियल ग्लैंड फंक्सन विद अल्टरेशन्स इन पिगमेन्टशन, जर्नल ऑफ एक्सपेरीमेन्टल जूलाजी 23: 207-224
6. लर्नर ए. बी. केस जे. डी. ताकाहाशी, वाई तथा अन्य (1958) आइसोलेशन ऑफ मेलाटोनिन, पिनियल फैक्टर दैट लाइटेंस मेलानोसाइट्स, जनरल ऑफ दी अमेरिकन केमिकल सोसायटी, 80 : 2587
7. बुर्ट्जमैन आर. जे. एवं जूलिस एक्सेलराड (19650 दी पिनियल ग्लैंड, साइन्टिफिक अमेरिकन, 213 : 50 - 60
8. कौशिक, विवेक श्री (1981) कुंडलिनी शक्ति, गोल्ड पब्लिकेशन्स, दिल्ली, भारत।
9. टंडन, मनीष (2002) प्रोफाइल आफ बुबेलाइन पिनियल प्रोटीन/पेप्टाहाइड्स ऐंड देयर इम्यूनोपोटेन्शिएशन, एम. वी. एस. सी. शोधग्रंथ, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, उ० प्र० को प्रस्तुत।

# ''पादरी जॉन हेन्स होम्स के विचारों में गांधीजी''

● श्रीमती कल्पना वि. लांडसे

**'तमसो ऽ मां ज्योतिर्गमय'**

आजकल जब हम आपस में मिलते हैं, तो प्राय: निराशा की ही बातें करते हैं। 'हमारा देश तो रसातल की ओर तेजी से जा रहा है', 'भारत में अब प्रजातंत्र नहीं टिक सकेगा', 'हमारे कुछ नेता भारत को गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं', 'शासन में भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं रही है', 'महात्मा गांधी को देश बिलकुल भूल गया है।' कुछ इसी तरह की चर्चा दिन रात चलती रहती है।

लेकिन आखिर इस अंधकार को हटाकर हमें प्रकाश की ओर कौन ले जाएगा? क्या अंग्रेजों को फिर बुलाया जाए? क्या परमेश्वर आकाश से नीचे उतरकर हमें रास्ता दिखाएँगे? हम किसकी राह देख रहे हैं? यह कोई नहीं कहता कि 'हमें ऐसा करना है।' 'हम समाज व देश की हालत को ठीक करेंगे।' हमें पहले स्वयं को सुधारना है। प्रकाश की भाँति जग में आए हुए महात्मा गांधी का गांधीवाद हमारे पास है। हम 'गांधीवाद' ही भूलते जा रहे हैं। यह गांधीवाद क्या है? 'नित्य जीवन व प्रश्नों पर अपने ढंग से शाश्वत सत्य को सुसंगत करने का गांधीजी ने जो उद्यम किया उसी को संसार ने गांधीवाद कहा।' भारत में गांधीजी की बताई हुई बातों

● सह अध्यापिका, महिला आश्रम बुनियादी प्राथमिक विद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)



को ही हम भूलते जा रहे हैं। सात समुंदर पार गांधी की पारदर्शिता पर कोई संदेह नहीं करता।

स्वाधीनता संग्राम में गांधीजी के विराट व्यक्तित्व ने संसार के कई महापुरुषों को गांधी जी को महान पुरुष मानना शुरु किया था। अमरीका के पादरी जॉन हेन्स होम्स के भी विचारों में गांधीजी की महत्ता के दर्शन होते हैं। सन् 1939 में महात्मा गांधी जी के 71वें जन्मदिवस के अवसर पर डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने एक अभिनंदन ग्रंथ का संपादन किया था। उस ग्रंथ में जॉन हेन्स होम्स ने लिखा है-

''कोई बीस वर्ष हुए होंगे जब मैंने अमरीका की जनता के आगे यह घोषित किया था कि 'गांधीजी संसार के सबसे महान पुरुष हैं।' उन दिनों मेरे देशवासी गांधीजी के बारे में कुछ नहीं जानते थे। हमारे पाश्चात्य संसार में उनके नाम ने तब मुश्किल से ही प्रवेश पाया होगा। किंतु उस समय से उनका नाम इतना अधिक प्रसिद्ध हो गया जितना कि किसी भी महापुरुष का हो सकता है और अमरीकावासी इस बात को जानते हैं, कि जब मैंने गांधीजी को सबसे महान कहा, तब मैंने यह ठीक ही कहा था।''

पादरी जॉन हेन्स होम्स पर गांधीवादी दर्शन का कोई प्रभाव नहीं था। लेकिन उन्होंने यह माना कि गांधी दर्शन मनुष्य को उदात्तता की ओर ले जाता है। जॉन हेन्स होम्स ने जब इस शब्द का उपयोग किया था, तब तक गांधी से उनका कोई संपर्क नहीं था, और न वे गांधी जी को जानते थे। केवल दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने 'नैटल इंडियन कांग्रेस की, स्थापना कर जो आंदोलन चलाया था, तब जॉन हेन्स होम्स ने सुना कि 'एक भारतीय अहिंसा से अंग्रेजों की हिंसा को परास्त करना चाहता है।' उसी समय उन्होंने अपने देशवासियों के सामने यह भविष्यवाणी की थी, जो अंतत: सत्य में परिवर्तित हुई। उनका मानना है, ''गांधीजी की महत्ता इस युग में साधारणत: ऐसी किसी वस्तु के कारण नहीं है जिसकी महान प्रतिभा या पराक्रम के अंदर गणना होती हो। न तो उनके पास बड़ी-बड़ी सेनाएँ हैं, और न उन्होंने किसी देश को ही जीता है। न वे कोई उच्च पदासीन राजनीतिज्ञ ही हैं, जो राष्ट्रों के भाग्यविधाता कहे जा सकें। वह कोई दार्शनिक ऋषि भी नहीं हैं। उन्होनें न कोई बृहत् ग्रंथ लिखें हैं, न बड़े-बड़े काव्य।''

जॉन हेन्स होम्स के विचारों से महात्मा जी की प्रतिभा तो आत्मशक्ति के क्षेत्र में सन्निहित है। गांधीजी का यह आत्मबल ही था, जिसने उन्हें अनुपम प्रभाव और नेतृत्व के पद पर बिठा दिया था। अमरीकावासियों के दिलों में जब महात्मा गांधी जी के बारे में अधिक जानने की जिज्ञासा जागृत हुई, तब उसे पूर्ण करते हुए उन्होंने गांधी के 'मानवता' के आदर्शों को निभाने का ढंग और सत्य अहिंसा से लड़ी जाने वाली लड़ाई बताते हुए यह समझाया कि- ''अंत में जब स्वतंत्रता प्राप्त हो जाएगी तब उसका श्रेय जितना गांधी को दिया जाएगा किसी दूसरे भारतीय को नहीं मिलेगा। यह भी श्रेय गांधी को ही मिलेगा कि उस स्वाधीनता के योग्य अपने देशवासियों को उन्होंने बना दिया है और ऐसा उन्होंने उनकी 'अपनी संस्कृति का पुनरुद्धार करके, आत्मगौरव और आत्मसम्मान की भावना को उनके अंदर जागृत करके, उनमें आत्मनियंत्रण का अनुशासन विकसित करके अर्थात्, उन्हें आध्यात्मिक तथा राजनीतिक दृष्टि से मुक्त करके किया है।''

गांधी जी के अस्पृश्यों के उद्धार, सवर्ण और अवर्ण, विवाह के कार्य के बारे में जॉन हेन्स होम्स लिखते हैं, 'यह अकेला काम ही इतना महान है जो मानव जाति के उद्धार के इतिहास में, चिरस्मरणीय रहेगा। गांधी के जीवन की श्रेष्ठ वस्तु अहिंसात्मक प्रतिरोध के सिद्धांत को उन्होंने विश्व में मुक्ति, न्याय और शांति प्राप्त करने के लिए एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक कला में परिणत कर दिया। दूसरे मनुष्यों ने जिस वस्तु को एक व्यक्तिगत अनुशासन के रूप में सिखलाया है, गांधी ने उसे विश्व की मुक्ति के लिए एक सामाजिक कार्यक्रम के रूप में परिणत कर दिया है। पादरी ने गांधी जी को गुलामी के त्राता के रूप में क्लार्कसन, विल्बर फोर्स गैमेजन, लिंकन आदि की भाँति महान माना है। इसकी सत्य-असत्य की मीमांसा के पीछे हम नहीं पड़ेंगे क्योंकि सत्य-असत्य का बड़ा मार्मिक शब्दो में उत्तर गांधीजी ने 1922 के येरवदा जेल के राजनीतिक बंदिवास में दिया है। अपने पाँचवे पुत्र जमनालालजी को एक पत्र में लिखा ''अपने अंत:करण को जो ठीक लगे वही सत्य है।'' पादरी जॉन हेन्स होम्स जो अमरीकावासी थे और खिस्त धर्म-प्रेमी थे उन्हें भारतीयों से कोई लेना देना नहीं था। ऐसे व्यक्ति के अंत:करण में 'महात्मा गांधी'



4121 HRD/07—5A

की महत्तता आरूढ़ हो यह भारतीयों के लिए गौरव की अनुभूति है।

पादरी एक उदात्त मानवीय चिंतन तथा एक आदर्शवादी व्यवस्था के पोषक थे। हम जब किसी भी दृष्टि को तार्किकता से देखते हैं, तब उसके संबंध में कुछ विविध मत दृष्टिगोचर होते हैं। गांधी विचारों के बारे में भी लोगों के विभिन्न तर्क हो सकते हैं किंतु उनके सत्य, अहिंसा और शांति की शाश्वतता को इंकार नहीं किया जा सकता। गांधीजी की संपूर्ण सोच का केंद्र-बिंदु मानवता का था। यही कारण था कि जॉन ने गांधीजी को अंत:करण से कई सर्वोच्च स्थानों पर बिठाया था। उनके अपने ही शब्दों में-

''अतीत युगों के तमाम महापुरुषों से गांधी महान हैं। राष्ट्रीय नेता के रूप में वह अल्फ्रेड, वालेस, वाशिंग्टन के सिडस्को, लफाइजी की श्रेणी में आते हैं। खस्ती धर्मग्रंथों में जिसे अप्रतिरोध और इससे भी सुंदर शब्द 'अमोघ प्रेम' कहा है, उनकी शिक्षा देनेवाले के रूप में वह संत फ्रांसिस और टॉल्सटाय की श्रेणी में आते हैं। सर्व युगों के महान धार्मिक पैगंबरों के रूप में उन्हें लाओजे, बुद्ध और ईसा के समकक्ष माना जा सकता है। सर्वश्रेष्ठ रूप में वे मानव हैं।'' पादरी होम्स ने इन सबके बारे में 'रि-थिंकिंग-रिलीजन' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है। इस पुस्तक में 'विनम्र, सौम्य, निर्दोष, सादगी, संकल्प शक्ति आदि की मीमांसा है। उनका मानना है ''गांधी का साहस मानो लोहा है।'' इस प्रकार गांधीजी तो सेवाग्राम में रहकर भी केवल संसार से नहीं ब्रह्मांड के जीवन से एकरस रहते थे।

महात्मा गांधी जैसे महान व्यक्ति और उनके विचार हमारे पास हैं, फिर भी आजकल भारत में हिंसा का माहौल तेजी से बढ़ रहा है। हिंसक आंदोलनों, नौजवान विद्यार्थियों की विध्वंसक प्रवृत्तियों के समाचार मुख-पृष्ठों पर प्रकाशित रहते हैं। एक तरफ हम भौतिक प्रगति कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ हम पतन के पथ पर हैं। इसका एक ही कारण है राजनीतिक षड्यंत्रों ने भारत में गांधीवाद को पनपने ही नहीं दिया परिणामत: हम गांधी को, उनके विचारों को भूल गए हैं।

पादरी जॉन हेन्स होम्स के विचारों का मंथन कर मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि आज जहाँ समूचा विश्व आतंक और हिंसा से जूझ रहा है,



4121 HRD/07—5B

तब गांधी जी आज अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। सन् 1931 में अपने कार्यक्रमों का विरोध करनेवालों को स्वयं गांधीजी ने कहा था- ''गांधी मर सकता है किंतु गांधीवाद अमर रहेगा।'' यह सही भी है, कि गांधीजी का दर्शन समाज सुधारक की एक व्याप्त संहिता है । इस भौतिक लालसा, स्वार्थ, गलाकाट स्पर्धा, आतंक, भय और हिंसा से ग्रसित मानव समाज को भी ऐसे मूल्यों का परिचय करवाना है, जो मनुष्य मात्र को एक सशक्त तत्वज्ञान ही नहीं वरन् एक गतिशील कर्मपथ पर आरूढ़ करने में मदद करेंगे। अत: आज के हिंसा और दमन के युग में उनके दर्शन से नैतिक मूल्य की एक ऐसी अलख जगाई जा सकती है, जिसमें आज की लगभग सभी समस्याओं का समाधान है।

गांधीवाद को अपनाकर मानव समाज आत्मतृप्ति और आनंद का अनुभव अवश्य करेगा।

❑❑❑



# अमीर खुसरो की लोकधर्मी चेतना

● राधाकांत भारती

लगभग साढ़े सात सौ वर्ष पहले दिल्ली में एक ऐसा इंसान रहा था, जिसने अपनी संवेदनशीलता और भावनात्मक रचनाओं से लाखों का दिल जीत रखा था। अब भी देश-विदेश में उसके करोड़ों पाठक मौजूद हैं। भारत में पैदा हुआ वह पहला ऐसा मुसलमान था, जिसने अपने दिल की गहराइयों से देश-प्रेम, भाईचारा और सांस्कृतिक एकता की भावना को अपनी लोकप्रिय रचनाओं में प्रस्तुत किया था। आज भी उसकी हिंदी, उर्दू और फारसी की रचनाओं को पढ़कर लोग मनमुदित हो उठते हैं। अपनी जन्मभूमि भारत की वंदना करने वाले तथा रसमय रचनाओं से पाठकों को सम्मोहित करने वाले इस अलबेले व्यक्तित्व का नाम है – अमीर खुसरो।

डॉ. परमानंद पांचाल के अनुसार ''खड़ी बोली के रूप में हिंदी को एक साहित्यिक स्वरूप देकर नगर और गाँवों में लोकप्रिय बनाने में खुसरो का सबसे बड़ा योगदान रहा है। उनके काव्य में कई स्थानों पर फारसी और हिंदी का गंगा-जमुनी संयोग देखकर पाठकगण चकित हो उठते हैं। केवल काव्य ही नहीं, संगीत, लोक व्यवहार तथा पूजा-अर्चना की पद्धति में भी खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान सदैव सराहनीय और अनुकरणीय रहेगा।''

● 56 नगिन लेक अपार्टमेंट्स, पीरागढ़ी, नई दिल्ली- 110087

लोकप्रिय महाकवि खुसरो बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। वे सूफी संत होने के साथ-साथ कुशल सैनिक, महान कवि, बहुभाषाविद् एवं उच्चकोटि के संगीतकार तथा सच्चे भारत-भक्त थे। उनकी महानता और लोकप्रियता का परिचय इस बात से मिलता है कि प्रत्येक वर्ष भारत के ही नहीं दुनिया के कोने-कोने से हजारों की संख्या में श्रद्धालु उनकी मजार पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाने आते हैं। क्या हिंदू, क्या मुसलमान, क्या गरीब, क्या अमीर, क्या स्त्री, क्या पुरुष सभी अमीर खुसरो को अपनी भावनापूर्ण श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते हैं।

पहेलियों की बानगी देखें :

श्याम वरन और दांत अनेक
लचकत जैसे नारी,
दोनों हाथ से खुसरो खींचे
और कहे तू आरी। ..... (आरी)

बीसों का सिर काट लिया
न मारा ना खून किया। ..... (नाखून)

एक नार दो को ले बैठी
टेढ़ी होकर बिल में पैठी
जिसके पैठे उसे सुहाय
'खुसरो' उसके बल-बल जाए। .... (पायजामा)

डाला था सबको मन भाया
टाँग उठा कर खेल बनाया
कमर पकड़ कर दिया ढकेल
जब होवे वह पूरा खेल। ..... (झूला)

एक थाल मोती से भरा
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर थाल वह फिरे
मोती उससे एक न गिरे। .... (आसमान)

सरल शैली में रचित अमीर खुसरो की इन पहेलियों से सैंकड़ों वर्षों



से लोगों का मनोरंजन होता रहा है। उसी प्रकार अमीर खुसरो की मुकरियाँ भी खूब प्रचलित हैं। 'मुकरियाँ' अर्थात् एक बात जो कही गई है, उस से मुकर जाने की कलात्मक प्रस्तुति। इसके कुछ रोचक उदाहरण देखिए :

उछल कूदकर जो वह आया
धरा, ढका सब ही कुछ खाया।
दौड़ झपट जा बैठा अंदर,
क्यों सखि साजन, ना सखि बंदर। ..... (बंदर)

सगरी रैन मोरे संग जागा
भोर भई तब बिछड़न लागा
ताके बिछड़े फाटत हिया,
क्यों सखि साजन, ना खचि दीया। ..... (दीपक)

लोकप्रिय रचनाकार अमीर खुसरो ने अनेक प्रकार की मनोरंजक विधाओं में रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। ऐसी एक विधा है -'दो सुखने', इसमें दो पंक्तियों के दो भिन्न सवालों का एक ही उत्तर होता है, जिससे पाठक या सुनने वाला चकित हो उठता है –

कुम्हार प्यासा क्यों?
गधा उदास क्यों?
–लोटा नहीं था।

पान क्यों सड़ा?
रोटी क्यों जली?
–फेरा न था।

खुसरो का यद्यपि कोई लिखित काव्य उपलब्ध नहीं है, किंतु उन्होंने ऐसे काव्य की रचना की, जिसके कारण वे सदियों से जन-सामान्य से एकाकार होकर आज भी जीवित हैं। इनकी अनेक फारसी रचनाओं में हिंदी के शब्द और वाक्य साथ-साथ प्रयुक्त हुए हैं। अमीर खुसरो की ऐसी एक फारसी हिंदी गजल बहुत प्रसिद्ध है:

जे हाले मिस्की सकुन तगाफुल, दुराए नेना बनाऐ बतियाँ,
किताबे-हिजरा न दारम ए जं, न लेहु काहे लगाए छतियाँ!

अमीर खुसरो केवल कवि, रचनाकार, संगीतकार और बहादुर सेनानी ही नहीं थे, बल्कि महान सूफी संत भी थे। उनकी संतवाणी तथा साधना का विवरण डॉ. गोपाल ने बड़े भावनापूर्ण ढंग से किया है। उनके द्वारा लिखित तथा समय-समय पर सुल्तानों द्वारा प्रचारित भक्तिपूर्ण दोहे और कव्वालियाँ अब भी दरगाहों तथा मजलिसों में खूब गाई जाती हैं। इन्हें गाकर तथा सुनकर लोग अलौकिक आनंद का अनुभव करते हैं। ऐसी एक लोकप्रिय रचना पेश है :

छाप तिलक तज दीन्ही रे,
तोसे नैना मिला के–
मतवारी कर दीन्ही रे,
मोसे नैना मिला के–
खुसरो निजाम पे बलि-बलि जइए,
मोहे सुहागिन, किन्हीं के,
मोसे नैना मिला के!!

संत कवि अमीर खुसरो ने हिंदुओं और मुसलमानों को समीप लाकर एक करने का स्तुत्य प्रयास किया था। इस प्रकार उन्होंने धार्मिक सौहार्द और सहिष्णुता का वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान किया है। यह बात उनकी भक्तिभाव की रचनाओं में परिलक्षित होती है।

हिंदू धर्म तथा इस्लाम की भक्तिभावना से सराबोर उनके गीत की ये पंक्तियाँ भी काफी लोकप्रिय हो गई हैं:

बहुत कठिन है डगर पनघट की,
कैसे मैं भर लाउँ मधवा से मटकी।
मोरे अच्छे निजाम पिया – कैसे मैं भर लाउँ....
जरा बोलो निजाम पिया!
पनिया भरन को मैं जो गई थी
दौड़ झपट मोरी मटकी पटकी।
बहुत कठिन है डगर पनघट की,
'खुसरो' निजाम के बलि-बलि जइये,
लाज राखो मोरे घूंघट पट की .....।



प्रसिद्ध सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया ही अमीर खुसरो के परम आदरणीय गुरु थे। अपने अंत समय में औलिया ने प्रिय शिष्य खुसरो को याद किया। किंतु उस समय खुसरो दूर स्थित तिरहुत क्षेत्र में थे। इस वजह वे समय पर पहुँच नहीं सके। दिल्ली लौटने पर उन्हें अपने पीर के निधन का दुखद समाचार मिला। कहते हैं कि मर्माहत हो खुसरो ने यह दोहा पढ़ा और सारी संपत्ति गरीबों को लुटा कर उदासीन हो गए :

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस,
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।

अमीर खुसरो अपने गुरु के वियोग को ज्यादा दिनों तक सहन नही कर सके। वियोग की वेदना सहते हुए कुछ महीनों बाद ही औलिया की कब्र के पास लेटे हुए अपने प्राणों को त्याग दिया।

आज भी प्रत्येक साल दिल्ली में इनकी मजार पर उर्स का भावनात्मक समारोह होता है जिसमें शामिल होने के लिए देश-विदेश से हजारों की संख्या में साहित्य-पारखी लोग यहाँ पर आते हैं और सिजदा करते हैं।

❑❑❑

# वेदों के संदर्भ में विवाहः एक वैज्ञानिक चिंतन

● डॉ. रामसुमेर यादव

विवाह एक संस्कार विशेष है जो कि सभी संस्कारों में सर्वोत्कृष्ट माना जाता है। इसकी महत्ता का प्रतिपादन वैदिक काल से लेकर आज तक होता चला आ रहा है। इसके लिए कई शब्द प्रयुक्त होते हैं जैसे उद्वाह अर्थात् कन्या को उसके पितृगृह से उत्तम प्रकार से ले जाना, परिणय या परिणयन का तात्पर्य अग्नि की प्रदक्षिणा करने से है। उपयम का अर्थ सन्निकट ले जाना और अपना बना लेना है। पणिग्रहण का भाव कन्या का हाथ पकड़ना होता है। विवाह शब्द का अर्थ अधिक व्यापक है (वि + वह् + घञ्) 'विशिष्टं वहनं विवाहः' अर्थात् विशिष्ट ढंग से कन्या को ले जाना या अपनी स्त्री बनाने के लिए ले जाना। ये सारे शब्द विवाह संस्कार के एक एक तत्व का ही प्रतिपादन करते हैं। तथापि शास्त्रों ने इन सबका प्रयोग किया है। तैत्तिरीय संहिता (7-2-87) एवं ऐतरेय ब्राह्मण (27/5) में विवाह शब्द उल्लिखित है। तांड्य ब्राह्मण (7-10-1) में उपलब्ध होता है कि स्वर्ग और पृथ्वी में पहले एकता थी। किंतु जब वे पृथक् पृथक् हो गए, तब उन्होंने कहा – आओ हमलोग विवाह कर लें, हम लोगों में सहयोग उत्पन्न हो जाए।

**''इमौ वै लोका सहास्तां तौ विभन्तावभूतां विवाहं विवहावहै। सह नावस्त्विति।''** तांड्य महाब्राह्मण (-7-10-1)

● वरिष्ठ व्याख्याता, संस्कृत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तरकाशी (उत्तरांचल)



इस संदर्भ में एक आशंका जन्म लेती है कि क्या विवाह-संस्कार की स्थापना के पूर्व भारतवर्ष में स्त्री-पुरुष संबंध में असंयम था। महाभारत के आदिपर्व में पांडु ने कुंती से कहा कि ''प्राचीन काल में स्त्रियां एक पुरुष को छोड़कर अन्य को ग्रहण करती थीं।'' वे संयम से बाहर थीं। यह स्थिति पांडु के काल में उत्तर कुरुक्षेत्र में विद्यमान थी। उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु ने इस प्रकार के असंयमित जीवन के विरोध में स्वर ऊँचा किया और नियम बनाया कि यदि स्त्री पुरुष के प्रति या पुरुष स्त्री के प्रति असत्य होगा तो वह अपराधी होगा। ऋग्वेद के अनुसार विवाह का उद्देश्य गृहस्थ होकर देवों के लिए यज्ञ करना तथा संतानोत्पति करना ही है। स्त्री को जाया कहा गया है क्योंकि पति ने पत्नी के गर्भ से पुत्र के रूप में जन्म लिया। ऐसा ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में– ''अर्धो ह वा एष आत्मनो यज्जाया। तस्मादयावज्जायां न विन्दते। नैव तावत्प्रजायते असर्वो तावद् भवति। अथ यदैव जायां विन्दतेऽथ तर्हि हि सर्वो भवति।'' (शतपथ ब्राह्मण, (5-2-1-10) अर्थात् पत्नी पति की अर्धांगिनी है। अतः जब तक व्यक्ति विवाह नहीं करता, जब तक संतानोत्पत्ति नहीं करता तब तक वह पूर्ण नहीं होता है।

**''य गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।''** (शांति पर्व, 144-66)

आज हम और हमारा पूरा देश एड्स जैसी भयंकर बीमारी से पीड़ित है। यदि हम अपनी भारतीय संस्कृति को देखें तो इससे तत्कालीन समाज सचेत दिखलाई पड़ता है। तभी तो वे एकपत्नीव्रत या एकपतिव्रत का पालन करते दृष्टिगत होते हैं। ऋग्वेद में इसका पुष्ट प्रमाण मिलता है :

**''अवश्यं त्वां मनसां चेकितानं, तपसो जातं तपसो विभूतम्।**
**इह प्रजां इह रयि रराणः प्रजायस्व प्रजया पुत्रकामा**

(ऋग्वेद, 10-183-1)

पत्नी पति से कहती है हे देव! मैंने संज्ञानयुक्त अर्थात् समझदार तप से प्रकाशित, तप से विभूतिमय को मनरूपी नेत्रों से देखा है। संतान की कामना करने वाले! गृहस्थाश्रम में संतान को यहाँ ऐश्वर्य को सेवन करता हुआ सुनागरिक या सुनागरिका संपादन कर, अर्थात् उत्पन्न कर।

**वहीं पति पत्नी से कहता दृष्टिगोचर होता है कि ''अवश्यं त्वा मनसा दीध्यानां, स्वायां तनू ऋत्व्ये नाधमानाम्।**

**उप माम् उच्चा युवतिर्वभूयाः प्रजामस्व प्रजया पुत्रकामे।**
(ऋग्वेद, 10-183-2)

अर्थात् कन्ये! मैंने देखा है तुझ दीध्माना, अपने तन को ऋत्वियता में नाथने वाली को मन से मनो नेत्र से। संतान की कामना करने वाली उच्च युवती, तू मेरे निकट हो। सुसंतान से सुनागरिक तथा सुनागरिका उत्पन्न कर।

विविध कर्तव्यों के निर्वहन के लिए जो संबंध होता है उसे विवाह कहते हैं। चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम ही एक ऐसा आश्रम है जिस पर कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का भार है। इसी पर ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास तीनों आश्रम, समाज, राष्ट्र व संपूर्ण जगत् निर्भर है। इसीलिए विवाह एक पत्नी के साथ रहने का संस्कार है। परस्त्री का स्पर्श शास्त्रों में वर्जित किया गया है। अन्य की स्त्रियों की ओर मातृवत् व्यवहार की शिक्षा भारतीय संस्कृति में उपलब्ध होती है:

''मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्'' अर्थात् पराई स्त्री को माता के समान समझना चाहिए। जब हम परस्त्री को माता मान लेते है तो कुदृष्टि, कुकर्म का प्रश्न ही नहीं उठता। आज यह न कहकर एड्स से बचने के लिए तमाम तरीके बताए जाते हैं जिनमें कंडोम प्रधान है। इससे एड्स से तो बचा जा सकता है पर कुकर्म तो हो ही जाएगा। अत: वैदिक चिंतन से कुकर्म से दूर रहने की शिक्षा मिलती है। इसीलिए वे विवाह संस्कार पर जोर देते हैं क्योंकि विवाह एक ही स्त्री या पुरुष के साथ होता है, वहाँ एड्स जैसी समस्या की कोई आशंका नहीं है। ऋषियों मुनियों की दूरदृष्टि बड़ी ही वैज्ञानिक व तथ्यपूर्ण है।

विवाह से ही गृहस्थाश्रम का प्रारंभ होता है। लोक और परलोक साधना तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे कमनीय कामनाओं की पूर्ति हेतु इसी आश्रम में प्रसाधना की जाती है, अर्थात् विवाह का अर्थ सर्वतोन्मुखी कर्तव्यों के संवहन के लिए गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना है। ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम की तैयारी है। विवाह मानवजीवन में एक पवित्र अवसर है। कन्या को अपने पति का और कुमार को अपनी पत्नी का वरण बड़ी सावधानी से करना चाहिए। इस चयन में उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव की समता पर ध्यान देना चाहिए। अन्यथा विवाह से पूर्व की तैयारी व्यर्थ हो



जाती है। और न केवल उसमें पति-पत्नी का अपितु पूरे परिवार का जीवन नारकीय होता है। ऋग्वेद के उक्त दोनों मंत्रों में सुंदर पति-पत्नी के चुनाव की बात कितनी स्पष्ट है। आज का समाज पति-पत्नी के वरण में चुनाव में शीघ्रता करता है जिससे तलाक की स्थिति आ जाती है जो कि समाज का कोढ़ है। एक ओर तलाकों की संख्या में बाढ़ सी आ गई है। वहीं पुन: कहीं-न-कहीं उनके संबंध होते हैं जिससे लोग एड्स जैसी बीमारी के शिकार भी हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति इसके लिए दर्पण की तरह स्पष्ट है। रामायण में पंचवटी में समागता शूर्पणखा दशानन-भगिनी अत्यंत सुंदरी व लावण्यवती है। राम से वह अपनी इच्छा व्यक्त करती है, परंतु राम उसे समझा बुझाकर लक्ष्मण के पास भेजते हैं। लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला वहाँ नहीं होती। उन्हें यह भी ज्ञात है कि चौदह वर्षों तक पत्नी विरह में जीना पड़ेगा। वे चाहते तो राम की अनुमति तो थी ही। सीता की भी मूक अनुमति प्राप्त थी। पर लक्ष्मण परस्त्री का स्पर्श तक नहीं करते। वहीं सीता अपहरणोपरांत रावण द्वारा दिए गए प्रलोभनों में न पड़कर एकपतिव्रत का पालन करती है। बालि द्वारा सुग्रीव की पत्नी का अपने पास रखना उसकी मृत्यु का सबसे बड़ा कारण बन जाता है, और राम उसका वध करते हैं। बालि के यह पूछने पर कि मैंने आपका क्या बिगाड़ा जो मुझे मार दिया, राम अंत में परस्त्री-स्पर्श को कुकर्म बताते हैं। उसी के कारण उसका वध उचित बताते हैं।

इस संदर्भ में वैदिक, औपनिषदिक तथा पौराणिक तथ्यों पर विचार करना आवश्यक है। तथ्यों से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विवाह कितना वैज्ञानिक है। एकपत्नीव्रत या एकपतिव्रत का सिद्धांत विवाह द्वारा आपस में प्रगाढ़ता प्रदान करता है। उपर्युक्त मंत्रों से एक और बात ध्वनित होती है कि जो चेकितान शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ सुबुद्ध व समझदार पति से है और यह भी व्यापक अर्थ हो सकता है कि जो आरामतलब व आलसी तथा प्रमादी न होकर तपस्वी, श्रद्धाशील हो, जो विवाहकामी कुमार संतानेच्छु होकर एक पत्नी से जीवनयापन करे। पुत्र शब्द का प्रयोग यहाँ उपलक्षण-भाव से संतान अर्थ में हुआ है। संतान में पुत्र-पुत्रियाँ दोनों सम्मिलित हैं। संतान से जहाँ वंश संजीवित रहता है, वहीं वंश की उत्तम परंपराओं का सतत संचालन होता रहता है।

संतानोपत्ति का लक्षण है सुसंतान बनाकर राष्ट्र और संसार को उत्तम नागरिक या नागरिका प्रदान करना। इस संदर्भ में एक नया तथ्य उभरकर समक्ष आता है कि आज जो भ्रूणों के परीक्षणोपरांत कन्या-भ्रूणों को नष्ट किया जा रहा है और यह कार्य तीव्रता व गति से हो रहा है बहुत शोचनीय है। सरकार ने संविधान में इसके लिए एक धारा ही अलग से बना दी कि परीक्षणोपरांत जो कन्या-भ्रूण नष्ट किए जा रहे हैं यह बहुत अनुचित है। तभी तो भ्रूण परीक्षण पर रोक लगा दी गई है। प्रसव- पूर्व लिंग ज्ञान करना दंडनीय अपराध है। कन्याओं की दर घट रही है जो सृष्टि में एक प्रकार का असंतुलन उपस्थित करती है। पुत्र-पुत्रियों की आवश्यकता समाज को सामान्य रूप से है। कल्पना करें कि यदि कन्याएँ नहीं होंगी तो कुमार पति नहीं बन पाएँगे। विवाह के बिना गृहस्थाश्रम का निर्माण कैसे संभव होगा? आज सरकार भी इस ओर चिंतित व व्यग्र दिखाई पड़ती है।

मंत्र में आए ऋत्व्य शब्द में तीन भाव निहित हैं: ऋतु अनुसार व्यवहार और व्यवस्था, ऋताचार, ऋतुगामिता। पत्नी इतनी सुशिक्षित व सुदक्ष हो और ऋतु के अनुसार खान-पान की व्यवस्था करे। वह ऋताचारिणी हो। स्वयं कुल की मर्यादाओं का पालन करने वाली हो और वह ऋतुगामिनी हो। विलासिनी न होकर संतानोत्पत्ति के लिए अपने शरीर का पति के शरीर से स्पर्श करने वाली, अर्थात् पति के अतिरिक्त किसी अन्य के शरीर का स्पर्श न करने वाली हो। पतिव्रता पत्नी होने का निर्देश है। ऐसा लगता है, कि एड्स जैसी भयानक बीमारी पहले भले न रही हो परंतु बहुत कुछ संभव है कि उसके स्थान पर दूसरा शब्द प्रयुक्त होता रहा हो, लोग सचेत प्रतीत होते हैं। तभी पाणिग्रहण जैसा शब्द हमें उपलब्ध होता है, जिसका अर्थ है एक कन्या के समग्र जीवन के लिए हाथ पकड़ना। ऋग्वेद के दशम मंडल में एक मंत्र और उपलब्ध होता है–

''गृश्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं, मयां पत्या जरद् अष्टिर्यथास:।
भगो अर्यामा सविता पुरंधिर् महयं त्वादुर्गार्हपत्याय देवा:।

**(ऋग्वेद, १०-८५-३६)**

यही मंत्र अथर्ववेद चौदहवें कांड के प्रथम सूक्त में भी यथावत मिलता है, जिसका अर्थ है ''मैं सौभगत्व अर्थात् सौभाग्यशाली बनाने के



लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ। तू मुझ पति के साथ यथावत् वृद्धावस्था बिताने वाली है। तेरे भाग्यशाली न्यायशील बुद्धिमान पिता ने, देवों और देवियों ने, तुझे गृह-व्यवस्था के लिए मुझे दिया है।''

विवाह संस्कार में पाणिग्रहण के लिए इस मंत्र का विनियोग है। इसके पाठ के साथ पति अपने दाहिने हाथ से पत्नी का दाहिना हाथ ग्रहण करता है। वैसे भी देखा जाता है जब दो लोग आपस में मिलते हैं तो एक-दूसरे से दाहिना हाथ ही मिलाते हैं। दाहिने हाथ का ध्वन्यात्मक भाव है परम सहायक वह भी हृदय से। वह हाथ मिलने वाला मेरा शक्ति केंद्र है, मेरा परम सहारा है। तभी तो लोग कह देते हैं कि अमुक व्यक्ति मेरा दाहिना हाथ है, अर्थात् परम सहायक है। हाथ मिलाने की परंपरा प्राचीन है। पहले भी हाथ मिलाते थे और आज भी मिलाते हैं पहले हाथ मिलाने का तात्पर्य जीवन भरके लिए एक दूसरे का हो जाना होता था। आज-कल तो यह केवल एक सामाजिक शिष्टाचार भर बनकर रह गया है। पहले पूरे जीवन-भर सुख-दुख में साथ देते थे। अब कोई ऐसी भावना नहीं रहती। हर किसी से हाथ मिलाना मिथ्या आचरण है। हाथ उसी से मिलाना चाहिए जिसके साथ आजीवन अटूट मित्रता रखनी हो। पाणिग्रहण करके पति-पत्नी सदा के लिए एक दूसरे के हो जाते हैं। पाणिग्रहण एक पवित्र प्रतिज्ञा है एक दूसरे को ऊँचा उठाने की एक दूसरे के सौभाग्य की अभिवृद्धि की। तभी तो पति कहता है ''हे देवि, मैं अपने को सौभाग्यशाली बनाने के लिए तेरा हाथ पकड़ता हूँ।'' पत्नी को भी चाहिए कि पति की इस पवित्र प्रतिज्ञा में पूर्ण सहयोग प्रदान करे। पत्नी पतिगृह में पहुँचकर ऐसा शालीन व्यवहार करे कि दोनों का जीवन सुखी व संपन्न हो सके। इस मंत्र में एक बात और स्पष्ट है कि पति कहता है कि तू मेरे साथ वृद्धावस्था बिताने वाली है। पति की कामना में पत्नी के आयुष्य-वृद्धि की प्रार्थना शामिल है कि वह वृद्धावस्था तक रहे, क्योंकि युवावस्था में पति-पत्नी को आपसी सहयोग की जितनी जरूरत होती है उससे अधिक वृद्धावस्था में आवश्यकता होती है। युवावस्था में तो काम का प्रभाव रहता है, लेकिन वृद्धावस्था में सात्विकता प्रवेश कर जाती है। मंत्र में एक अन्य बात परिलक्षित होती है कि तेरे न्यायशील भाग्यशाली बुद्धिमान पिता ने तथा देवों-देवियों ने तुझे

मुझे गृहस्थी की व्यवस्था में सहायता हेतु दिया है। कन्या के पिता को भाग्यशाली व बुद्धिमान कहा गया है अर्थात् पुत्री या कन्या का पिता होना अच्छे भाग्य का लक्षण है दुर्भाग्य का नहीं। और आज कन्या के जन्म पर लोग माथा ठोककर भाग्य पर दुर्भाग्य की गुहार लगाते हैं। इसके लिए कितनी पवित्र प्रेरणा यहां से उपलब्ध होती है। कन्या का पिता साधारण नहीं, उसे न्यायशील व समझदार कहा गया है। पत्नी का मुख्य कर्तव्य गृह की सुंदर व्यवस्था करना है। इसे नहीं भूलना चाहिए।

गृहिणियाँ चाहे कोई भी व्यवसाय करें पर उन्हें घर की व्यवस्था का ध्यान रहना चाहिए। गृहव्यवस्था से घर के साथी व्यक्ति सुखी, निरोगी और समुन्नत होकर आल्हादित होते हैं। यदि पत्नी सुघड़ व सुबुद्ध न हो तो गृह व्यवस्था सुदृढ़ कैसे हो सकेगी। इसीलिए पुत्र की अपेक्षा पुत्री का होना ज्यादा भाग्य का सूचक है। मनुस्मृति (9-28) के अनुसार पत्नी पर पुत्रोत्पत्ति, धार्मिक कृत्य, सेवा, सर्वोत्तम आनंद, अपने तथा अपने पूर्वजों के लिए स्वर्ग की प्राप्ति निर्भर रहती है।

अत: स्पष्ट है कि धर्म, संपत्ति, प्रजा एवं रति ये विवाह के प्रमुख उद्देश्य हैं। आपस्तम्बगृह्सूत्र में भी पत्नी के महत्व पर विस्तृत चर्चा है। एक ही पत्नी के साथ संबंध बनाने की बात सभी स्मृति-ग्रंथों में की गई है। जिस प्रकार कन्या के चुनाव की प्रमुख बातों का निर्देश प्राप्त होता है उसी प्रकार वर के लिए भी विशेष निर्देश प्राप्त होते हैं :

''बुद्धिमते कन्यां प्रयच्छेत्।'' (आश्वलायन गृह्यसूत्र 1-5-2) अर्थात् बुद्धिमान वर को ही कन्या देनी चाहिए। अच्छे वर के लक्षण बताते हुए आपस्तम्बगृह्यसूत्र में निर्देश है कि अच्छा कुल सच्चरित्र शुभगुणों से युक्त ज्ञान और सुंदर स्वास्थ्य से समन्वित वर ही कन्या के योग्य है। सच्चरित्र शब्द का संकेत एक पत्नी के साथ संभोग करने से है। पराई स्त्रियों से संभोग पूर्णतया वर्जित हैं। यदि इन तथ्यों पर विचार करें तो एड्स जैसे भयंकर दावानल से बचा जा सकता है। आज बेरोजगारी, गरीबी व भुखमरी की अपेक्षा समग्र विश्व इसी से चिंतित व परेशान है। शाकुंतल नाटक में भी शकुंतला के परिणयोपरांत अनुसूया कहती है:

**''गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत्प्रथमः संकल्पः।''**

अभिज्ञानशाकुंतलम्– चतुर्थ अंक



अर्थात् गुणवान वर को कन्या देनी चाहिए। वृहत्पाराशर में श्रेष्ठ वर के आठ लक्षण बताए गए हैं। जाति, विद्या, युवावस्था, बल, स्वास्थ्य, अन्य लोगों का आलंबन, अभिकांक्षा और धन। कात्यायन ने वर एवं कन्या दोनों के लिए समान तालिका बनाई है। वर के दोषों में पागलपन, पाप, कुष्ठा, नपुंसकता, स्वगोत्रता, अंधापन, मिर्गी तथा बहिरापन आदि की गणना करते हुए ऐसे वर को कन्या देने का निषेध किया है। महाभारत के आदिपर्व (131-10) में तथा उद्योग पर्व (33-117) में बराबर धन वाले एवं बराबर विद्या वाले वर के लिए कन्या देने का निर्धारण किया है। याज्ञवल्क्य स्मृति में नपुंसकों को विवाह के लिए अयोग्य माना है क्योंकि नपुंसक व्यक्ति संतानोत्पत्ति नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में सृष्टि में अव्यवस्था होगी। शतपथ ब्राह्मण (1-2-5-16) ने बड़े स्तनों, नितंबों एवं कटियों वाली कन्याओं को आकृष्ट करने वाली कहा है। बुद्धिमती, सुंदर, चरित्रवती, स्वस्थ एवं शुभलक्षणों वाली कन्या के साथ विवाह का निर्देश आश्वलायन गृह्यसूत्र (1-5-3) में मिलता है। बाह्य और आंतरिक रूप से शुभलक्षणों वाली कन्या को ग्रहण करने की सलाह शांखायन गृह्यसूत्र (1-5-6) में दी गई है।

उम्र या अवस्था के बारे में भी शास्त्रकार मौन नहीं हैं। गौतम, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य एवं अन्य ऋषियों ने निर्देश दिए हैं कि कन्या वर से कनीयसी हो, अर्थात् छोटी हो। कामसूत्र (3-1-2) में कम से कम तीन वर्ष छोटी होने की बात मिलती है। अवस्था के विषय में विचार करना आवश्यक है। कम उम्र की कन्या स्वयं व परिवार की देखरेख करने में असमर्थ रहती है। उसका शरीर भी पूरी तरह परिपक्व नहीं होता है। शीघ्र शिशु होने से उसका शरीर बिगड़ता जाता है। अत: युवा होने पर ही विवाह किया जाना चाहिए। मनुस्मृति (3-4) में अक्षत योनि कन्या से विवाह उचित बताया गया है, अर्थात् जिसके साथ एक बार भी संभोग न किया गया हो वही कन्या वर के लिए ग्राह्य है। यह एड्स से बचने की ओर भी निर्देश देता है। ऋग्वेद के दसवें मंडल में यह अत्यंत महत्वपूर्ण मंत्र उपलब्ध होता है :

**सुमंगलीरियं वधुरिमां समेत पश्यत।**
**सौभाग्यं अस्यै दत्वा यथास्तं वि परेतन॥**(ऋग्वेद, 10-85-33)

और यही मंत्र अथर्वेद के चौदहवें कांड के दूसरे सूक्त में भी उपलब्ध होता है। जिसका भाव यह है कि यह सुमंगली सुलक्षण वधू है। आओ इस वधू को देखो। इस वधू के लिए सौभाग्य का आशीर्वाद देकर अपने-अपने घरों को जाओ।

यहाँ मंगली शब्द सुलक्षणा नारी से है। वधू को सुमंगली कहा जा रहा है। वह कल्याणकारिणी है। कल्याण अथवा सुख-संपादन सुंदर सेवा से होता है। भार्या का कर्तव्य है कि वह अपनी सेवा द्वारा अपने परिवार और समाज का सुख संपादन करे। ऋतुओं के अनुसार भोजन आदि का प्रबंध करे। शयन और जागरण के प्रति सजग रहे। उसका जीवन आलस्य व प्रमाद रहित रहे। पत्नी पूर्णतया स्वस्थ रहे। तभी अपनी व पूरे परिवार की देखरेख कर सकती है। सुलक्षणा शब्द में दो तरह के भावों का समावेश है। एक तो देखने में वह शोभनीयता से युक्त हो, दूसरा सुंदर लक्षणों से युक्त चेष्टावान हो। सुंदर लगने के लिए उसे अपने केश आदि ढंग से सँवारने चाहिए, त्वचा का पूरा ध्यान रखना चहिए। नेत्र, दंत, ओष्ठ व नख, वस्त्र आभूषणों को सदैव स्वच्छ रखना चाहिए। नेत्रों के मिलन उन्मीलन, लज्जापूर्ण दृष्टिपात, बोलने में सत्यवादिनी एवं मृदुभाषिणी हो। चाल मधुर हो। उठना-बैठना शालीनता से पूर्ण हो। हँसने-बोलने में नियंत्रण हो। शृंगार में जो वेद-विहित है उसी का अनुपालन करे। ऐसी सुयोग्य वधू जिस वर को प्राप्त होती है उसका जीवन धन्य हो जाता है। ऐसी सुलक्षणा वधू को सबका आशीष प्राप्त होता रहता है। सदैव व विभिन्न ऐश्वर्यों से संपन्न रहती है। उसका दर्शन ही देवी तुल्य रहता है।

उनकी प्रौढ़ता होने पर विवाह के बारे में उन्हें स्वयं ज्ञान हो तभी उनका विवाह किया जाए। ऋग्वेद के दसवें मंडल में कहा गया है कि जब कन्या सुंदर है और विभिन्न आभूषणों से आभूषित है तो वह स्वयं पुरुषों के झुंड में से अपना मित्र ढूँढ लेती है।'' अत: लड़की प्रौढ़ होने पर श्रेष्ठ वर की पहचान स्वयं भी कर ले तब विवाह किया जाए। गृह्य सूत्रों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि लड़कियाँ बिलकुल युवावस्था के पास पहुँच जाने के उपरांत ही विवाहित होती थीं। गोभिल और वैखानस ने कन्या का एक लक्षण नग्निका कहा है। नग्निका का तात्पर्य उस कन्या से है जिसका मासिक धर्म सन्निकट है अर्थात् जो संभोग के योग्य है।



4121 HRD/07—6A

ऐसा हिरण्यकेशिगृह्यसूत्र में भी आया है :'' ताभ्यामनुज्ञातो भार्याभुपगच्छेत् सजातां नग्निकांबह्म चारिणीं सगोत्राम्''। (हिरण्यकेशिगृह्यसूत्र, 1-19-2)

विवाह के बाद दांपत्य साधना के लिए भी ऋग्वेद में निर्देश मिलते हैं:

**''मां वां वृको मा वृकीआं दधर्षीन्, मापरि वर्क्तम् उत् याति धक्तम्।**
**अयं वां भागो निहित इयं गी: दस्राव इमे वां निधयो मधूनाम्॥**

(ऋग्वेद, 1-183-4)

दांपत्य-साधना ही प्रमुख साधना है। मंत्र का तात्पर्य है कि ''तुम दोनों (पति-पत्नी) को न वृक दबाए न वृकी तुम दोनों एक दूसरे का परित्याग न करो और न मर्यादाओं का उल्लंघन करके एक दूसरे को जलाओ। तुम दोनों के लिए भद्र वाणी विहित है।'' आजकल हम देखते हैं पति-पत्नी में थोड़ीसी बात को लेकर तलाक की नौबत आ जाती है। कोई किसी की बात सहन करने में अपने को सक्षम नहीं पाता। तलाकों की संख्या में भयंकर वृद्धि हुई है। इस मंत्र से यह ध्वनित होता है कि एक दूसरे का जब हाथ में हाथ ले लिया तो परित्याग न करो। न एक दूसरे को ऐसी बात कहो जिससे किसी को दुख पहुँचे। पति-पत्नी युगल का ही नाम दंपती है। पति ही पिता व पत्नी माता होती है। अत: दंपती का अर्थ माता-पिता भी है।

मंत्र में वृकी व वृक के नाम आए हैं। कामना की गई है कि वे मादा व नर भेड़िए तुम्हें दबा न सके। प्रकारांतर से क्रोध ही वह भेड़िया है और कामुकता ही वह वृकी है जो दंपती को अपनी चपेट में लेकर उन्हें धूल में मिला देते हैं। कामुकता दंपती को निर्लज्ज बना देती है। वहीं क्रोध सदा उन्हें शांति रहित कर देता है। ये दोनों मिलकर विष घोल देते हैं। दूषित वातावरण में बच्चे भी विकार ग्रस्त हो जाते हैं। क्रोधी तथा कामी दंपतियों में सदैव अनबन बनी रहती है। एक दूसरे से रुष्ट रहते हैं दुर्व्यवहार करके एक-दूसरे को जलाते रहते हैं तभी मंत्र में न जलाने का निर्देश किया गया है। दंपती को ''दस्रौ'' बनना चाहिए अर्थात् भद्रकार्य करें। ''दस्रौ'' द्विवचन का शब्द है। यह दोनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिसका तात्पर्य है कि वे कल्याणकारक कार्य कर के अभद्र का विनाश करें। किसी तरह का दुरित न आने दें। मंगलमय वातावरण में बच्चों को भद्र संस्कार मिलते है। मर्यादा



4121 HRD/07—6B

पालन, अनुशासन, सदाचार से जिएँ। परिणामस्वरूप बच्चे सुशील, शालीन स्वत: हो जाते हैं। परिवार पूरा सुखी रहता है। एक दूसरे के प्रति मधुर वाणी का प्रयोग करें। निष्ठापूर्वक कर्तव्य करें। वेदमाता की इस आज्ञा का जिस परिवार में दंपती पालन करते है वहाँ सुख व आनंद की वर्षा होती हैं। ऋग्वेद में भार्या के लिए एक मंत्र और उपलब्ध होता है:

**''परा देहि शामुल्पं ब्रह्मभ्यो वि भजा वसु।**
**कृत्यैषा पद्वती भूत्वा आ जाया विशते पतिम्॥**

(ऋग्वेद, 10-85-29)

अर्थात् पति के घर में अपने के बाद हर कन्या को शारीरिक मल का परित्याग कर देना चाहिए। उदासी छोड़ देनी चाहिए। मंत्र में शामुल्पं का अर्थ बड़ा व्यापक है। पत्नी को चाहिए कि वह सदैव अपना शरीर, कपड़े, आभूषण, स्वच्छ रखे। कांतियुक्त तथा प्रसन्नचित रहे। पति के घर में आने के बाद मायके की स्मृति में माता-पिता के लिंए रोना, उदास रहना अच्छे लक्षण नहीं माने गए। बहुधा देखा जाता है कि जो नारी पति के पास आने पर भी अपनी माता व पिता की तारीफ व स्मृति में पूरा दिन व्यतीत कर देती है और वर्तमान में समक्ष में रह रहे सास-ससुर व पति का बिलकुल ध्यान नहीं देती है उनके घर में कलह शुरू हो जाता है। वधू को दानशील होना चाहिए। मंत्र में ब्रह्मभ्यो अर्थात ज्ञानियों को दान देने की बात कही गई है। अज्ञानियों को बिलकुल नहीं देना चाहिए। अज्ञानियों को दिए गए दान से दुर्व्यसन, दुराचार बढ़ता है। पत्नी को पति का हृदय जीतना भी होता है। पति के हृदय में उसे प्रविष्ट होना होता है। तभी वह स्वामिनी बन पाती है। पति की सहचारिणी उसे बनना होता है। पति के साथ विरोध व असहयोग पूर्ण ढंग से रहने से वह स्वामिनी कदापि नहीं बन सकती। यदि पत्नी अनुकूल आचरणशीला व सहचारिणी बन जाए तो पति का पूरा प्यार व स्नेह उसे ही मिलेगा। कभी यदि पति स्वभाव से दोषयुक्त दिखे तो पत्नी को पूरी नीति-मति से उसे दोष-मुक्त करना चाहिए। लड़ाई झगड़ा कभी नहीं करना चाहिए। ऐसे में तलाक की स्थिति कैसे आएगी?

वधू जब पतिगृह जाए तो कैसा आचरण उसे करना चाहिए इस संबंध में भी ऋग्वेद के चौथे मंडल में निर्देश प्राप्त होता है:



**''आ दस्युघ्ना मनसा याह्यास्तं, भुवत्, ते कुत्सः सख्ये निकामः।**
**स्वे योनौ निषदतं सरुपा वि वां चिकित्सद् ऋत चिद्धनारी।**

(ऋग्वेद, 4-16-10)

अर्थात् दस्युओं को हनन करने की भावना से घर आ विद्वान वीर पति तेरे सरिषत्व में निरंतर कामयमान रहे। समानरूप से दोनों स्वगृह में निरंतर स्थित रहो। ऋतसंचया सदाचारिणी नारी ही तुम दोनों की विचिकित्सा करे।'' वधू के बारे में ऐसी कल्पना है कि वह दस्युओं को नष्ट करने वाली हो। चोरों-लुटेरों को दलित कर सके। नारियों को वीरांगना होना चाहिए। जिससे अपने धन व पति की रक्षा कर सके। कन्याओं को बाल्यावस्था से ही उन्हें सबला बनाना चाहिए जिससे भार्या बनने पर पति की सहायता कर सकें। उन्हें विदुषी भी होना चाहिए। विद्या और वीरता का सामंजस्य होना चाहिए। पति-पत्नी समान गुण वाले हों। ऋत से पूर्ण पत्नी ही विचिकित्सा करने में समर्थ हो सकती है। जिस समाज में सती, साध्वी नारियाँ होती हैं उस समाज का सुधार स्वाभाविक रूप से हो जाता है। सदाचारिणी नारी ही चिकित्सा कर सकती है। चिकित्सा से ध्वनि जो निकलती है उसका भाव सुधार से है। अथर्ववेद के चौदहवें कांड में गृह-पत्नी की विभिन्न विशेषताओं का वर्णन मिलता है :

**''इह प्रियं प्रजायै तेर्विसमऋध्यताम् अस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि।**
**एना पत्या तन्वं सं स्पृशस्वाथ, निर्वि दथमा वदासि॥"**

(अथर्ववेद, 14-1-21)

अर्थात् गृहस्वामिनी जाया पत्नी पति की सहसाधिका है। संतानों को जन्म देने वाली है। परिवार की सुपोषिका है। जाया ही घर है जाया विहीन घर घर नहीं होता। वास्तव में गृहस्थाश्रम एक प्रशिक्षण शाला है जहाँ गृहस्वामिनीत्व का प्रशिक्षण स्वत: होता रहता है। मंत्र कहता है 'हे देवि, तू ठीक प्रकार से कर्तव्यों का निर्वहन कर। ऐसी व्यवस्था कर तेरी प्रजा भद्र हितों से संपन्न हो। यहाँ पत्नी की गहन क्षमता निहित है। गृहपत्नी ऐसी कुशलता से गृह का संचालन करे कि प्रजा का यथायोग्य हित-संपादन हो। घर में रहने वाले उसके व्यवहार से निरोग, स्वस्थ, प्रसन्न तथा आनंदित हों। सभी आत्मीयता के साथ आपस में व्यवहार करें। गृहरक्षण गृह व्यवस्था हेतु जागरूक रह। गृहपत्नी का कर्तव्य होता है कि गृहप्रजा

में सभी को उचित आदर, प्रेम, औदार्य, स्नेह, न्याय व प्यार प्रदान करे। वह देखे कि मर्यादाओं का पालन हो। आगंतुकों का सम्मान धर्मानुष्ठान एवं संस्कारों का संपादन हो।

यहाँ तनू शब्द शरीर का पोषक है। अर्थात् पत्नी पति के अलावा पर पुरूष का स्पर्श न करे। पति भी पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी नारी का स्पर्श न करे। वेदों की इस दिव्य शिक्षा का पालन यदि हो तो पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है। दांपत्य जीवन की पवित्रता ही सच्चा सुख व आनंद दे सकती है। घर में ज्ञान का संपादन होते रहना चाहिए यह विदथ शब्द से ध्वनित होता है। विवेकपूर्ण वचन बोलना चाहिए। गृहपत्नी की वाणी मधुर व हितकारिणी हो। जो गृहपत्नी ज्ञानोपदेश करती है वहाँ सर्वतोभावेन हित संपादित होते रहते है। वह सभी परिजनों को स्नेहयुक्त सलाह देती है। अनुकरणीय आदर्श प्रदर्शित करती है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि विवाह एक वैज्ञानिक संस्कार है जिसके द्वारा गृहस्थाश्रम में सुख, शांति व आनंद आता है। सभी गृहपत्नियाँ वेदमार्ग पर चलें तो क्लेश, कलह तलाक क्यों हों?

❑❑❑

## संदर्भ ग्रंथ


1. ऋग्वेद संहिता
2. अथर्ववेद संहिता
3. मनुस्मृति
4. याज्ञवल्क्य स्मृति
5. अभिज्ञानशाकुंतलम्
6. शतपथ ब्राह्मण
7. आश्वलायन गृह्यसूत्र
8. पाराशर स्मृति
9. आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
10. महाभारत का शांतिपर्व
11. महाभारत का आदिपर्व
12. तांड्यब्राह्मण
13. आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
14. निघंटु




# यौगिक ब्रह्म मुद्रा


● रविकांत श्रीवास्तव


मुद्रा का शाब्दिक अर्थ योग की भाषा में आनंद है। आनंद चाहे मानसिक, आध्यात्मिक या बौद्धिक हो, मुद्रा से इन सभी का अर्थ आनंद से है। नृत्य में भी मुद्रा का प्रयोग होता है। योग विज्ञान में मुद्रा का अलग स्थान है। योग में आसन और प्राणायाम के बीच की स्थिति को मुद्रा कहते हैं। योग में कई मुद्राओं का वर्णन आता है। ज्ञान मुद्रा को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। ब्रह्म मुद्रा की अपनी अलग विशेषता है। ब्रह्म मुद्रा करते समय किसी विशेष आसन या सुखपूर्वक किसी आसन में बैठकर सिर को चारों दिशाओं में विधिपूर्वक घुमाने से एक विशेष आनंद की अनुभूति होती है। सिर को चारों दिशाओं में घुमाने से ब्रह्मा के चार मुख से लिया गया है, इसलिए शायद इसका नाम ज्ञानियों ने ब्रह्म मुद्रा रखा होगा। इस मुद्रा के अनुभव एवं अभ्यास के द्वारा मानसिक, शारीरिक आनंद एवं स्वस्थता का बोध होता है।

ब्रह्म मुद्रा को प्रातःकाल शांत अवस्था में किया जाए तो आनंद की अनुभूति और बढ़ जाती है, साधक हल्कापन एवं स्फूर्ति अनुभव करने लगता है इस मुद्रा को करने से गर्दन दर्द (सर्वाइकल) वालों को लाभ मिलता है, तथा यह थाइरॉइड ग्लैंड एवं कंधे के दर्द को दूर करने में भी सहायक है।


● 69-ई, सेक्टर-4, पुष्प विहार, नई दिल्ली-110017

ब्रह्म मुद्रा की गहराई को प्राप्त करने के लिए शारीरिक संतुलन के साथ साँस का संतुलन भी आवश्यक है। क्रमबद्ध शैली में साँस को संतुलित करने के लिए प्राणायाम की व्यवस्था योग में है। दोनों को संतुलित करने के लिए आसन और प्राणायाम अपने में महत्वपूर्ण है। दोनों ही वैज्ञानिक आधार लिए हुए हैं। शरीर और साँस के संतुलन के पश्चात आनंद की अनुभूति के लिए मुद्रा की व्यवस्था भी योग में है। प्रत्येक मुद्रा को करने का ढंग और महत्व अलग है। आसन शरीर को सुगठित करता है, प्राणायाम साँस को नियंत्रित करता है, मुद्रा आनंद महसूस कराती है। योग में दो चीजों के जोड़ने को योग कहते हैं। यहाँ आसन और प्राणायाम जुड़े हुए हैं।

ब्रह्म मुद्रा को साधक अपनी सुविधानुसार किसी भी आसन में बैठकर कर सकता है। अधिकांशत: इसे पद्मासन, बज्रासन, सिद्धासन या सुखासन में किया जाता है। साधक से पद्मासन या अन्य आसन सहजतापूर्वक नहीं होते हों तों ऐसे में आलती-पालती मारकर सुखासन का प्रयोग करना चाहिए।

पद्मासन में ब्रह्म मुद्रा का अभ्यास करने से शारीरिक लाभ आसन का होता है, रक्त उर्ध्वगामी होता है। पद्मासन में ब्रह्म मुद्रा करने से साधक जब आनंद की अवस्था में होता है तो अधिकतर शरीर का बोध समाप्त हो जाता है और साधक का शरीर ढीला होकर गिरने की स्थिति में हो सकता है, ऐसी स्थिति में पद्मासन ही एक ऐसा आसन है जो बैठने की त्रिकोण अवस्था बनाता है और शरीर की अवस्था को बिगड़ने नहीं देता है साथ ही गिरने से बचाए रखता है। इसलिए लंबे समय तक के अभ्यास के लिए पद्मासन योग की किसी भी शाखा के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। ब्रह्म मुद्रा के लिए नाड़ी शोधन प्राणायाम करना अच्छा होता है। इससे साधक का मानसिक संतुलन ठीक रहता है।

ब्रह्म मुद्रा के लिए कमर और सिर को सीधा रखते हुए हाथों की हथेलियों को गोद में रखें, बाईं हथेली के ऊपर दाहिनी हथेली को रखते हुए गर्दन की नस नाड़ियों को ढीला रखें। सिर को घुमाने से पहले ध्यान को माथे के बीच में रखें, फिर सिर को दाहिनी तरफ एक ही केंद्र (गर्दन), पर घुमाएँ। केंद्र गर्दन होगा वहाँ की नस नाड़ियों में कोई खिंचाव

न हो अन्यथा सिर को घुमाने में गर्दन की नसों में खिंचाव होने से सिर को घुमाते समय ध्यान गर्दन पर चला जाएगा और साधक का ध्यान हट सकता है। ध्यान को माथे पर रखें तथा समस्त आंतरिक क्रियाएँ स्वत: होती रहेंगी उससे साधक को कोई मतलब नहीं होना चाहिए। ब्रह्म मुद्रा में ध्यान माथे पर होते हुए आनंद एवं शांति का अनुभव करते हुए साँस अपने आप नियंत्रित एवं एक ही गति से चलते हुए प्राणायाम स्वत: होता रहता है। ब्रह्म मुद्रा में प्राणायाम और आसन का लाभ अपने आप मिलता रहता है, आनंद एवं शांति की अनुभूति साधक स्वयं अनुभव करता रहता है। धीरे-धीरे सिर को ज्यादा से ज्यादा दाहिने कंधे की सीध में लाएँ तत्पश्चात् सिर को बाएँ तरफ घुमाएँ, बाएँ कंधे को बाईं तरफ आरामपूर्वक ले जाएँ। इसी क्रिया में आनंद एवं शांति साधक को अनुभव होनी शुरू हो जाएगी, माथे पर गुदगुदी अनुभव हो सकती है। आरंभ में साधक को कई तरह के रंग माथे पर नजर आ सकते हैं जैसे- नीला, लाल, पीला, गुलाबी, काला या अन्य रंग दिखाई पड़ सकते हैं। रंग माथे पर रक्त के संचार होने से दिखाई पड़ सकते हैं। बाईं तरफ से वापस बीच में सिर को लाने के पश्चात् सिर को ऊपर की तरफ ले जाना चाहिए, सिर को पीछे लटकाने के पश्चात् सिर को धीरे-धीरे नीचे की ओर लाते हुए ठुड्डी (चिन) को नीचे कंठकूप (नोच) पर लगाते हैं, उसके पश्चात कुछ सेकंड रुकने के बाद सिर को ऊपर उठाते हैं तथा आरंभिक अवस्था में आते हैं। सिर को दाएँ-बाएँ ऊपर-नीचे घुमाने के बाद साधक को ब्रह्म

मुद्रा से ताजगी अनुभव होती है। सिर को घुमाने के अभ्यास को कई दिनों के बाद अधिक देर तक एवं विधिपूर्वक धीरे-धीरे घुमाने के बाद ठुड्डी को कंठकूप से लगाकर सिर को गोलाकार स्थिति में दाईं से बाईं ओर, बाईं से दाईं ओर धीरे-धीरे (Clock-wise-Anti-Clockwise) घुमाने का अभ्यास है।

यह साधक पर निर्भर करता है कि वह मुद्रा को कितनी गंभीरता से करता है। साधक भ्रम में न पड़े कि उसका अनुभव अन्य साधकों के लिए भी वैसा होगा, सबका अपना शारीरिक गठन और मानसिक दृष्टिकोण अलग होता है। साधक को आरंभ में दर्द या तनाव भी पैदा हो सकता है या चक्कर अनुभव हो सकता है। अभ्यास के माध्यम से उसमें क्या परिवर्तन होते हैं साधक को स्वयं अनुभव करना चाहिए।

साधना के समय चक्कर या अन्य तकलीफ अनुभव होती हो तो अभ्यास को बंद कर देना चाहिए तथा अपनी क्षमता के अनुसार ब्रह्म मुद्रा का प्रयोग करना चाहिए तथा धीरे-धीरे इसका अभ्यास बढ़ाना चाहिए। ब्रह्म मुद्रा सिर में दर्द (माइग्रेन) या चक्कर आने वाले व्यक्तियों को या इसको करने में असमर्थ व्यक्तियों को इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए।

ब्रह्म मुद्रा की पूरी क्रिया में साधक आँख बंद रखते हुए ध्यान माथे पर ही रखें। इस मुद्रा से साधक अनुभूति की चरम सीमा पर जा सकता है तथा ताजगी अनुभव कर सकता है।

❑❑❑



# पत्रकारिता और जनसंचार की भाषा: बदलते आयाम

● डॉ. श्रुतिकांत पांडेय

कुछ महीने पहले दिल्ली से प्रकाशित होने वाले हिंदी दैनिक समाचारपत्र नवभारत टाइम्स ने अपने प्रथम पृष्ठ के टेलपीस - जिसे अखबारी भाषा में एंकर या लटकन कहा जाता है, पर नीरेंद्र नागर का एक लेख प्रकाशित किया था जिसका सबब था कि अंतर्राष्ट्रीयता और बाजारीकरण के इस दौर में सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं की ही तरह भाषाएँ भी एक दूसरे से निकटता बढ़ा रही हैं। इस क्रम में शब्दों के आदान-प्रदान के साथ ही संकरीकरण की प्रवृत्ति भी पूरे जोरों पर है।

हिंदी का जो स्वरूप आज हमारे सामने है उसे काफी उदारवादी या लोकतांत्रिक कहा जा सकता है। वह हिंदुस्तान की शख्सियत की तरह बहुरंगी और समन्वयवादी है। उसने अपने संपर्क में आने वाली हर संस्कृति, हर भाषा से शब्द विनिमय किया है। तत्सम के साथ देशी-विदेशी और संकर शब्दों के रूप में हिंदी की शब्द निधि लगातार सक्षम और समृद्ध होती चली है। पृथ्वी पर भौगोलिक परिवर्तनों की ही तरह भाषा के परिवर्तन विभिन्न स्तरों पर धीमी गति से चलते रहते हैं। हाँ, कभी-कभी ये बदलाव इतने त्वरित और रूपांतरकारी होते हैं कि सब

● A.I.B.A.S., पत्रकारिता और जनसंचार, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

तरफ वाद-विवादों, समर्थन-विरोध और मत-मतांतर का वातावरण दिखने लगता है।

यह बात केवल मात्र हमारी ही राष्ट्रभाषा के साथ व्यवहार्य नहीं है बल्कि गौर से देखें तो दुनिया की हरेक प्रभावशाली भाषा आज त्वरित संक्रमण के ऐसे ही दौर से गुजर रही है। एक अनुमान के अनुसार ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी में हर साल लगभग 300 हिंदी शब्द समायोजित किए जा रहे हैं। ध्यान देने योग्य बात है कि यह तथ्य उस भाषा के बारे में है जिसने अपनी तमाम उलझनों के बावजूद कभी अपने अस्तित्व को बड़ी हठधर्मिता के साथ दुनिया भर में फैलाने का प्रयास किया था। ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश शासन जब भारत में शिक्षा के स्वरूप निर्धारण की ऊहापोह में उलझे थे तब तात्कालिक भारतीय समाज की शैक्षिक और भाषायी पृष्ठभूमि को नकार कर इस देश पर अंग्रेजी और अंग्रेजियत को थोपने का जो कुत्सित प्रयास किया गया था वह कुछ नहीं बल्कि ब्रितानी साम्राज्यवाद के प्रसार का भाषायी हथियार था। उस जमाने में भाषागत गौरव और दृढ़ता का आलम यह था कि लॉर्ड मैकॉले ने अंग्रेजी को पश्चिम की सर्वप्रमुख भाषा बताते हुए इसे ज्ञान-विज्ञान का सर्वोत्तम माध्यम करार दिया था। लेकिन आज अगर वही भाषा अमरीकी खुलेपन की पिछलग्गू हुई और बड़ी संख्या में हिंदी और दूसरी भाषाओं के सटीक और व्यावहारिक शब्दों को बेझिझक स्वीकार कर रही है तो कहना होगा कि भाषायी कट्टरता का दौर अब लद चुका है और वर्तमान युग भाषायी समायोजन का स्वर्णकाल है।

हो सकता है कि यह बात भाषा प्रयोग के सभी क्षेत्रों के लिए समान रूप से लागू न हो। अनेक भाषा साधक इसे भाषायी स्वच्छंदता, उन्मुक्तता कह सकते हैं। उनकी नजरों में भाषा की यह विद्रूपता ज्ञान और गांभीर्य के अभाव का सहज परिणाम हो सकती है। भाषा शास्त्रियों और वैयाकरणों को आज की युवा पीढ़ी की जबान, भाषा और लहजा सुनकर हँसी या रोना आ सकता है।

लेकिन अब इसे समय की मांग कहें या व्यावहारिकता कि आज का समाज इस 'दो और लो' या 'give and take' की प्रवृत्ति से जब दूसरे किसी मामले में बचा नहीं है तो भाषा के विषय में भी अछूता नहीं रह



सकता। सच तो यह है कि आज समस्त भाषा परिवारों और उनके सदस्यों के बीच कटुता और हठधर्मिता की कोई गुंजाइश बाकी रह नहीं गई है।

शिक्षा, रोजगार और पर्यटन के सिलसिले में आज मनुष्यों का गाँवों से शहरों, शहरों से महानगरों और देश-विदेशों का आवागमन कई सौ गुना ज्यादा हो गया है। इन दशाओं में भाषाओं की पारस्परिक अंतर्क्रिया और शब्द विनिमय बहुत ही सहज घटना है। परिणामतः भाषाएँ भी भूमंडलीकरण की राह तलाश रही हैं। इसे देखते हुए बहुभाषी नगरीय समाज के लिए किसी एक भाषारूप से दृढ़ संपर्क बनाए रखना ऐसा ही कठिन है जैसे कि आजकल शुद्ध हवा में साँस ले पाना। वैसे भी भाषायी संकीर्णता का दौर अब इतना पीछे छूट चुका है कि उसकी यादें भी यथारूप अवशिष्ट नहीं रही हैं।

ऐसा नहीं है कि भाषायी सहजता की यह प्रवृत्ति अपनी तरह की पहली या अनूठी घटना हो। वास्तव में वैदिक संस्कृत से आधुनिक हिंदी तक की जो यात्रा हम भाषा के इतिहास के अंतर्गत पढ़ते हैं वह सहजीकरण या सरलीकरण की इसी प्रवृत्ति की स्पष्ट परिचायक है। किसी भी भाषा के जो कुछ मूल तत्व होते हैं उनमें परिवर्तनीयता और सामंजस्य सर्वप्रमुख हैं। आज क्या हम निस्संदेह कह सकते हैं कि हिंदी का जो रूप आज मानक भाषा कहलाता है वह पूरी तरह विशुद्ध और अपमिश्रणमुक्त है। और यदि ऐसा नहीं है तो आज भाषायी शुचिता और संप्रभुता का दावा करना भी नितांत बेमानी है।

अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ और जनसंचार के अन्यान्य माध्यम अपने मौलिक रूप में समाज के दर्पण होते हैं। उनका लक्ष्य सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं और उनके विशिष्ट परिप्रेक्ष्यों को सार्वजनिक करना है। आजकल पूरी दुनिया में जो राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक परिस्थितियाँ विद्यमान हैं उन्हें देखते हुए जनसंचार की भूमिका काफी संवेदनशील हो गई है। सूचना की शक्ति, तीव्रता और सटीकता हर व्यवस्था, हर गतिविधि, हर निर्णय के प्राणतत्व हैं। इसलिए उनका व्यवस्था, सरकार और समाज के साथ हर मामले में कदम से कदम मिलाकर चलना नितांत अनिवार्य है।

एक समय था जब अखबार और पत्र-पत्रिकाओं की भाषा -

विद्यार्थियों और नवसिखुओं के लिए आदर्श मानी जाती थी। शुद्ध और स्तरीय भाषा को जनसंचार माध्यमों का प्राण कहा जाता था। पत्रकारिता सूचना के जनाधिकार के साथ ही भाषा की अभ्यर्चना का भी माध्यम मानी जाती थी। पत्र-पत्रिकाओं से लेखकों का और साहित्य सृजन से संपादकों का संबंध अनिवार्य जैसा समझा जाता था और समाचारपत्र व पत्रिकाएँ नवीन रूझानों के प्रतिमान के रूप में भाषायी संक्रमण को प्रतिबिंबित करते थे।

लेकिन आज पत्रकारिता विशुद्ध व्यवसाय है और भाषा संपादकों और पाठकों के बीच संप्रेषण के माध्यम से अधिक और कुछ नहीं है। समाचारपत्र, संपादक, पत्रकार और जनसंचार के अन्यान्य स्तंभ किसी भाषा के कर्मठ प्रहरी नहीं रहे हैं। उनका दायित्व भाषा के स्वरूप को संजोना सँवारना नहीं रहा। भाषायी अस्मिता और गरिमा के संरक्षण का दायित्व संचार माध्यमों की प्राथमिकता से कब का विदा हो चुका है।

इन सबका सहज परिणाम यह है कि जो भाषायी खिचड़ी आज के युवा वर्ग की बतकहियों में पकती है वही अखबारों और दूसरे समाचार माध्यमों में भी परोसी जाती है। इसका एक लाभ तो यह है कि खानेवाली खिचड़ी की ही तरह यह भाषा भी पाठकों के जहन में आसानी से जज्ब हो जाती है। दूसरे, अनुवाद विधि या व्युत्पत्ति की प्रक्रिया द्वारा निर्मित शब्दों से उत्पन्न भाषायी जटिलता, समाचार या सूचना के बोध में बाधा नहीं बनती। तीसरे, आजकल जबकि नगर निवासी साधारण शिक्षित लोग भी अपनी सहज भाषा में अंग्रेजी और दूसरी भाषाओं के दर्जनों शब्दों का धड़ल्ले से इस्तेमाल कर रहे हों तो अखबार को एक नई और परिवेश के हिसाब से अजनबी शब्दावली का प्रयोग करके स्वयं को अनूठा या भिन्न दिखाने का प्रयास करने से बचना चाहिए।

हाँ, विद्यालयी पत्र-पत्रिकाएँ या विशुद्ध साहित्यिक उद्देश्य से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रख सकती हैं क्योंकि उनके पाठकों का एक सुनिश्चित वर्ग होता है जो इस स्तरीय भाषा के निहित रस का आस्वादन कर सकता है। समाचारपत्र और जनसंचार के अन्य माध्यमों को यदि सूचना प्रसार के अपने दायित्व को



यथार्थतः निभाना है तो भाषा शिक्षक की भूमिका से त्यागपत्र देना अभिनंदनीय होगा।

इतना सब होते हुए भी पत्रकारिता और जनसंचार की वर्तमान भाषा तथा शब्दावली को बेलगाम या अनियमित कहना ठीक न होगा। हर समाचारपत्र और न्यूज चैनल भाषा के मामले में संजीदगी और संवेदनशीलता की किसी सुनिश्चित परिपाटी का पालन अवश्य करता है। यह भाषा समाचारपत्र या चैनल के प्रसार क्षेत्र में समझी और बोली जाने वाले सर्वसामान्य भाषारूप के निकट होती है। इस मामले में भी समाज के उस वर्ग को प्राथमिकता दी जाती है जो प्रबल होता है, जिसके पास क्रय-शक्ति और जनमानस को प्रभावित करने की क्षमता होती है। निश्चित तौर पर यह युवा वर्ग ही है।

पत्रकारों, एंकरों, संपादकों और पाठकों में वर्ग का प्रतिशत वस्तुतः काफी ज्यादा है। ये लोग न केवल हिंदी के चालू रूप के प्रयोग में दक्ष हैं बल्कि विदेशी शब्दों के यथारूप उच्चारण के प्रति भी पूरी तरह सजग हैं। इससे अभ्यागत शब्दों के सत्कार का आभास तो होता ही है साथ ही उनके बोध तथा पहचान पर भी कोई संकट नहीं मंडराता।

प्रायः सभी जनसंचार माध्यम शब्द-चयन के मामले में अघोषित रूप से एक चार-सूत्रीय नीति का अनुपालन करते हैं। सूचना या समाचार के प्रसार के लिए उनका सर्वप्रथम प्रयास सरल हिंदी शब्द तलाशने का होता है। ऐसा शब्द उपलब्ध न होने पर सरल उर्दू या हिंदुस्तानी शब्द ढूंढा जाता है। और अगर परिस्थितिवश ऐसा कोई उपयुक्त शब्द न मिल पाए तो कोशिश की जाती है कि सरल अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया जाए। लेकिन यदि किन्हीं दुर्लभ परिस्थितियों में प्रयोग और समझ की दृष्टि से कोई सरल अंग्रेजी शब्द भी आपकी अपेक्षा पर खरा न उतरे तो अंततः कठिन हिंदी या पारिभाषिक शब्द के प्रयोग से संप्रेषण का लक्ष्य हासिल किया जाता है।

❑❑❑

# अमेरिका में हिंदू-मंदिर

● संतोष अग्रवाल

अभी कुछ समय पूर्व ही मुझे अमेरिका की यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहाँ मैंने देखा कि अमेरिका में भारतीयों की संख्या पर्याप्त है। अकेले न्यूयार्क में ही लाख-डेढ़ लाख भारतीय हैं। हालाँकि अमेरिका में कुल 50 राज्य हैं, पूर्व के 21 राज्यों में भारतीयों की संख्या न्यूयार्क राज्य को छोड़कर लगभग 29 लाख है। न्यूयार्क में सबसे अधिक भारतीय हैं। भारतीय वहाँ पर आप्रवासी हैं भारत मूल के नहीं। आप्रवासी होने के नाते वह अपने साथ खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज और संस्कृति भी ले गए। हालाँकि वहाँ के वातावरण के अनुसार रहने में उन्होंने अपने आप को कुछ परिवर्तित भी किया। वेश-भूषा में परिवर्तन आया, खान-पान में परिवर्तन आया और रहन-सहन में भी परिवर्तन आया। किंतु फिर भी अपनी संस्कृति और रीति-रिवाज को बनाए रखने में वे सहर्ष प्रयत्नशील हैं।

मुझे पता चला कि आज से लगभग 30 वर्ष पहले तक न वहाँ कोई मंदिर था न कोई पंडित उपलब्ध होता था। और न ही कोई भारतीय परिधान शादी के प्रयोजनार्थ मिल पाता था। धीरे-धीरे भारतीयों की संख्या में वृद्धि हुई और अब स्थिति यह है तीन मंदिर अकेले फ्लशिंग में ही बन गए हैं। फ्लशिंग में भारतीयों की संख्या सबसे अधिक है। वास्तविकता यह भी है कि प्रारंभ में अमेरिका पहुँचने वाले भारतीय फ्लशिंग में ही अपना निवास ढूँढते हैं। एक तो वहाँ पर फ्लैट मिल जाते हैं दूसरे वहाँ

● ए-77, स्मृति, मधुवन, दिल्ली-110092



पर मेन स्ट्रीट है जो कि बहुत अच्छा मार्किट है तथा न्यूयार्क शहर में जाने के लिए यहाँ से सब-वे ट्रेन व बस आदि सरलता से मिल जाती हैं।

सबसे पहले यहाँ पर ''हिंदू सेंटर'' के नाम से मंदिर का निर्माण हुआ। हालाँकि इसके निर्माण में पर्याप्त कठिनाई उठानी पड़ी थी। इसके बाद दक्षिण भारतीय लोगों ने ''गणेश टेम्पल'' बनवाया। तीसरा मंदिर ''स्वामी नारायण टेम्पल'' है। यह वहाँ के गुजराती समाज ने बनवाया है।

गुजराती समाज अपनी संस्कृति को बनाए रखने में विशेष रूप से सक्रिय है। उनके द्वारा प्रति 20 वर्ष के बाद भारत के विभिन्न नृत्यों से संबंधित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम विश्व के अलग-अलग कोनों में रखा जाता है। इस बार यह अमेरिका के न्यूजर्सी शहर में रखा गया था। इसकी वीडियो फिल्म देखने से इसकी सहजता व भव्यता का अंदाजा सरलता से लगाया जा सकता है। एक पूरे एकड़ में फैले प्रांगण में विभिन्न स्थलों में यह कार्यक्रम दिखाया गया था। कहीं पर भंगड़ा तो कहीं पर गुजरात का गरबा। कहने का तात्पर्य यह है कि भारत के हर कोने की झाँकी वहाँ प्रस्तुत थी। इसके साथ ही खाने-पीने की भी बहुत अच्छी व्यवस्था की गई थी। उसमें भी भारतीय व्यंजन थे जिनके मूल्य भी बहुत ही सामान्य रखे गए थे। हिंदू संस्कृति का इतना विराट दर्शन जितना वहाँ मिल रहा था एक स्थल पर मिलना भारत में ही कठिन है विदेश की तो बात ही क्या।

''स्वामी नारायण टेम्पल, फ्लशिंग'' के इस मंदिर में प्रसाद की बहुत ही अच्छी व्यवस्था यह है कि वह एक डिब्बी में बंद सूखे मेवे व मिश्री का होता है। उत्तरी अमेरिका में 11 बड़े स्वामी नारायण टेम्पल हैं। ये मंदिर वोचा संन्यासी स्वामी नारायण संस्था द्वारा संचालित हैं। इस संस्था के 75 बहुत सक्रिय सेंटर भी हैं। इस संस्था का अमेरिका में पंजीकरण अगस्त 1970 में हुआ था। वर्ष 1995 में इसने अपनी रजत जयंती मनाई। यह संस्था स्वामी नारायण द्वारा व्यक्त शांतिमय शिक्षा पर आधारित एक सामाजिक-आर्थिक आंदोलन है। इसकी गतिविधियाँ संक्षेप में मुख्यतया: सामाजिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक एंव नैतिक हैं। ये 11 बड़े मंदिर एडीसन न्यूजर्सी, सेनहोज मिलपिटस कैलिफोर्निया, बेस्टन स्टो एफ ए, डलास डलास टी एक्स, ओरलैंडो ओरलैंडो, हाउएटन स्टेफोर्ड टी एक्स, फ्लशिंग

न्यूयार्क, कनाडा, अटलांटा जार्जिया, एलस कैलिफोर्निया और शिकागो इलूनस में स्थित हैं।

**इस संस्था के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं:**

1. समग्र रूप में जीवन स्तर सुधारते हुए परिवर्तनमय संसार की आवश्यकताओं का सामना करना।
2. सांस्कृतिक, धार्मिक और जातीय सहिष्णुता को प्रोत्साहित करना।
3. नशायुक्त समाज बनाना।
4. युवाशक्ति को सृजन कार्यों में लगाना।
5. आध्यात्मिक शिक्षा देना।
6. नैतिकता, सामाजिकता, आध्यात्मिकता से उन्नत समाज की रचना।

फ्लशिंग के स्वामी नारायण मंदिर में सामने कृष्ण-राधा, अक्षर-पुरुषोत्तम, गुरु जी, गणेश, हनुमान जी की मूर्तियाँ हैं और दाईं ओर प्रमुख स्वामी जी की मूर्ति है। इनके आध्यात्मिक गुरु प्रमुख स्वामी जी महाराज हैं।

**हिंदू सेंटर :** – हिंदू सेंटर तीन मंजिला है। सबसे ऊपर पार्टी के लिए हाल व विश्रामगृह है। इससे नीचे की मंजिल पर दोनों ओर मूर्तियाँ हैं एक ओर छह और दूसरी ओर पाँच। छह मूर्तियों में राम-सीता, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, विष्णु-लक्ष्मी, नारायण शेषनाग तथा दूसरी ओर हनुमान, संतोषी माता, ब्रह्मा, सरस्वती और गणेश की मूर्तियाँ हैं। इससे नीचे के तल पर लक्ष्मी-नारायण, देवी दुर्गा व शिव शंकर की मूर्तियाँ हैं। उसके नीचे बेसमेंट में कभी-कभी माता की चौकी भी लगती है और भेंटें गाई जाती हैं।

**गणेश मंदिर :** – दक्षिण भारतीय शैली में बना यह मंदिर दक्षिण भारतीय संस्कृति को अपने में संजोए है। द्वार से प्रवेश करते ही बाईं ओर इसके अंदर मुख्य मूर्ति गणेश जी की है जो बीच के एक बड़े कमरे में स्थापित है। इसके बाहर एक ओर शिव मंदिर की मूर्तियां तथा एक छोटी मूर्ति गणेश जी की अलग से विराजमान है। इसके साथ के एक छोटे से कमरे में शिव लिंग की स्थापना की गई है।

इसके सामने नौ ग्रह की एक चबूतरे पर नौ मूर्तियाँ हैं। ठीक इसके सामने ही नारियल तोड़ने की व्यवस्था की गई है। दक्षिण भारत में नारियल का प्रसाद विशेष रूप से प्रसिद्ध है। प्रवेश द्वार के अंदर की



4121 HRD/07 –7A

ओर छोटी-छोटी मूर्तियाँ भी दोनों ओर हैं। इसमें भी एक बेसमेंट है। मंदिर के बाहर प्रवेश द्वार पर दोनों ओर हाथी बने हुए हैं।

**इस्कॉन मंदिर :** – न्यूयार्क शहर पाँच भागों में विभक्त है। प्रत्येक भाग को बोरो कहा जाता है। ब्रुकलिन उनमें से एक बोरो है। ब्रुकलिन में इस्कॉन (International Society for Krishna Conciousness) का मंदिर है। इसमें राधा-कृष्ण की मूर्ति है। राधाजी की मूर्ति सफेद संगमरमर की है और कृष्णजी की मूर्ति काली है। साथ में दो सखियाँ खड़ी हैं जो कि ललिता और विशाखा का प्रतिरूप हैं। सामने श्री प्रभुपाद जी आसन पर विराजमान हैं। वह पालथी मारे बैठे हैं। इस्कॉन के मंदिर में भगवान को प्रणाम भी सीधे सामने से न लेटकर बल्कि साइड से लेटकर करते हैं।

**गीता टेम्पल :** – क्वींस एक अलग बोरो है और यहाँ पर गीता टेम्पल है। यह मंदिर भी बहुत सुंदर बना हुआ है। यह भी एक भवन के रूप में बना है जिसे बाहर से देखकर मंदिर का आभास नहीं होता। बाईं ओर शिव-पार्वती और गणेश जी की पीतल की मूर्तियाँ है। इसके आगे वैष्णो गुफा बनाई गई है। गुफा में मुख्य वैष्णो माता की पिंडियाँ हैं। उसके ऊपर सात छोटे-छोटे अलग-अलग कमरों में सफेद संगमरमर की भगवान कृष्ण, राम-लक्ष्मण-सीता, शेषनाग लक्ष्मी, देवी जगदंबा, विष्णु-लक्ष्मी, शंकर-पार्वती और हनुमान जी की मूर्तियाँ हैं।

सामने बड़ासा हाल है जहाँ पर सत्संग या जगराता आदि किया जा सकता है। दाईं ओर के किनारे पर एक पहाड़ बनाया गया है। पहाड़ के ऊपर देवी की मूर्ति एक काष्ठ के बक्से में विराजमान है। हाल के एक किनारे पर गणेश जी की पीतल की मूर्ति है।

प्रवेश द्वार के दाईं ओर एक शिव लिंग और एक कुआँ तथा एक लिंग पर बारह ज्योतिर्लिंग की मूर्तियाँ बनाई गई हैं।

यहाँ पर हिंदू त्यौहार भी मनाए जाते हैं। नवरात्रि एवं हनुमान जयंती जैसे अवसरों पर जागरण व माता की चौकी, गणेश चतुर्थी पर गणेश स्थापना तथा नवरात्रि पर घट स्थापना आदि की जाती है। मुख्य त्यौहारों व तिथियों का एक 'दिव्यधाम' नामक कैलेन्डर भी नि:शुल्क वितरित किया जाता है।



4121 HRD/07—7A

**हनुमान मंदिर :** – लोंगालैंड एक अलग बोरो है। वहाँ पर हनुमान जी का मंदिर है जिसका संचालन एक महिला द्वारा किया जाता है। यह मंदिर काफी भव्य बना हुआ है। यहाँ होली, दिवाली, हनुमान जयंती, नवरात्रों आदि पर्वों के आयोजन होते हैं। श्रद्धालु बड़ी संख्या में इनमें भाग लेते हैं। इसमें हनुमान जी की मुख्य मूर्ति है। कभी-कभी प्रवचनों का भी प्रबंध किया जाता है।

**गीता नागरी :** – न्यूयार्क से लगभग 400 मील की दूरी पर इस्कॉन का एक मंदिर वहाँ पर रहने वाले फार्म कम्यूनिटी ने बनवाया है। यह फार्म कम्यूनिटी सेब, स्ट्राबेरी जैसे फलों की पैदावार करती है। इस कम्यूनिटी में काले लोग भी हैं जिन्हें ब्लैक पीपल कहा जाता है। ये लोग दास के रूप में दक्षिणी अफ्रीका से लाए गए थे। धीरे-धीरे स्वतंत्रता के बाद काले-गोरों का भेदभाव समाप्त हुआ। कुछ गोरे भी हैं और एशियाई वर्ग के लोग भी। इस्कॉन की मान्यता के अनुसार इन्होंने अपने पहनावे में परिवर्तन कर साड़ी व सूट को अपनाया है। ये लोग भगवान कृष्ण का भोग लगाए बिना कुछ नहीं खाते तथा बंगला गीत बड़े शौक से गाते हैं। भारतीय मृदंग भी बजाते हैं। विशेष बात यह है कि यहाँ के व्यक्तियों ने अपने नाम भी बदल कर भारतीय रख लिए हैं।

इस क्षेत्र को ''गीता नागरी'' नाम दिया है। इस क्षेत्र को यदि छोटा वृंदावन कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ पर भांति-भांति के फूल, फल व पक्षी कलरव करते दिखाई देते हैं। मोर भी नाचते हैं तो ऐसा लगता है कि मानो वृंदावन का रास रचैया रास रचा रहा हो।

मंदिर के अंदर राधा-कृष्ण जी की मुख्य मूर्ति है। यह पीतल की है। दोनों ओर ललिता और विशाखा सखियों की मूर्तियाँ हैं। नीचे गोवर्धन पर्वत और बलभद्र कृष्ण और सुभद्रा की मूर्तियाँ लकड़ी की हैं। इस्कॉन के प्रत्येक मंदिर में यह विशेषता है कि प्रभुपाद आचार्य की मूर्ति राधा-कृष्ण की मूर्ति के ठीक सामने अवश्य होती है।

**इस्कॉन वर्जिनिया मंदिर :** – इस्कॉन का एक विशाल मंदिर वर्जिनिया में भी बनाया गया है। इस मंदिर का क्षेत्र पूरा मानो भारत का वृंदावन ही है। मूर्तियाँ भी वहाँ पर भव्य व सोने से मढ़ी हैं। चारों ओर का वातावरण शांत व सुंदर है। रंग-रंग के फूल खिले हैं। रंग-रंग के



पक्षी कलरव करते दिखाई पड़ते हैं। वर्जिनिया चूँकि ठंडा इलाका है अत: सर्दी में यहाँ बर्फ जमी रहती है केवल गर्मी के मौसम में ही वहाँ रौनक होती है। फूलों की भी तभी बहार होती है।

इस्कॉन के श्रद्धालु भारत में तीर्थ यात्रा करने आते हैं। उनके तीर्थ स्थान कोलकाता के पास मायापुरी और आगरा के पास मथुरा, वृंदावन हैं। वृंदावन में वह अधिक से अधिक समय व्यतीत करते हैं।

शिकागो में भी एक मंदिर है और हो सकता है कि उपर्युक्त के अलावा और भी मंदिर अमेरिका के अन्य स्थानों पर हों।

❑❑❑

# विज्ञान और धर्मः परस्पर विरोधी नहीं हैं

● डॉ. दिनेश मणि, डी. एससी.

**निः**संदेह, आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग में धर्म और विज्ञान के पारस्परिक संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं। ईश्वर के अस्तित्व या अभाव को लेकर पुरातन से झगड़ा चला आ रहा है। किंतु इसके बावजूद मंदिर-मस्जिद-गिरजाघरों में कोई कमी नहीं आई।

धर्म अनेक हैं। वे विभिन्न देशों में विभिन्न कालों में स्थापित हुए हैं। उन्होंने मानव जाति को अनेक समुदायों में विभाजित किया है और मानव की एकता के लिए प्रबल अवरोधक बन गए हैं। व्यवहार में, प्रत्येक धर्म, दूसरे का विरोधी है। कोई चीज किसी धर्म का इतना विरोध नहीं करती जितना कि दूसरा धर्म। यह एक प्रकार के अंधविश्वास का दूसरे प्रकार के अंधविश्वास के साथ टकराव और संघर्ष है। परंतु इन सभी रूढ़िवादी धर्मों में कुछ आधारभूत सामान्य विशेषताएँ हैं। उनका दृढ़ आधार ईश्वर है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक धर्म में पौराणिक कथाओं और अलौकिक चमत्कारों की भरमार है। पौराणिक कथा किसी तथ्य को काल्पनिक रूप देना है और अलौकिक चमत्कार प्रकृति के नियम को तोड़कर नकली तथ्य प्रस्तुत करना है।

● पूर्व संपादक, विज्ञान मासिक पत्रिका, 47/29, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जार्ज टाउन, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)



यह भी दावा किया जाता है कि प्रत्येक धर्म ईश्वरोक्त और ईश-प्रेरित है। प्रत्येक धर्म की दिव्यता पर आधारित अपनी पवित्र प्रामाणिक पुस्तक है। परंतु किसी भी धार्मिक पुस्तक में भौतिक विश्व की प्रकृति एवं उसके कार्य के बारे में ऐसी कोई चीज वर्णित नहीं है जो बाद में वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा सत्य सिद्ध की गई हो।

सच कहा जाए तो धर्म का प्रश्न संवेदनशील होना ही नहीं चाहिए। मनुष्य के अपने ईश्वर के साथ संबंध, और अमुक पवित्र चीज के बारे में उनकी भावनाओं के कारण तो कोई संकट होना ही नहीं चाहिए। जब राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए धर्म को हथियार बनाया जाता है, तभी झगड़े पैदा होते हैं। धार्मिक आस्था और विवेक, इन दोनों का सह-अस्तित्व हो सकता है, बशर्ते कि हम स्पष्ट रूप से समझ लें कि मानव जीवन में इनकी क्या भूमिकाएँ हैं। ऐसी हालत में वैज्ञानिक मनोवृत्ति को धर्म के विरुद्ध जंग छेड़ने की जरूरत नहीं है। वह तभी जरूरी है, जब राजनीति धर्म का मुखौटा लगा कर काम करे। दुर्भाग्य से हमारे देश में यह चीज बड़े पैमाने पर होती है। हमारी अर्थव्यवस्था की जो प्रकृति है और जैसा हमारा सामाजिक चरित्र है, उससे भी इसको बल मिलता है। हमने अपनी निर्वाचन प्रक्रियाओं को जिस प्रकार आयोजित किया है, उनके चलते स्थिति गंभीर रूप से बिगड़ती है।

वास्तव में धर्मों का उद्भव जिन कारणों से हुआ वे अत्यंत सराहनीय थे। इनका उद्भव इसलिए हुआ क्योंकि मनुष्य व्यापकतर जगत के साथ अपनी सापेक्षता स्थापित करना चाहता था। समाज में रहते हुए मनुष्य ने देखा था कि आचरण के अमुक नियम, कुछ नैतिक सिद्धांत परस्पर एक दूसरे से व्यवहार करने के कुछ तौर-तरीके लाभप्रद और सबके लिए कल्याणकारी थे। इनसे मानव की अधिकतम हित साधना होती थी। बाद में कुछ लोग हुए जिन्होंने इस ज्ञान को संहिताबद्ध कर दिया, और कालांतर में इनकी जीवंतता समाप्त हो गई और ये जड़ पदार्थ जैसे हो गए। कुछ धार्मिक प्रथाओं में समग्र सामाजिक आचार-व्यवहार की यही पुरातनपंथता जारी है। उसके अनेक तत्व आज भी तर्कसंगत और मान्य हैं, जबकि अन्य अनेक तर्कसंगत नहीं रह गए हैं क्योंकि ऐतिहासिक कालक्रम में उनका प्रचलन समाप्त हो गया है। हमें यथार्थ जीवन की स्थिति से निपटना होगा।

यथार्थ जीवन-स्थिति में जबर्दस्त बदलाव हो चुका है। हमारे परिवेश में, हमारे चारों ओर की दुनिया में परिवर्तन, इतनी तेज गति से हो रहा है कि कुछ धार्मिक विधि विधानों को, कुछ अनुष्ठानों को, जिन्हें पहले आवश्यक और उपयोगी माना जाता था, अब त्यागना ही होगा।

धार्मिक तलाश शायद मानव की सबसे आरंभिक बौद्धिक तलाश है, और संगठित धर्म मनुष्य द्वारा गढ़ी गई शायद सबसे पहली सामाजिक संस्था है। धर्म की मानव समाजों पर पकड़ कुल मिलाकर बहुत जबर्दस्त रही है, और धर्म इतिहास की अत्यंत प्रबल उत्प्रेरक शक्ति रहा है। हालाँकि प्रत्येक संगठित समाज में धर्म त्यागी और अपधर्मी व्यक्ति हुए हैं, और हालाँकि धार्मिक समूहों के आंतरिक संघर्षों के कारण फूट पड़ी है और नए-नए संप्रदायों का जन्म हुआ है, लेकिन, शायद पिछली शताब्दी में पहली बार यह सवाल उठाया गया कि धर्म (यहाँ अभिप्राय किसी धर्म विशेष से नहीं बल्कि धर्म मात्र से है) क्या मनुष्य की आगे की प्रगति को अवरुद्ध तो नहीं करता? यह मात्र संयोग ही नहीं है कि यह वही काल है जिसमें मनुष्य ने विज्ञान और वैज्ञानिक तरीकों से अपने आस-पास की प्रकृति और प्राकृतिक घटनाओं को वैज्ञानिक पद्धति से समझने की दिशा में बहुत तेजी से प्रगति की।

धर्म का एक पक्ष है मनुष्य के अंतस् की गहराइयों में पैठ कर खोज करना, उसकी आकांक्षाओं और उसकी संभावित संभावनाओं की खोज करना, व्यक्ति और समाज को स्थिर रखने वाले मूल्यों की खोज करना, मनुष्य द्वारा स्वार्थपरक इच्छाओं से मुक्त होकर ''स्व'' से ऊपर उठकर जीवन के उच्चतर ध्येय की तलाश का रहस्य खोजना। सत्ता के प्रति भक्ति की भावना इस प्रकार के खोज की विशेषता रही है, और इस भक्ति की भावना और निष्ठा ने प्रायः मनुष्य की आत्मा को झंकृत कर देने वाली उत्कृष्ट काव्य और संगीत रचनाओं, स्थापत्य, मूर्ति और चित्र कलाओं की अप्रतिम कृतियों का सृजन करने की प्रेरणा दी है। सदियों के दौरान रचित ये कृतियाँ मनुष्य की सृजनात्मक क्षमताओं के सर्वोत्तम नमूने हैं जिन्हें राष्ट्रीयता, संस्कृति या धर्म की मर्यादाओं का विचार किए बिना सार्वभौम रूप से सराहा जाता है।

विज्ञान से हमारा आशय प्रथमतया जिज्ञासा की अभीप्सा से है जिसे



हम शुद्ध विज्ञान कह सकते हैं और दूसरे इसका आशय उस ''प्रयुक्त विज्ञान'' से भी है जो शुद्ध विज्ञान के तटस्थ और सत्यशोधक परिणामों से तकनीकों का आविष्कार करता है और मानव जीवन को समृद्ध करता है। प्रकृति के सत्य को शोधने-खोजने वाली दृष्टि ज्ञानमय प्रकाश है और उसका उपयोग करने वाली दृष्टि उसका ज्ञानमय फल है। पहली खोज प्रकाश की खोज है और दूसरी शक्ति की। धर्म की दृष्टि भी पहले प्रकाश की खोज करती है और बाद में शक्ति की। तांत्रिक दृष्टि प्रायः शक्ति की खोज में जुट जाती है। विज्ञान की प्रत्येक शुद्ध खोज बाद में उपयोगिता में बदल जाती है जिससे मानव जीवन लाभ उठाता है। बीसवीं शताब्दी का समस्त तकनीकी उत्थान अपने पूर्ववर्ती अनुद्विग्न शोधों का ही प्रतिफलन है। मनुष्य का मस्तिष्क प्रकृति के अनंत रहस्यों का एक के बाद एक उद्घाटन करता ही गया है: प्रकृति की गोपनीयता से लगातार संघर्ष करता हुआ ही वह आधुनिक परमाणु युग में दाखिल हुआ है।

विज्ञान का उद्देश्य तटस्थता से प्रकृति और मानवानुभूतियों का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करना ही है। कार्ल पियर्सन के शब्दों में - ''विज्ञान का प्रकार्य तथ्यों का वर्गीकरण, उनके क्रम की पहचान और सापेक्ष महत्ता की खोज है और इन तथ्यों पर आधारित निष्पक्ष निर्णय देने की प्रकृति को ही हम वैज्ञानिक मन कहेंगे।'' वैज्ञानिक मन के इसी वस्तुनिष्ठ तेवर ने प्रकृति के एक पर एक रहस्यों के परदे हटाए हैं और प्रकृति के विविध नियमों का उद्घाटन कर उसका सत्य निकाला है। मध्ययुग के बाद विज्ञान की इसी शोध दृष्टि के फलस्वरूप इतने प्रभूत परिणाम-गुण में इतना वृहद् अनुसंधान संपन्न हुआ है।

वस्तुनिष्ठता और तर्क के आधार पर विकसित होने वाली सत्योन्मुख कोई भी दृष्टि, चाहे वह किसी भी क्षेत्र की हो, विज्ञान दृष्टि ही है जो सप्रमाण निर्णयों को प्रस्तुत करती है। विज्ञान के भौतिकी और रसायन जैसे विभाग तो संकुचित ही हैं लेकिन वैज्ञानिक मन के क्षेत्र अंतहीन हैं। चूंकि इस प्रवृत्ति के दायरे में हमारा संपूर्ण आधुनिक जीवन आता है इसलिए हमारा युगबोध वैज्ञानिक मन वाला है। वैज्ञानिक प्रतिभा मूलतः अन्वेषण की ही प्रतिभा है। प्रश्न, संशय, परीक्षण और सत्यापन पर आधृत यह वस्तुओं और विचारों के संसार को प्रभावित करती है और इस प्रक्रिया में

वह रास्ते के उन शांत पड़े विश्वासों, वादों, जादू और चमत्कारों के जल में हलचल भी मचाती है जो धर्मानुभव से गलती से जुड़ते चले गए हैं। विज्ञान विशेषीकृत ज्ञान है और अपरीक्षित सिद्धांतों, मान्यताओं, जादू और विश्वासों, चमत्कारों और इंद्रजालों आदि के ऊपर प्रभावी होकर यह प्रहारात्मक शक्ल ले चुका है। पश्चिम में इन तमाम रूढ़ियों के भंजन के कारण ही इनमें जीती समाज व्यवस्था ने धर्म के कोण से विज्ञान का भयानक प्रतिरोध किया। पश्चिम के बोध ने विज्ञान के शैशव से अभी तक विरोध ही किया है। परंतु अज्ञान की दीवारें सत्य के प्रहार से एक के बाद एक ढहती चली गईं। हमारी पिछली शताब्दी का इतिहास अपरीक्षित विश्वासों, वादों, सिद्धांतों और महज विचारों के ऊपर स्वतंत्र अन्वेषण की विजय का इतिहास है। विज्ञान की शुद्ध अन्वेषण वृत्ति ने ही उपयोगिता के कोण से जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन उपस्थित किए हैं।

''धर्म'' के शाश्वत-सनातन स्वरूप की व्याख्या का अत्यंत उत्कृष्ट स्वरूप स्वामी विवेकानंद के ''व्यावहारिक वेदांत'' में प्राप्त होता है। उनके पास वह गंभीर दृष्टि थी जो ठीक अंतर कर सकी कि जिस ''धर्म'' का विरोध विज्ञान करता है वह धर्म का वस्तुत: विकृत स्वरूप ही है और धर्म में तर्क बुद्धि, संशय और विवेक दृष्टि की प्रस्तावना होनी ही चाहिए। ''हिंदू धर्म'' के तात्विक स्वरूप का वैज्ञानिक बोध होने के कारण ही वह कह सके- ''क्या धर्म को स्वयं को तर्कों द्वारा प्रमाणित करना चाहिए जैसा कि कोई भी दूसरा विज्ञान करता है? क्या अनुसंधान की वही प्रविधियाँ, जिनका प्रयोग हम विज्ञान और अन्य ज्ञान के लिए करते हैं, धर्म के विज्ञान के लिए भी प्रयुक्त होनी चाहिए? मेरी दृष्टि में ऐसा अवश्य होना चाहिए और यह जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा है। यदि धर्म किसी ऐसे अनुसंधान से नष्ट हो जाता है तो वह सदा बेकार था, अयोग्य था, अंधविश्वास था : और जितनी जल्दी चला जाए उतना ही अच्छा। मुझे पूरा संतोष है कि इसका विनाश सबसे अच्छी बात होगी। ऐसे शोध से निस्संदेह, सारा खोट जल जाएगा और जो धर्म का सार तत्व होगा वह विजयी होकर निकलेगा। न केवल इसे वैज्ञानिक बनाया जा सकेगा .... जैसा कि भौतिकी और रसायन का कोई भी निष्कर्ष



... बल्कि, इसमें महानतर शक्ति भी होगी क्योंकि भौतिकी और रसायन में अपने सत्य के लिए खड़े होने में कोई अंत:शक्ति नहीं है, जैसी धर्म में है।''

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारत के बाहर विज्ञान और धर्म को लेकर अत्यधिक संघर्ष चलता रहा है। विशेषतया यूरोप में अनेक विज्ञानियों को धर्म के ठेकेदारों ने सूली पर चढ़ा दिया। लेकिन विज्ञान हमें संयमित रहने का पाठ पढ़ाता है, किसी से ईर्ष्या द्वेष नहीं, अपितु सत्य के संधान पर बल देता है और इस प्रकार विभिन्न धर्मों के बीच समन्वय या सामंजस्य स्थापित करने पर बल देता है।

यह सच है कि हमारी आस्था चाहे जिस धर्म में हो, वह विज्ञान की प्रगति में तब तक बाधक नहीं बन सकती जब तक कि वह उस पर हावी न हो। विज्ञान के सत्य को दबा पाना कठिन है, भले ही किसी धर्म का दोष अनंत काल तक छिपा कर रखा जो सके। धर्म के अनुयायियों, धर्माधिकारियों तथा सामान्य जनता को चाहिए कि धर्म की आस्थाओं को वैज्ञानिक मान्यताओं पर आरोपित न करें, अपितु विज्ञान की ओर अपनी सहायता के लिए हाथ बढ़ाएँ। वैज्ञानिकों का भी अपना धर्म होता है किंतु वह सार्वभौम है। उसमें कोई प्रतिबंध नहीं है, न कोई वर्जना है। धर्म तथा विज्ञान यदि मानव समाज की तुला के दो पलड़ों की भांति कार्य कर सकें तो मानव समाज अत्यधिक समृद्धिशाली एवं शाश्वत हो सकता है। विज्ञान इसी के लिए कृतसंकल्प है। वैज्ञानिक अभिरुचि ही वह माध्यम है जिससे ऐसा संभव हो सकता है।

❑❑❑

# आँखों के लिए भी कुछ करें

● कुलदीप कुमार

**आँ**खों का जो महत्व है उसे तो दृष्टिहीन भी जानते हैं आप तो फिर आँखों वाले हैं। अभी से इस अनमोल अंग की रक्षा कीजिए ताकि आगे कभी आँखें खराब होने पर लाचार और दूसरों के मोहताज न हों।

तो आज से निम्न उपाय अपनाएँ–

- ❖ सिर के बालों की जड़ों में इन गर्मी के दिनों में चमेली या बादाम का थोड़ा-सा तेल लगाकर उंगलियों से हल्की-हल्की मालिश करें। आजकल रूखे बालों का फैशन होने से बालों में तेल डालना ''अच्छा नहीं'' समझा जाता है। फलस्वरूप जल्दी बाल सफेद होने और चश्मा लगाने का रिवाज-सा चल पड़ा है।
- ❖ प्रात: मक्खन, मिश्री और कालीमिर्च तीनों को पीसकर मिलाकर दो-तीन बड़े चम्मच चाटने से कुछ ही दिनों में नेत्र ज्योति में काफी सुधार होता है।
- ❖ नंगे पैर न चलें, भोजन करते और सोते समय पैरों को ठंडे पानी से खूब धोएं, तलुओं में शुद्ध घी की मालिश करें और प्रात: जल्दी उठकर ओस पड़ी घास पर टहलें। तलवे की नसों का सीधा संबंध सिर व आँखों से होता है अत: इन सबका तुरंत प्रभाव पहुँचता है।
- ❖ माथे पर चंदन लगाना सिर और नेत्रों के लिए बहुत बढ़िया है। दिन में लगाना आज के हिसाब से सूट न करे तो रात को सोते समय चंदन घिसकर लगाना चाहिए बहुत लाभ होगा।

● एम-128, प्लॉट नंबर-29, रामकृष्ण विहार, पटपड़गंज, दिल्ली-110092



- ❖ दिन में दो तीन बार ठंडे पानी से मुँह धोकर मुँह में खूब पानी भरकर आँखों पर पानी के छींटे मारें। सुबह उठने पर और रात को सोते समय ऐसा जरूर करें।
- ❖ पैरों को अधिक से अधिक ठंडा रखना चाहिए। भोजन से पहले और सोने से पहले, मल-मूत्र त्यागने के बाद और किसी पवित्र स्थान में प्रवेश करते समय, पैर धोने का नियम है। यह नियम आँखों को बहुत फायदा पहुँचाता है।
- ❖ सिर में बाद-बार कंघा करने से जहाँ बालों का मैल साफ होता है वहाँ नेत्रों को भी लाभ पहुँचता है। सिर पर हल्की-हल्की मालिश भी नेत्रों के लिए हितकर होती है।
- ❖ रात को त्रिफला चूर्ण पानी में भिगो दें सुबह कपड़े से छानकर इस पानी से धोने से नेत्र ज्योति वर्षों तक खराब नहीं होती है।
- ❖ ठंडे पानी में थोड़ा नींबू निचोड़कर पानी छानकर आँखें धोना और फिर ठंडे पानी की गीली पट्टी आँखों पर रखकर 15-20 मिनट लेटे रहने से आँखों की ज्योति में पर्याप्त लाभ होता है।
- ❖ नाक के बाल नहीं उखाड़ना चाहिए, इससे आँखों पर बुरा असर पड़ता है।
- ❖ सप्ताह में एक बार नाक में कोई छींकने की नस्य सूंघकर छीक लेनी चाहिए। कभी-कभी नाक में सोते समय दो-दो बूंद दोनों तरफ 'षड्बिंदु तेल' डालकर ऊपर खींचना चाहिए। यह नेत्रों और सिर को बहुत लाभ पहुँचाता है।
- ❖ कम रोशनी में संध्या समय और देर रात तक काम करने या लिखने-पढ़ने से आँखें खराब होती हैं। शुद्ध घी या मक्खन का सेवन आँखों के लिए बहुत जरूरी है।
- ❖ आजकल शुद्ध घी और मक्खन के तो दर्शन भी दुर्लभ हैं। लगता है कि ऐसा समय भी आ सकता है जब घी और मक्खन कैपसूल पैकिंग में मिलने लगें। फिर भी आँखों के लिए आप चाहे तो डेरी व दूध वालों से घी व मक्खन प्राप्त कर सकते हैं। ज्यादा नहीं, सिर्फ दो चम्मच रोज प्रात: व काली मिर्च के साथ ले लेना भी काफी रहेगा।
- ❖ आँखों के लिए विटामिन 'ए' बहुत जरूरी है। अब ऐसे पदार्थ अपने आहार में शामिल कीजिए जो विटामिन 'ए' से भरपूर हों। हमारी कामना है कि आपके नेत्र आजीवन ठीक रहें।

# विविध

# शब्द-भंडार

## कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली

| | |
|---|---|
| asynchronous communication | अतुल्यकाली संचार |
| asynchronous data transfer | अतुल्यकालिक आंकड़ा अंतरण |
| asynchronous device | अतुल्यकालिक युक्ति |
| asynchronous operation | 1. अतुल्यकाली प्रचालन<br>2. अतुल्यकाली संक्रिया |
| attached processor | संलग्न संसाधित्र |
| attenuation | क्षीणन |
| attenuation constant | क्षीणनांक |
| attenuator | क्षीणकारी |
| attribute | गुण |
| audio cassette | श्रव्य कैसेट |
| audio response | श्रव्य अनुक्रिया |
| audio response unit | श्रव्य अनुक्रिया एकक |
| audio terminal | श्रव्य अंतक |
| audit programming | लेखा-परीक्षा क्रमादेशन |
| augend | योजक |
| author | संलेखक |
| authoring system | संलेखन प्रणाली |
| authorization code | प्राधिकरण कूट |
| authorized program | प्राधिकृत क्रमादेश |



| | |
|---|---|
| authorized program facility | प्राधिकृत क्रमादेश सुविधा |
| auto call (=automatic calling) | स्वत: आह्वान |
| auto coder | स्वकूटलेखक |
| auto index | स्वत: सूचक |
| automata | स्वचल प्ररूप |
| automata theory | स्वचल प्ररूप सिद्धांत |
| automated bibliography | कंप्यूटरित ग्रंथ सूची, कंप्यूटरीकृत ग्रंथ सूची |
| automated dictionary | कंप्यूटरित कोश |
| automated glossary | कंप्यूटरित शब्द-संग्रह |
| automated stock control | स्वचालित स्टॉक नियंत्रण, स्वचल |
| automatic call distributor | स्वत: आह्वान वितरक |
| automatic check | स्वत: जाँच |
| automatic coding | स्वत: कूटलेखन |
| automatic computing | स्वत: अभिकलन |
| automatic data processing | स्वत: आँकड़ा संसाधन |
| automavs dialling unit | स्वत: डायलन एकक |
| automa dictionary | स्वत: कोश |
| automatic error correction | स्वत: त्रुटि संशोधन |
| automatic feed punch | स्वत: भरण छिद्रित्र |
| automatic indexing | स्वत: सूचकीकरण |
| automatic programming | स्वत: क्रमादेशन |
| automatic recovery program | स्वत: पुन:प्राप्ति क्रमादेश |
| automatic restart | स्वत: पुनरारंभन |
| automation | 1. स्वचालन<br>2. स्वचालित यंत्र |
| automatisation | स्वचालनीकरण |
| automatic message routing | स्वत: संदेश मार्गण |
| autoplotter | स्वत: आलेखित्र |

| | |
|---|---|
| auxiliary memory | सहायक स्मृति |
| auxiliary operation | सहायक प्रचालन |
| auxiliary storage | सहायक भंडारण |
| availability | प्राप्यता |
| average access time | औसत अभिगम काल |
| average information rate | औसत सूचना दर |
| average transinformation rate | औसत पारसूचना दर |
| background | पृष्ठभूमि |
| backgrounding (=background processing) | पृष्ठभूमि संसाधन |
| background job | पृष्ठभूमि कार्य |
| background printing | पृष्ठभूमि मुद्रण |
| background processing | पृष्ठभूमि संसाधन |
| backing storage (auxiliary storage) | सहायक भंडारण |
| back plane | पश्च समतल |
| backspace | पश्चीयन |
| backspace character | पश्चीयन संप्रतीक |
| backtracking | पश्च अनुमार्गण |
| backup | पूर्तिकर |
| backup copy | पूर्तिकर प्रतिलिपि |
| backup file | पूर्तिकर संचिका |
| backup memory | पूर्तिकर स्मृति |
| backward channel | पश्चगामी प्रणाल |
| backward file recovery | पश्च संचिका पुन:प्राप्ति |
| backward trace | पश्च अनुरेख |
| balanced circuit | संतुलन परिपथ |
| balanced sorting | संतुलित शॉटन |
| balanced ternary system | संतुलित त्रि-आधारी पद्धति |
| band stop filter | बैंड विराम निस्यंदक |



| | |
|---|---|
| bandwidth | बैंड चौड़ाई |
| bar code | रेखिका कूट |
| bar code reader | रेखिका कूट पठित्र |
| bar code scanner | रेखिका कूट क्रमवीक्षक |
| bar printer | रेखिका मुद्रित्र |
| base | आधार |
| base address | आधार पता |
| base band | आधार पट्टी |
| base element | आधार अवयव |
| base notation | आधार संकेतन |
| base volume | मूल खंड |
| basic access method | आधारी अभिगम विधि |
| basic code | आधारी कूट |
| basic input/output | आधारी निवेश/निर्गम |
| basic instruction | आधारभूत अनुदेश |
| basic sequential access method | आधारभूत अनुक्रमी अभिगम विधि |
| basic system instruction | आधारी तंत्र अनुदेश |
| batch | प्रचय |
| batch control record | प्रचय नियंत्रण अभिलेख |
| batched communication | प्रचयित संचार |
| batching | प्रचयन |
| batch operating system | प्रचय संक्रिया प्रणाली |
| batch processing | प्रचय संसाधन |
| baud | बॉड |
| baud rate | बॉड दर |
| beam deflection | किरण पुंज विक्षेपण |
| beamwidth (=aperture angle) | किरण पुंज कोण |
| begin | प्रारंभ |
| beginning of tape mark | टेप चिह्न का प्रारंभ |

| | |
|---|---|
| bench mark | निर्देश चिह्न |
| benchmark test | निर्देश चिह्न परीक्षण |
| bias testing | अभिनति परीक्षण |
| bibliography | ग्रंथ सूची |
| biconditional opertion (=equivalence operation) | तुल्यता संक्रिया |
| biconnected graph | द्वियोजी ग्राफ |
| bidirectional printing | द्विदिश मुद्रण |
| binary | द्वि-आधारी |
| binary arithmetic operation | द्वि-आधारी अंकगणितीय संक्रिया |
| binary chain | द्वि-आधारी शृंखला |
| binary code | द्वि-आधारी कूट |
| binary coded character | द्वि-आधारी कूटलिखित संप्रतीक |
| binary coded decimal | द्वि-आधारी कूटलिखित दशमलव |
| binary coded decimal code | द्वि-आधारी कूटलिखित दशमलव कूट |
| binary coded decimal system | द्वि-आधारी कूटलिखित दशमलव पद्धति |
| binary coded notation | द्वि-आधारी कूटलिखित अंक संकेतन |
| binary coding | द्वि-आधारी कूटलेखन |
| binary conversion | द्वि-आधारी रूपांतरण |
| binary digit | द्वि-आधारी अंक |
| binary hal fadder | द्वि-आधारी अर्थ योजक |
| binary loader | द्वि-आधारी भारक |
| binary notation | द्वि-आधारी संकेतन |
| binary number | द्वि-आधारी संख्या |



| | |
|---|---|
| binary number system | द्वि-आधारी संख्या पद्धति |
| binary operation code | द्वि-आधारी संक्रिया कूट |
| binary operator | द्वि-आधारी संकारक |
| binary relation | द्वयी संबंध |
| binary search | द्विभाजी अन्वेषण |
| binary synchronous communication | द्वि-आधारी तुल्यकालिक संचार |
| binary tree | द्वयी तरू |
| bipartite graph | द्विभाज्य ग्राफ |
| bipolar | द्विध्रुवी |
| bipolar memory | द्विध्रुवी स्मृति |
| birth-death process | जन्म-मरण प्रक्रम |
| bisection algorithm | द्विभाजन कलन विधि |
| bistable | द्विस्थितिक |
| bistable device | द्विस्थितिक युक्ति |
| bisynchronous | द्वि-तुल्यकालिक |
| bit | द्वयंक, बिट |
| bit density | द्वयंक घनत्व |
| bit instruction | द्वयंक अनुदेश |
| bit location | द्वयंक स्थान |
| bit pattern | द्वयंक प्रतिरूप |
| bit position | द्वयंक स्थिति |
| bit rate | द्वयंक दर |

❑❑❑

# आयोग के प्रकाशन

## (क) आयोग द्वारा प्रकाशित शब्द-संग्रहों की सूची

| क्र. सं. | शब्द-संग्रह | मूल्य |
|---|---|---|
| 1. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : विज्ञान, खंड-1, 2 (पृ. 2058) | 174.00 |
| 2. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : विज्ञान (हिंदी-अंग्रेजी) (पृ. 819) | 236.00 |
| 3. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : मानविकी और सामाजिक विज्ञान, खंड-1,2(1297) | 292.00 |
| 4. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : मानविकी और सामाजिक विज्ञान (हिंदी-अंग्रेजी) | 132.00 |
| 5. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : कृषि विज्ञान (पृ. 223) | 278.00 |
| 6. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : आयुर्विज्ञान, भेषजविज्ञान, नृविज्ञान | 239.40 |
| 7. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : आयुर्विज्ञान, कृषि एवं इंजीनियरी (हिंदी-अंग्रेजी) | 48.50 |
| 8. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : मुद्रण इंजीनियरी (पृ. 104) | 48.00 |
| 9. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : इंजीनियरी (सिविल, विद्युत्, यांत्रिक) (पृ.566) | 57.00 |
| 10. | बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : इंजीनियरी-2 (पृ. 186) | 84.00 |
| 11. | वृहत् पारिभाषिक शब्दसंग्रह: प्राणिविज्ञान (पृ. 526) | 311.00 |

### विषयवार शब्दावलियाँ/शब्दसंग्रह

| | | |
|---|---|---|
| 1. | मानविकी शब्दावली - (नृविज्ञान) (पृ. 179) | 10.00 |
| 2. | कंप्यूटरविज्ञान शब्दावली (पृ. 337) | 87.00 |
| 3. | इस्पात एवं अलोह धातुकर्म शब्दावली (पृ. 378) | 55.00 |
| 4. | वाणिज्य शब्दावली (पृ. 172) | 259.00 |
| 5. | समेकित रक्षा शब्दावली | 284.00 |
| 6. | अंतरिक्ष विज्ञान शब्दावली | 30.00 |
| 7. | भाषाविज्ञान शब्दावली (अंग्रेजी-हिंदी तथा हिंदी-अंग्रेजी) (पृ. 249) | 113.00 |
| 8. | बृहत् प्रशासन शब्दावली, (अंग्रेजी-हिंदी) | नि:शुल्क |
| 9. | बृहत् प्रशासन शब्दावली (हिंदी-अंग्रेजी) | नि:शुल्क |
| 10. | पशुचिकित्सा विज्ञान शब्दावली (पृ. 174) | 82.00 |
| 11. | लोक-प्रशासन शब्दावली (पृ. 98) | 52.00 |
| 12. | अर्थशास्त्र शब्दावली (मानविकी शब्दावली-9) (पृ. 96) | 4.40 |
| 13. | नृविज्ञान शब्दावली (पृ. 198) | 10.00 |



| | | |
|---|---|---|
| 14. | गुणता-नियंत्रण शब्दावली (पृ. 67) | 38.00 |
| 15. | रेशमविज्ञान शब्दावली (पृ. 85) | 50.00 |
| 16. | कोशिका-जैविकी शब्द-संग्रह (पृ. 197) | 62.00. |
| 17. | गणित शब्द संग्रह (पृ. 357) | 143.00 |
| 18. | भौतिकी शब्द-संग्रह (पृ. 536) | 119.00 |
| 19. | गृहविज्ञान शब्द-संग्रह (पृ. 144) | 60.00 |
| 20. | रासायनिक इंजीनियरी शब्द-संग्रह (पृ. 167) | - |
| 21. | भूगोल शब्द-संग्रह (पृ. 369) | 200.00 |
| 22. | खनन एवं भूविज्ञान शब्द-संग्रह | - |
| 23. | भूविज्ञान शब्द-संग्रह (पृ. 328) | 88.00 |
| 24. | संरचनात्मक भूविज्ञान एवं विवर्तनिकी शब्द संग्रह (पृ. 48) | 15.00 |
| 25. | पत्रकारिता एवं मुद्रण शब्दावली (पृ. 184) | 12.25 |
| 26. | सूचना एवं प्रौद्योगिकी शब्द-संग्रह (पृ. 393) | 231.00 |
| 27. | पर्यावरणविज्ञान शब्द-संग्रह (पृ. 429) | 381.00 |
| 28. | रसायन शब्द-संग्रह (पृ. 918) | 592.00 |

### मूलभूत शब्दावलियां

| | | |
|---|---|---|
| 1. | गणित की मूलभूत शब्दावली (पृ. 135) | नि:शुल्क |
| 2. | कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली (पृ. 115) | नि:शुल्क |
| 3. | भूगोल की मूलभूत शब्दावली (पृ. 156) | नि:शुल्क |
| 4. | भूविज्ञान की मूलभूत शब्दावली (पृ. 141) | नि:शुल्क |
| 5. | वनस्पतिविज्ञान की मूलभूत शब्दावली (पृ. 207) | नि:शुल्क |
| 6. | पशुचिकित्सा विज्ञान की मूलभूत शब्दावली (पृ. 179) | नि:शुल्क |
| 7. | आयुर्विज्ञान की मूलभूत शब्दावली (पृ. 613) | नि:शुल्क |

### (ख) परिभाषा-कोशों की सूची

| | | |
|---|---|---|
| 1. | भूविज्ञान परिभाषा-कोश (पृ. 284) | 10.00 |
| 2. | भूविज्ञान परिभाषा-कोश-2 (सामान्य भूविज्ञान) (पृ. 196) | 13.50 |
| 3. | संरचनात्मक भूविज्ञान परिभाषा कोश | - |
| 4. | शैलविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 195) | - |
| 5. | प्रारंभिक परिभाषिक रसायन कोश (पृ. 242) | 3.25 |
| 6. | उच्चतर रसायन परिभाषा कोश | 17.00 |
| 7. | रसायन (कार्बनिक) परिभाषा कोश-3 (पृ. 280) | 25.00 |
| 8. | पेट्रोलियम प्रौद्योगिकी परिभाषा कोश (पृ. 188) | 173.00 |
| 9. | प्रारंभिक पारिभाषिक कोश गणित (पृ. 298) | 18.75 |
| 10. | गणित परिभाषा कोश (पृ. 253) | 11.00 |
| 11. | आधुनिक बीजगणित परिभाषा कोश (पृ. 159) | 11.00 |
| 12. | सांख्यिकी परिभाषा कोश (पृ. 432) | 18.00 |
| 13. | भौतिकी परिभाषा कोश (पृ. 212) | 3.15 |
| 14. | आधुनिक भौतिकी परिभाषा कोश (पृ. 290) | 13.00 |

| | |
|---|---|
| 15. भूगोल परिभाषा कोश | 10.00 |
| 16. मानव भूगोल परिभाषा कोश (पृ. 228) | 18.00 |
| 17. मानचित्र विज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 361) | 231.00 |
| 18. गृहविज्ञान परिभाषा कोश | – |
| 19. गृहविज्ञान परिभाषा कोश-2 (पृ. 64) | 9.00 |
| 20. इलेक्ट्रोनिकी परिभाषा कोश (पृ. 215) | 22.00 |
| 21. तरल यांत्रिकी परिभाषा कोश (पृ. 76) | 10.00 |
| 22. यांत्रिकी इंजीनियरी परिभाषा कोश (पृ. 135) | 84.00 |
| 23. सिविल इंजीनियरी परिभाषा कोश (पृ. 112) | 61.00 |
| 24. विद्युत् इंजीनियरी परिभाषा कोश | 81.00 |
| 25. धातुकर्म परिभाषा कोश (पृ. 441) | 278.00 |
| 26. आयुर्विज्ञान पारिभाषिक कोश (शल्यविज्ञान) | 48.05 |
| 27. आयुर्विज्ञान परिभाषा कोश | 336.00 |
| 28. इतिहास परिभाषा कोश (पृ. 297) | 20.50 |
| 29. शिक्षा परिभाषा कोश (पृ. 197) | 13.50 |
| 30. शिक्षा परिभाषा कोश-2 (पृ. 205) | 99.00 |
| 31. मनोविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 62)142 | 9.50 |
| 32. दर्शन परिभाषा कोश (पृ. 432) | 9.75 |
| 33. अर्थशास्त्र परिभाषा कोश (पृ. 232) | 117.00 |
| 34. अर्थमिति परिभाषा कोश (पृ. 245) | 17.65 |
| 35. वाणिज्य परिभाषा कोश (पृ. 173) | 24.70 |
| 36. समाजकार्य परिभाषा कोश (पृ. 183) | – |
| 37. समाजशास्त्र परिभाषा कोश (पृ. 212) | 71.40 |
| 38. सांस्कृतिक नृविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 287) | 24.00 |
| 39. पुस्तकालय विज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 196) | 49.00 |
| 40. पत्रकारिता परिभाषा कोश (पृ. 164) | 87.50 |
| 41. पुरातत्व परिभाषा कोश (पृ. 391) | 76.50 |
| 42. पुरातत्व परिभाषा कोश-2 (पृ. 453) | 509.00 |
| 43. पाश्चात्य संगीत परिभाषा कोश (पृ. 104) | 28.55 |
| 44. भाषाविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 212) | 89.00 |
| 45. भाषाविज्ञान परिभाषा कोश खंड-2 (पृ. 259) | 59.00 |
| 46. कंप्यूटर विज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 144) | 102.00 |
| 47. राजनीतिविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 356) | 343.00 |
| 48. प्रबंधविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 191) | 170.00 |
| 49. अंतर्राष्ट्रीय विधि परिभाषा कोश (पृ. 293) | 344.00 |
| 50. कृषिकीटविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 213) | 75.00 |
| 51. वनस्पतिविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 204) | 75.00 |



| | |
|---|---|
| 52. पुरावनस्पति विज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 161) | 80.50 |
| 53. पादप आनुवंशिकी परिभाषा कोश (पृ. 185) | 75.00 |
| 54. पादपरोगविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 138) | 75.00 |
| 55. मृदाविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 149) | 77.00 |
| 56. प्राणिविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 220) | 10.00 |
| 57. प्राणिविज्ञान परिभाषा कोश (परिवर्धित (पृ. 540) | 216.00 |
| 58. सूक्ष्मजैविकी परिभाषा कोश (पृ. 193) | 45.00 |
| 59. भारतीय दर्शन परिभाषा कोश खंड-1 (पृ. 171) | 51.00 |
| 60. सूत्रकृमिविज्ञान परिभाषा कोश (पृ. 263) | 125.00 |

## पाठमालाएं/मोनोग्राफ

**प्रकाशित**

| | |
|---|---|
| 1. ऐतिहासिक नगर | 195.00 |
| 2. प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक नगर | 109.00 |
| 3. समुद्री यात्राएँ | 79.00 |
| 4. विश्व दर्शन | 53.00 |
| 5. अपशिष्ट प्रबंधन | 17.00 |
| 6. कोयला : एक परिचय | 294.00 |
| 7. वाहित मल एवं आपंक : उपयोग एवं प्रबंधन | 40.00 |
| 8. पर्यावरणीय प्रदूषण : नियंत्रण तथ प्रबंधन | 23.50 |
| 9. रत्न-विज्ञान – एक परिचय | 115.00 |
| 10. 2-दूरीक एवं 2-मानकित समष्टियों में संपात एवं स्थिर बिंदु समीकरणों के साधान | 68.00 |
| 11. पराज्यामितीय फलन | 90.00 |
| 12. ऊर्जा : संसाधन और संरक्षण | 105.00 |
| 13. स्वतंत्रता प्राप्ति पूर्व हिंदी में विज्ञान लेखन | 176.00 |
| 14. समकालीन भारतीय दर्शन के मानववादी चिंतक | 153.00 |
| 15. स्वास्थ्य दीपिका | 200.00 |
| 16. इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी | 90.00 |
| 17. भारतीय कृषि का विकास | – |
| 18. भविष्य की आशा- हिंद महासागर | 154.00 |
| 19. जैव प्रौद्योगिकी – अनुसंधान एवं विकास | 134.00 |
| 20. इस्पात – एक परिचय | 146.00 |
| 21. मानसून पवन – भारतीय जलवायु का आधार | 146.00 |
| 22. मैग्नेसाइट – एक भूवैज्ञानिक अध्ययन | 167.00 |
| 23. प्राकृतिक खेती | 167.00 |
| 24. हिंदी में स्वतंत्रतापरवर्ती विज्ञान-लेखन | 280.00 |
| 25. विश्व के प्रमुख धर्मों में धर्म समभाव अवधारणा – एक तुलनात्मक अध्ययन | 490.00 |

| | | |
|---|---|---|
| 26. | हिंदी विज्ञान पत्रकारिता- कल आज और कल | 167.00 |
| 27. | मृदा एवं पादप पोषण | – |
| 28. | नलकूप एवं भौमजल अभियांत्रिकी | 398.00 |
| 29. | पादपों में कीटप्रतिरोध और समेकित कीटप्रबंधन | 357.00 |
| 30. | द्रवचालित मशीन | – |
| 31. | पृथ्वी : उद्‌भव और विकास | 80.00 |
| 32. | भारत में भैंस उत्पादन एवं प्रबंधन | 540.00 |
| 33. | भारत में ऊसर भूमि एवं फसलोत्पादन | – |
| 34. | भारत में प्याज एवं लहसुन की खेती | 82.00 |
| 35. | पशुओं से मनुष्यों में होने वाले रोग | 60.00 |
| 36. | ठोस पदार्थ यांत्रिकी | 995.00 |
| 37. | वैज्ञानिक शब्दावली, अनुवाद एवं मौलिक लेखन | 34.00 |
| 38. | मृदा उर्वरता | 410.00 |
| 39. | पशुओं के कवकीय रोग उनका उपचार | 93.00 |
| 40. | समाजिक एवं प्रक्षेत्र वानिकी | 54.00 |
| 41. | विश्व के प्रमुख धर्म | 118.00 |
| 42. | सैन्य विज्ञान पाठसंग्रह | 100.00 |
| 43. | लेटर प्रेस मुद्रण | 270.00 |
| 44. | लोहीय तथा अलोहीय धातु | 68.00 |
| 45. | बाल मनोविज्ञान पाठमाला (3) | 58.00 |
| 46. | भेड़ बकरियों के रोग एवं उनका नियंत्रण | 343.00 |
| 47. | विकास मनोविज्ञान (भाग 1) | 40.00 |
| 48. | विकास मनोविज्ञान (भाग 2) | 30.00 |
| 49. | पृथ्वी से पुरातत्व | 40.00 |

## ज्ञान गरिमा सिंधु 'त्रैमासिक' पत्रिका की सदस्यता हेतु पत्र-व्यवहार का पता:

वैज्ञानिक अधिकारी, (बिक्री एकक)
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, पश्चिमी खंड- 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110 066
दूरभाष - (011) 26105211-246 फैक्स - (011) 26101220

## पत्रिका को खरीदने के लिए संपर्क करें :

वैज्ञानिक अधिकारी, (बिक्री एकक)
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, पश्चिमी खंड- 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110 066

**अथवा**

प्रकाशन नियंत्रक,
प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, सिविल लाइन्स, दिल्ली - 110 054



# आयोग के प्रकाशनों की बिक्री के लिए प्रकाशन विभाग, भारत सरकार के बिक्री केंद्रों की सूची

| क्र. सं. | पता | फोन नं. |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन नियंत्रक,<br>प्रकाशन विभाग,<br>(शहरी कार्य व रोजगार मंत्रालय),<br>सिविल लाइन्स, दिल्ली - 110054 | 3967640/31<br>3967823 |
| 2. | किताब महल,<br>प्रकाशन विभाग, भारत सरकार<br>बाबा खड़ग सिंह मार्ग,<br>स्टेट एंपोरिया बिल्डिंग, यूनिट नं. 21,<br>नई दिल्ली - 110001 | 3363708 |
| 3. | पुस्तक डिपो,<br>प्रकाशन विभाग, भारत सरकार<br>के. एस. राय मार्ग, कोलकाता - 700001 | 033-2483813 |
| 4. | बिक्री काउंटर, प्रकाशन विभाग,<br>भारत सरकार, सी. जी. ओ. काम्प्लैक्स<br>न्यू मेरीन लाइन्स, मुंबई - 400020 | |
| 5. | बिक्री काउंटर, प्रकाशन विभाग,<br>भारत सरकार, उद्‌योग भवन,<br>गेट नं. 3, नई दिल्ली - 110001 | 385421/291 |
| 6. | बिक्री काउंटर, प्रकाशन विभाग,<br>(लॉयर्स चैंबर) भारत सरकार,<br>दिल्ली उच्च न्यायालय,<br>नई दिल्ली - 110003 | 3383891 |
| 7. | बिक्री काउंटर, प्रकाशन विभाग,<br>भारत सरकार, संघ लोक सेवा आयोग,<br>धौलपुर हाउस, नई दिल्ली - 110001 | |

# हिंदी ग्रंथ अकादमियाँ एवं अन्य भारतीय भाषाओं के बोर्ड

## (क) हिंदी ग्रंथ अकादमियाँ

1. निदेशक,
   उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान,
   हिंदी भवन, महात्मा गांधी मार्ग,
   लखनऊ - 226801

2. निदेशक
   बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी,
   प्रेमचंद मार्ग, राजेंद्र नगर,
   पटना - 800001

3. संचालक,
   मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी,
   रवींद्रनाथ ठाकुर मार्ग, बान गंगा,
   भोपाल - 462203

4. निदेशक
   राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,
   प्लॉट नंबर - 1,
   झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
   जयपुर - 302004

5. निदेशक,
   हरियाणा साहित्य अकादमी,
   कोठी नं. 897, सेक्टर- 2,
   पंचकूला - 134112 (हरियाणा)

6. निदेशक,
   हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय,
   दिल्ली विश्वविद्यालय, बैरक नं. 2,
   कैवलरी लाइन, दिल्ली - 110007

7. प्रभारी,
   प्रकाशन निदेशालय,
   गो. ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी
   विश्वविद्यालय, पंतनगर- 263145
   (ऊधम सिंह नगर)

8. निदेशक,
   प्रकाशन निदेशालय,
   हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
   हिसार - 125005

9. डीन, विज्ञान संकाय,
   काशी हिंदू विश्वविद्यालय,
   वाराणसी - 221005

## (ख) अन्य भारतीय भाषाओं के पाठ्य-पुस्तक बोर्ड

10. निदेशक,
    तेलगु अकादमी, 8-5-395
    हिमायत नगर, हैदराबाद-500029

11. अध्यक्ष,
    विश्वविद्यालय ग्रंथ निर्माण बोर्ड,
    गुजरात महाविद्यालय,
    एलिस ब्रिज कैपिटल प्रोजेक्ट
    भवन, अहमदाबाद- 380006

12. निदेशक
    स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ लैंग्वेजिज,
    नालंदा,
    तिरुवनंतपुरम्, केरल-695003

13. निदेशक,
    महाराष्ट्र विश्वविद्यालय बुक
    प्रोडक्शन बोर्ड, विधि
    महाविद्यालय, अमरावती मार्ग,
    नागपुर - 440010

14. निदेशक,
    पंजाब स्टेट विश्वविद्यालय,
    टेक्स्ट बुक बोर्ड,
    S.C. O. नं- 289-91
    सेक्टर - 32-d,
    चंडीगढ़ - 160047

15. मुख्य कार्यपालक अधिकारी,
    वेस्ट बंगाल स्टेट बुक बोर्ड,
    आर्य मेंशन 8वाँ तल,
    6-ए राजा सुबोध मलिक
    स्क्वायर, कोलकाता- 700013

16. सचिव,
    तमिलनाडु टेक्स्ट बुक सोसाइटी,
    महाविद्यालय रोड,
    चेन्नई।

**असम**

1. सचिव,
   विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग,
   गुवाहाटी विश्वविद्यालय,
   गोपीनाथ बारदोली नगर,
   गुवाहाटी-781014

2. सचिव,
   कोऑर्डिनेशन कमेटी फॉर
   प्रोडक्शन ऑफ टेक्स्ट बुक्स,
   डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ़।

**कर्नाटक**

1. निदेशक,
   परसारंगा ज्ञान भारती,
   बेंगलूर विश्वविद्यालय,
   बेंगलूर - 560056

2. प्रोफेसर ऑफ कन्नड़
   यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर साइंस
   डिपार्टमेंट ऑफ कन्नड़ स्टडीज,
   हैब्बल, बेंगलूर - 560024

3. निदेशक,
   इंस्टीट्यूट ऑफ कन्नड़ स्टडीज,
   कर्नाटक विश्वविद्यालय,
   टेक्स्ट बुक निदेशालय,
   धाड़वार-3

**उड़ीसा**

1. निदेशक,
   उड़ीसा राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रणयन
   एवं प्रकाशन ब्यूरो
   फ्लैट नं. ए- 11, सुखबिहार,
   भुवनेश्वर।

# ग्राहक फार्म

अध्यक्ष,
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
पश्चिम खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली - 110066

महोदय,

कृपया मुझे ''ज्ञान गरिमा सिंधु'' (त्रैमासिक पत्रिका) का एक वर्ष के लिए मास..... ..से ग्राहक बना लीजिए। मैं पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क.....रुपये, अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली के पक्ष में, नई दिल्ली स्थित किसी भी अनुसूचित बैंक में देय डिमांड ड्राफ्ट सं. ..... दिनांक..... द्वारा भेज रहा /रही हूं। कृपया पावती भिजवाएं।

नाम .....

पूरा पता .....

.....

भवदीय

हस्ताक्षर

| सदस्यता शुल्क: | भारतीय मुद्रा | विदेशी मुद्रा |
|---|---|---|
| प्रति अंक (व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए) | रु. 140.00 | पौंड 1.64 डालर 4.84 |
| वार्षिक (व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए) | रु. 50.00 | पौंड 5.83 डालर 18.00 |
| प्रति अंक (विद्यार्थियों के लिए) | रु. 8.00 | पौंड 0.93 डालर 10.80 |
| वार्षिक (विद्यार्थियों के लिए) | रु. 30.00 | पौंड 3.50 डालर 2.88 |

डिमांड ड्राफ्ट ''अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग'' के पक्ष में नई दिल्ली स्थित किसी भी अनुसूचित बैंक में देय होना चाहिए। कृपया ड्राफ्ट के पीछे अपना नाम व पूरा पता भी लिखें। ड्राफ्ट 'एकाउंट पेई' होना चाहिए।

यदि ग्राहक विद्यार्थी है तो कृपया निम्न प्रमाण-पत्र भी संलग्न करें:

## विद्यार्थी-ग्राहक प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कुमारी/श्रीमती/श्री .....

इस विद्यालय/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के .....
विभाग के/छात्र/की छात्रा हैं।

हस्ताक्षर

(प्राचार्य/विभागाध्यक्ष)
(सील)



MGIPRRND—4121 HRD/07—2000 Copies.

©

पी. सी. एस. टी. टी.-2(7-12)-2006
2000

भारत सरकार
प्रकाशन नियंत्रक

नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइन्स, दिल्ली-110054 द्वारा प्रकाशित तथा
प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड़, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित।
2007